बदलते रूसमें

बदलते रूसमें

रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

विषयानुक्रमणिका

खण्ड १

खण्ड २

—:०:—

[१]

बदलते रूसमें

सोवियट संघमें आठ दिन

(यात्रा-वर्णन)

बदलते रूसमें

प्रास्ताविक—अपनी बात

हम पत्रकारोंको यह एक बहुत खराब आदत लग गयी है कि देशके बाहर कहीं दो दिनके लिए भी जाते हैं तो लौटनेपर तुरन्त उस यात्राके बारेमें कोई पुस्तक लिख डालते हैं। मैं दो दिन क्या, सोवियट संघमें पूरे ८ दिन रहा, फिर पुस्तक क्यों न तैयार हो जाय? इतना अवश्य है कि मैं इस पुस्तकमें रूसकी भूतकालीन और वर्तमान राजनीतिका केवल दौड़ता दर्शन करूँगा और अन्य विषयोंपर विशेष जोर दूँगा। मेरा यह दावा नहीं रहेगा कि केवल ८ दिन मास्को और लेनिनग्राडमें रहकर मैं रूसी राजनीतिका माहिर हो गया।

एक बात अवश्य है। किसी भी देशके बारेमें बाहरसे चाहे जितनी अच्छी-बुरी बातें क्यों न सुनी जायें, उसकी इतिहास-सम्बन्धी चाहे जितनी पुस्तकें क्यों न पढ़ी जायें, पर प्रत्यक्ष दर्शनसे दिमागमें जो एक सच्चा नकशा बनता है वह कुछ और ही होता है। ऐसा नकशा एक केन्द्रका काम करता है जिसको आधार बनाकर उस देशके सम्बन्धमें लिखी गयी पुस्तक अधिक रोचक, तथ्यके अधिक नजदीक और हृद्य रहती है। हम पत्रकार एक दृष्टिसे अन्योंसे और अधिक भाग्यशाली रहते हैं, क्योंकि प्रत्यक्ष यात्रामें हमें जितना विपुल तथा अद्यतन साहित्य और पुस्तकें प्राप्त होती हैं उतनी अन्योंको नहीं हो सकतीं। हम महत्त्वके लोगोंसे बहुत आसानीसे मिल सकते हैं और उनसे तरह-तरहके अनुकूल-प्रतिकूल प्रश्न भी पूछ सकते हैं, पूछते हैं। पत्रकार होनेके कारण हमारे आँख-कान औरोंसे अधिक खुले रहते हैं और पहुँचा पकड़कर स्वर्गतक पहुँच जानेकी जिस कलामें हम पारंगत होते हैं उसका लाभ हमें यात्रा-वर्णनकी ऐसी किताबें लिखनेमें बहुत होता है।

अपनी बात अधिक न बढ़ाकर मैं अब सीधे अपनी यात्राका वर्णन आरम्भ करता हूँ।

—:o:—

(१)

यात्राकी तैयारी

निमन्त्रण

चार साल पहले अप्रैल १९५४ में हालैण्डकी २५ दिनकी यात्रा कर लौटनेके बाद मैंने अपने मनमें यह निश्चय कर लिया था कि अब कभी इतनी लम्बी विदेश-यात्रा

अपरिवार, अकेले नहीं करूंगा। इधर स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था, इसलिए विदेश जानेकी इच्छा स्वप्नमें भी नहीं थी। पर 'मनसा चिन्तितं एक दैवमन्यत्र चिन्तयेत्' वाली बात अच्छी और बुरी दोनों दिशाओंमें सटीक बैठती है।

३ अगस्तको दिल्लीमें सम्पादक-सम्मेलनकी स्थायी समितिकी बैठक थी जिसमें मुझे शामिल होना था। 'आज'के लिए दिल्ली-काशी हिन्दी टेलिप्रिंटर लाइन और मशीन देनेकी स्वीकृति भारत सरकारकी ओरसे प्राप्त हो चुकी थी। उसका समय आदि तय करना था। स्वास्थ्य-सुधारके लिए १ सप्ताह विश्राम भी करना चाहता था। एकाध दिनके लिए नागपुर भी जाना चाहता था, इसलिए सब काम इकट्ठा कर २९ जुलाईको मैं हफ्तेभरके लिए दिल्ली रवाना हुआ।

५ अगस्तको दिल्लीमें कनाट प्लेससे नागपुरका टिकट खरीदकर शामको जब मैं घर लौटा तो कानमें यह भनक पड़ी कि १४ अगस्तको दिल्ली-मास्कोके बीच 'एयर इण्डिया इण्टरनेशनल' जो एक सीधी हवाई सर्विस शुरू करनेवाला है उसमें पहली उड़ानमें कुछ पत्रकारोंको भी निमन्त्रण है और उन निमन्त्रित पत्रकारोंमें एक नाम मेरा भी है। अब मैं बड़े पशोपेशमें पड़ गया। केवल भनक और अफवाहके आधारपर कोई तैयारी करना मूर्खता होती, पर भनकको केवल अफवाह मानकर तैयारी न करना भी मूर्खता होती, क्योंकि विदेश-यात्राकी तैयारी कोई दो दिनमें नहीं हो जाती। पासपोर्ट, विसा, हेल्थ सर्टिफिकेट, गरम कपड़े, विदेशी मुद्रा—ये सब मामूली तौरपर महीनों ले लेते हैं और मैं तो घरसे ५०० मील दूर पड़ा था। ५ अगस्त और १४ अगस्तके बीच केवल ८ दिन बचे थे जिनमें ३ दिन तो नागपुर आने-जाने और एक दिन वहां रहनेमें लग ही जाते। इसलिए मैंने यही ठीक समझा कि 'आज'के व्यवस्थापक श्री विश्वनाथप्रसादको इस अफवाहकी गुप्त सूचना दे दी जाय और लिख दिया जाय कि यदि वास्तविक निमन्त्रण आ ही जाय तो काशीसे दिल्ली पासपोर्ट और गरम कपड़े आदि भेजनेकी व्यवस्था वे किस प्रकार करें। ६ को सवेरे हवाई पैकेटसे चिट्ठी भेजकर मैं नागपुर रवाना हुआ और ७ को वहाँ दिनभर रहकर (वहाँ श्री श्रीप्रकाशजीसे भी मुलाकात हो गयी), ८ को वहाँसे चलकर ९ को दोपहरमें दिल्ली वापस आ गया। केवल ५ दिन बचे थे, फिर भी काशीसे कोई पत्र अथवा सूचना दिल्ली नहीं पहुँची थी। हठात् रातको मैंने बनारस टेलीफोन किया तोपता लगा कि उसी दिन निमन्त्रणपत्र वहाँ पहुँचा था और दूसरे दिन सारे सामानके साथ मेरा बड़ा लड़का मनोहर दिल्ली रवाना हो रहा था।

दूसरे दिन यानी १० की शामको यह भी मालूम हुआ कि पत्रकारोंकी तरह कई संसद्-सदस्य भी उसी विमानसे मास्को जानेके लिए निमन्त्रित हैं और उन सदस्योंमें काशी-के श्री रघुनाथ सिंह भी हैं।

मुझे 'बिन माँगे मोती' मिल रहा था।

यात्रा केवल ८-९ दिनकी थी।

निमन्त्रण व्यक्तिगत नामोंसे थे।

दुनियाके दूसरे नम्बरके ताकतवर और मनुष्यके इतिहासको नयी दिशा देनेवाले देशमें हमें जाना था। इतने अधिक आकर्षणोंके रहते हुए निमन्त्रणका अनादर करनेकी बात सोची ही नहीं जा सकती थी। काशी टेलिफोन कर श्री रघुनाथ सिंहका पासपोर्ट और सामान भी मँगा लिया गया।

११ अगस्तको सवेरे पासपोर्ट और गरम कपड़े लेकर मनोहर दिल्ली पहुँच गया। अब केवल ७२ घण्टे ही सारी तैयारी करनेके लिए बच गये थे।

७२ घण्टेमें तैयारी

मैं पत्रकार था और निमन्त्रित था सरकारी कारपोरेशन, एयर इण्डिया इण्टर-नेशनलकी ओरसे। इसलिए ७२ घण्टेमें ही विदेश-यात्राकी सारी तैयारी हो गयी। (संसद्-सदस्योंकी तैयारी तो इससे भी कम समयमें हुई।)

गरम कपड़े (बिना पानीके) शुष्क धुलकर और इस्तरी कर २४ घण्टेके अन्दर 'स्नो वाइट' हो गये।

पासपोर्टमें सोवियट संघका इण्डोर्समेंट और रूसी दूतावाससे विसा करानेकी जिम्मेदारी मेजबान, विमान कम्पनीने ले ली और पूरी की।

पासपोर्ट-साइजके फोटो भी खिंचकर २४ घण्टेमें प्रतियाँ मिल गयीं।

इनकम टैक्स एक्जेम्पशन सर्टिफिकेट सूचना विभागके अधिकारियोंने, संसद्-सदस्य श्री रघुनाथ सिंहके सर्टिफिकेट-पत्रपर, आयकर विभागसे एक दिनमें लाकर दे दिया। म्युनिसिपल आफिसमें जाकर हैजा और चेचककी सुई लगवा ली।

आने-जानेकी यात्राका तथा वहाँ रहने, खाने-पीने और घूमनेका खर्च हमें करना नहीं था। इसलिए रिजर्व बैंककी विशेष इजाजत लेकर अधिक विदेशी मुद्रा लेनेकी हमें आवश्यकता ही नहीं थी। हरएक यात्रीको २७० रुपयेतककी विदेशी मुद्रा बिना विशेष अनुज्ञाके मिल जाती है और इतना रुपया रूसमें फुटकर खर्च और वहाँसे बच्चों और मित्रोंके लिए यादगारकी चीजें खरीद लानेके लिए काफी था।

१३ तारीखकी शामको एयर इण्डिया इण्टरनेशनलके दफ्तरमें जाकर अपना दिल्ली-मास्को-दिल्लीका वापसी हवाई टिकट ले आया।

यात्राकी तैयारी पूरी हो गयी और मैं नयी दुनियाके स्वप्न देखनेकी उत्सुकता लिये ही सोया। पर, रात १ बजेके करीब शरीर काँपने लगा। गहरी सिहरन आयी और जूड़ीका ज्वर भी बढ़ने लगा। घरके सब लोग जगे। मनोहरने तथा कुसुमने (मेरी बड़ी बहनकी लड़की श्रीमती निगुडकरने) ४-५ रजाइयाँ ओढ़ा दीं। भाई साहबने (श्री घोरपड़े, डाक्टर केसकरके प्राइवेट सेक्रेटरी) होमियोपैथी औषधिकी गोलियाँ खिलाना शुरू किया।

सबेरे ५ बजे जगा तो बदनमें १०२ डिग्री ज्वर था। प्रश्न उठा कि ऐसी हालतमें

जाना चाहिये या नहीं। २०-२५ दिन पहले काशीमें घोर गर्मीमें सबसे ऊपरकी छतपर सोते समय एक रात ऐसी ही जूड़ी आयी थी, पर ज्वर दूसरे ही दिन ठीक हो गया था, इसलिए मेरे मनोदेवताने कहा कि घबराओ मत, यह भी एक दिनका ही है। नयी दुनिया देखनेका मौका न छोड़ो।

मास्को-यात्राका निश्चय हो गया और विमान कम्पनीके निर्देशके अनुसार हम ठीक ७॥ बजे टैक्सीमें नयी दिल्लीसे १०-१२ मील दूर पालम हवाई अड्डेपर पहुँच गये। मेरे साथ मनोहर और 'आज'के नयी दिल्लीके प्रतिनिधि श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी थे। होमियोपैथीकी गोलियाँ भी साथमें थीं।

हवाई अड्डेपर

पालम हवाई अड्डेके बैठकखानेमें (लाउन्ज) कुछ पुराने परिचित और नये-नये चेहरे दिखाई देने लगे। जो 'जी सुपर कांस्टेलेशन' विमान हमें ले जानेवाला था उसमें ६६ आदमियोंके बैठनेकी जगह थी। ६ चालकोंके अतिरिक्त ६० यात्री उसमें बैठ सकते थे। मालूम हुआ कि हमारे निमंत्रित दलमें ११ संसद्-सदस्य, १६ पत्रकार, १२ विदेशी व्यापार और विभिन्न यात्रा-एजेंसियोंके प्रतिनिधि तथा ७-८ उच्च सरकारी अधिकारी हैं। कुछ नियमित यात्री भी थे। सरकारी अधिकारियोंमें एयर इण्डिया इण्टरनेशनलके डाइरेक्टर जनरल श्री बी० आर० पटेल अपनी पत्नीके साथ, कामर्स विभागके एक डिप्टी सेक्रेटरी, कामर्स विभागके सचिवकी धर्मपत्नी श्रीमती खेड़ा तथा ३-४ अन्य अधिकारी थे। नियमित यात्रियोंमें मास्को स्थित भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेननकी धर्मपत्नी श्रीमती मेनन तथा भारतीय रेडक्रासकी अध्यक्षा राजकुमारी अमृत कौर भी थीं।

इनके अतिरिक्त निमन्त्रित दलमें ये लोग थे—

११ संसद-सदस्य—

(१) डाक्टर हृदयनाथ कुंजरू
(२) डाक्टर रामसुभग सिंह
(३) श्री सुदुमल हेनरी सैमुएल
(४) श्री रघुनाथ सिंह
(५) श्री एस० आर० राणे
(६) श्री हेम बरुआ
(७) श्री मुहम्मद वलिउल्ला
(८) श्री बी० पी० नायर
(९) श्री जे० आर० राव
(१०) श्री एम० आर० कृष्णा
(११) श्री बी० चिनाय

१३ पत्रकार—

(१२) श्री प्रेम भाटिया (स्टेट्समैन)

(१३) श्री एम० शिवराम (आकाशवाणी, ए० आई० आर०)

(१४) श्री टी० नारी (मुख्य सूचनाधिकारी)

(१५) श्री डी० वागले (प्रेस ट्रस्ट)

(१६) श्री तुषारकांति घोष (अमृतबाजार पत्रिका)

(१७) श्री पार्थसारथी (हिन्दू)

(१८) श्री सुब्बारायन (इण्डियन एक्सप्रेस)

(१९) श्री ज. पां. देशमुख (मराठी दैनिक सकाल, पूना)

(२०) श्री एम० बी० देसाई (टाइम्स आफ इण्डिया, दिल्ली)

(२१) श्री मोहन भाई मेहता (गुजराती दैनिक जन्मभूमि)

(२२) श्री एन० मजुमदार (हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड)

(२३) श्री ए० सी० भाटिया (ट्रिब्यून)

(२४) श्री अब्राहम (हिंदुस्तान टाइम्स)

(२५) श्री अल्लन टेलर (मद्रास मेल)

(२६) श्री जी० बैरेल (कैपिटल)

(२७) श्री खाडिलकर (हिन्दी दैनिक 'आज', वाराणसी)

१५ आयात-निर्यात और विदेशी यात्रा एजेन्सियोंके प्रतिनिधि—

(२८) श्री ए० सेन

(२९) श्री आर० डीसूजा

(३०) श्री आर० खरास
(३१) श्री डी० जी० तेलंग
(३२) श्री जे० एन० गजदर
(३३) श्री जे० बैटसन
(३४) श्री के० एस० बनर्जी
(३५) श्री एल० पी० जार्ज
(३६) श्री डी० डागा
(३७) श्री एल० बिलिमोरिया
(३८) श्री गुरपाल सिंह
(३९) श्री जी० के० खन्ना
(४०) श्री नवल टाटा
(४१) मिस लेला
(४२) श्री खंबाटा

इनके अतिरिक्त हमारी यात्रा सजीव करनेवाले कुछ और भी व्यक्ति थे। एक थे आगरेके व्यापारी खुशदिल युवक श्री पद्मचंद जैन, दूसरी थीं भारत सरकारके टूरिस्ट ब्यूरोकी श्रीमती भामजी और तीसरे थे एयर इण्डिया इण्टरनेशनलके सेल्स मैनेजर श्री कुका जिनके हस्ताक्षरसे हमें निमन्त्रण मिला था।

हवाई अड्डेपर सारी रस्मी काररवाई शीघ्र ही पूरी हुई, क्योंकि हम सब लोग सरकारी कारपोरेशनके मेहमान थे। विमान छूटनेका निर्धारित समय पहले ८, फिर ८॥ था, पर आवश्यक सामान लादनेमें कुछ देर लग ही गयी और विमान ९॥ बजे चलनेको तैयार हुआ। मेरा ज्वर कम हो रहा था। 'टा-टा' कर हम विमानमें चढ़े, जहाँ मेरा सुखद साथ दिल्लीके 'टाइम्स आफ इण्डिया'के नये गैर-अंग्रेजी-परस्त सम्पादक श्री एम० बी० देसाईसे हो गया।

ठीक ९॥ बजे 'रानी आफ बीजापुर' विमान हमें लेकर नये रास्तेसे नये देशको चला।

—:o:—

(२)

नये हवाई मार्गका ऐतिहासिक महत्त्व

—:o:—

हमारा 'जी कान्स्टेलेशन' विमान चार तैल-इंजिनोंका पंखोंसे चलनेवाला यान था। १५-१६ हजार फुट ऊपर आकाशमें, मौसम (बादलों)के ऊपर जानेके बाद हमने

अपनी कमरके पट्टे खोल डाले। कैप्टेन विश्वनाथ हमारे विमानके मुख्य चालक थे। पौने तीन सौ मील प्रति घण्टेकी चालसे विमान लाहौर-काबुलकी ओर बढ़ने लगा। २४ घण्टेमें हम मास्को पहुँचनेवाले थे जिसमें दो घण्टे बीचमें उजबेकिस्तान सोवियटकी राजधानी ताशकंदमें हवाई अड्डेपर ठहरना था। रूसी विमान ३३-३४ हजार फुटकी ऊँचाईपरसे सीधे हिमालय पार कर जाते-आते हैं।
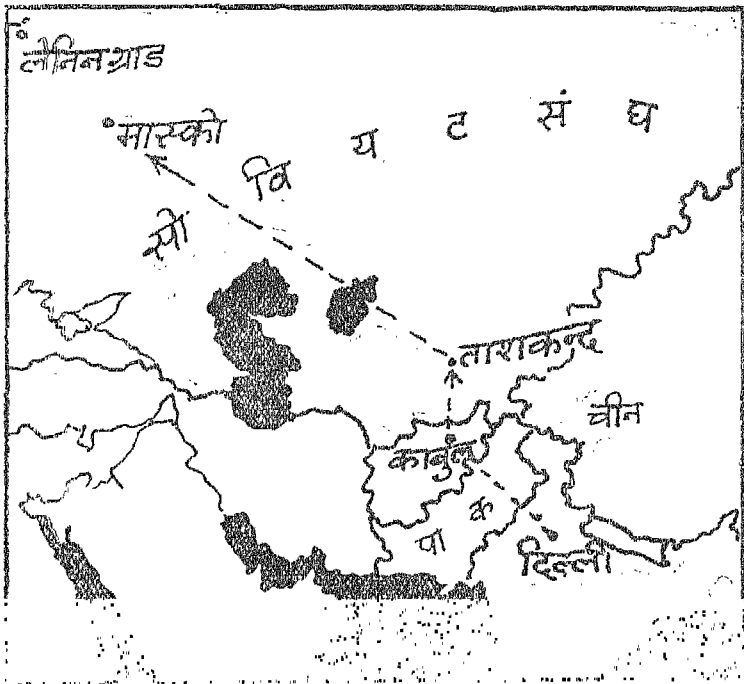
विमान मार्गस्थ होते ही मैंने सबसे पहले स्वागतिकाको बुलाकर गरम पानीमें एक छोटा पेग ब्राण्डी लानेको कहा। यह दवा लेनेके तुरत बाद मेरा बचा-खुचा बुखार भी उतर गया और मैं दिल्ली-मास्कोके नये हवाई मार्गके अन्तरराष्ट्रीय महत्त्वके सम्बन्धमें विचार करनेमें तल्लीन हो गया।

कहते हैं कि नदीका मूल और ऋषिका कुल नहीं खोजना चाहिये। पर ऋषिका कुल खोजते-खोजते इतिहासके पटपर मैं ४ हजार वर्ष पहलेका चित्र देखने लगा। आर्य घुमक्कड़ टोलियाँ अपने मूल गृहसे निकलकर यूरोपमें अतलान्तकसे लेकर एशियामें गंगातक

फैलकर बस रही थीं। लगभग ३४ सौ वर्ष पहले इनमेंसे कई टोलियां सिन्धु घाटीमें मोहनजोदड़ो और हड़प्पाके अवशेषोंपर आकर स्थायी रूपसे बस चुकी थीं। लगभग ३००० साल पहले उनमेंसे सिमेरियन और साइथियन टोलियाँ यूरोपीय रूसकी दक्षिणी पठारपर बस गयी थीं। इस प्रकार 'रूसी-हिन्दी भाई-भाई'का नारा श्री क्रुश्चेवका केवल राजनीतिक न होकर ऐतिहासिक तथ्यपर भी प्रमाणित नारा सिद्ध होता है।

मूल एक होनेपर भी हिमालयरूपी प्राकृतिक कठोर प्रहरी रूस और भारतके बीचमें ऐसा खड़ा था कि दोनों देशोंमें मामूली सम्बन्धके अतिरिक्त अधिक घनिष्ठ आवागमन कभी नहीं हो सका था। पास-पास रहनेवाली, पर कभी न मिल सकनेवाली दो आँखोंकी तरह हिमालयने भारत और रूसको अलग-अलग रखा था।

४०० साल पहले अफनासी निकितन नामक एक रूसी साहसप्रिय यात्री मास्कोसे चला और नावों, पालवाले जहाजों तथा ऊँटोंके कारवाँके साथ यात्रा करता और अपार कष्ट सहता हुआ दो सालमें बम्बईके पास चौल नामक बन्दरगाहमें पहुंचा था। भारत पहुँचनेवाला यह पहला रूसी था।

विज्ञान और यन्त्रशिल्पकी प्रगति उन्नीसवीं और बीसवीं सदीमें दिन दूनी रात चौगुनी गतिसे होने लगी। पर जबतक भारतपर अंग्रेजोंका राज था, वे यह कभी नहीं चाहते थे कि रूस और भारतका किसी भी प्रकार सम्पर्क स्थापित हो। १८५४-५६की क्रीमियाकी लड़ाईमें वे जानबूझकर इसी उद्देश्यसे शामिल हुए थे।

१९४७में भारत स्वतन्त्र हुआ। विज्ञान और यन्त्रशिल्पकी प्रगतिके युगका वह पूरा लाभ उठाने लगा। फिर भी हिमालय अब भी खड़ा था।

४ साल पहले भी भारतसे रूस जानेके लिए हवाई जहाजसे बहरीन, काहिरा, रोम, जेनेवा, जूरिख, प्राग, विल्ना होते हुए जाना पड़ता था। इसमें ७२ घण्टे लग जाते थे।

रूस-भारतकी मैत्रीका हाथ जोर मारने लगा। जनसंख्याकी दृष्टिसे चीनके बाद भारतका नम्बर दूसरा है और सोवियट रूसका तीसरा। दो मित्रोंके ये बलिष्ठ हाथ इतनी तेजीसे आगे बढ़े कि हिमालयको भी इस मित्रताको प्रणाम करनेके लिए नीचे झुकना पड़ा और अन्तमें १४ अगस्त, सन् १९५८ को दिल्ली-मास्कोके बीच सीधी विमान सर्विस शुरू हो गयी।

भारतमें विमानसेवाका राष्ट्रीयकरण हो चुका है और दो कारपोरेशन इसकी व्यवस्था करते हैं। इण्डियन एयरलाइन्स देशके अन्दरके वायुमार्गोंपर विमान चलाती है और एयर इण्डिया इण्टरनेशनल विदेशी मार्गोंपर विमान चलानेकी जिम्मेदारी लिये हुए है। भारतीय विमान अब पूर्वमें सिंगापुर, जकार्ता, डारविन, सिडनी, बंकाक, हांगकांग, टोकियोतक; पश्चिममें काहिरा, दमिश्क, बेरूत, रोम, जूरिख, जेनेवा, प्राग, पेरिस, डुसेलडर्फ और लन्दनतक तथा दक्षिण-पश्चिममें कराची, अदन, नैरोबीतक और अब १४

अगस्त १९५८ से उत्तरमें ताशकंद और मास्कोतक जाते हैं। इन मार्गोंपर सुपर कान्स्टेलेशन विमान चलते हैं।

भारत-सोवियट रूसके बीच विमान सर्विस शुरू करनेका करार एयर इण्डिया इण्टरनेशनल और रूसी नागरिक विमान सेवा-कम्पनी सरकारी 'एयरोफ्लोट'के बीच हुआ। स्टालिन युगमें मास्कोके हवाई अड्डे व्नुकोवोपर न कोई विदेशी विमान आता था और न किसी गैर-कम्युनिस्ट देशके हवाई अड्डेपर कोई रूसी विमान उतरता था, पर अब रूसमें भी युग बदल रहा है और व्नुकोवो अड्डेसे १८ बाहरी देशोंको विमान जाने लगे हैं तथा बाहरसे आने लगे हैं। मास्कोसे पेकिंग, प्राग, तिराना, वारसा, स्टाकहोम, हेलसिंकी, वियना और काबुलको प्रति दिनकी विमान सर्विस है। मास्कोसे ब्रुसेल्स, पेरिस और अब दिल्ली-बम्बईको सीधी हवाई सर्विस जाने लगी है और शीघ्र ही मास्को-लन्दन भी सीधे विमान चलनेवाले हैं।

रूसका विदेशी विमान यातायात इनके अपने 'इल्यूशिन १४' या 'टी यू १०४' टर्बोप्राप जेट विमानोंसे होता है। टर्बो जेट विमानोंमें जेटसे टर्बाइन और पंखे चलते हैं। ये विमान बहुत तेज, लगभग ५०० मील प्रति घण्टेकी गतिसे चलते हैं। इनसे अब मास्को-पेकिंग यात्रा १०-११ घण्टेमें और मास्को-प्राग यात्रा पौने तीन घण्टेमें पूरी हो जाती है। इन विमानोंका नाम 'टी-यू' इनके डिजाइनर ७० वर्षीय वृद्ध इंजीनियर एण्ड्री टुपोलेवके नामपर रखा गया है। इन्होंने पिछले ४० वर्षोंमें १०० से भी अधिक मेलके नये-नये और एकसे एक बढ़कर तेज रफ्तार और सुविधावाले विमान बनाये हैं। 'ए एन टी २०' नामका ५३ टनका ८० यात्री बैठनेवाला एक विमान इन्होंने युद्धकालके आसपास बनाया था जिसमें छापाखाना, टेलिफोन एक्सचेञ्ज और सिनेमा हाल भी था।

इन्होंने हालमें टी यू ११४ मेलका विमान बनाया है जो टर्बो-प्राप ४ इंजनवाला जेट है। इसपर हालके ब्रुसेल्सके विश्व-मेलेमें इनको ग्रैंड प्रिक्स पदक मिल चुका है। यह दुनियाका सबसे बड़ा टर्बो-प्राप विमान होगा। १२ घण्टेतक यह ५१० मील प्रति घण्टेकी गतिसे ६। हजार मीलतककी यात्रा बिना कहीं रुके कर सकता है और इसमें १७० साधारण यात्री या २२० टूरिस्ट क्लासके यात्री बैठ सकते हैं। मास्कोसे रंगून यह १२ घण्टेमें पहुँच सकता है। ये विमान अभी अधिक संख्यामें नहीं बने हैं। यह एयर-कण्डीशन प्रेशराइज्ड है और हर एक यात्रीके लिए इसमें अलग-अलग रेडियो भी है (यह केवल एक मास्को रेडियो स्टेशन ही सुनाता होगा।) एकके बाद एक इञ्जन बन्द करनेपर भी यह उड़ता रह सकता है, इसलिए दुर्घटनाकी आशंका भी इसमें कम है।

एयर इण्डिया इण्टरनेशनल और एयरोफ्लोटमें जो करार हुआ है उसके अनुसार एक सप्ताह भारतीय विमान मास्को जाता है और तुरत दूसरे-तीसरे दिन लौट आता है। दूसरे सप्ताह टी-यू १०४ मास्कोसे दिल्ली-बम्बईतक आता है और तुरत मास्को लौट जाता है। तीसरे हफ्ते फिर भारतीय विमान जाता है। भारतीय विमान दिल्ली-मास्कोका

३३४० मीलका अन्तर १२घण्टेमें तय करते हैं, पर रूसी विमान यह दूरी ७॥ घण्टेमें ही तय करते हैं। किराया एक तरफका फर्स्ट क्लासका आठ आना फी मीलके हिसाबसे करीब १७०० रुपया और टूरिस्ट क्लासका ३५ नये पैसेके हिसाबसे ११७० रुपया होगा। दोनों ओरका किराया १ सही ४।५ गुना होता है। करारकी जब बातचीत चल रही थी तब यह प्रश्न उठा कि आपके विमान यदि ४॥ घण्टा कम समयमें दिल्लीसे मास्को यात्रियोंको पहुँचा देंगे तो हर यात्री आपके विमानोंमें ही यात्रा करना पसन्द करेगा और कोई एयर इण्डियाके विमानमें आयेगा ही नहीं। इसपर भारत-रूसकी मैत्रीके प्रबल इच्छुक रूसी प्रतिनिधियोंने तुरत उत्तर दिया कि आप घबराइये नहीं, यात्री किसीके विमानसे भी यात्रा करें, पर मुनाफा या नुकसान हम लोग बराबर बाँट लेंगे।

इस प्रकार भारत-रूसकी मैत्री, बिना बीचमें किसी एंग्लो-अमेरिकन-यूरोपियन या साम्राज्यवादी बाधाके दोनों देशोंमें सीधा सम्बन्ध स्थापित करनेमें सफल हो गयी। दोनों संस्कृतियोंका आदान-प्रदान, दोनोंका वर्द्धमान व्यापार और दोनों देशोंके इंजीनियरों, पर्यटकों, छात्रों, कलाकारों और खिलाड़ियोंका आना-जाना अब बिना किसी बीचकी विघ्नबाधाके प्रारम्भ हो गया है।

प्राचीनकालमें चीनका बढ़िया रेशम पहाड़ी दुर्गम मार्गोंसे रूस और यूरोप जाता था। इस मार्गका नाम ही सिल्क रोड या रेशमी मार्ग पड़ गया था। दिल्ली-मास्को हवाई मार्गका मैंने रूबल-रुपया मार्ग नाम रखा है। पर अब यह देखना है कि इस प्रत्यक्ष सम्बन्धसे रूबल रुपयेपर हावी होता है या रुपया रूबलको दबाता है। जिसकी संस्कृति अधिक टिकाऊ और लचीली होगी वह मीर रहेगा।

——:o:——

(३)

ताशकंद

दिल्लीके पालम हवाई अड्डेसे हम ९॥ बजे उड़े और लाहौर, काबुलके ऊपरसे होते हुए दोपहरके बाद २॥ बजे ताशकंदके हवाई अड्डेपर हमारा विमान उतरा। ताशकंदमें उस समय वहाँके समयके अनुसार १॥ और मास्को समयके अनुसार दोपहरके १२ बजे थे।

हम अपने जीवनमें पहले पहल रूसी भूमिपर उतर रहे थे।

विमानमें ५ घण्टा कैसे कटा, इसका पता ही नहीं चला। एयर इण्डियाके विमानमें लाउडस्पीकरपर यात्रियोंके लिए जो सूचनाएँ आदि सुनायी जाती हैं वे पहले अंग्रेजीमें होती हैं और फिर हिन्दीमें सुनायी जाती हैं, पर हिन्दीमें सूचनाएँ सुनानेमें केवल फर्ज-

अदायगी की जाती है। पूरी अंग्रेजी सूचनामेंसे १-२ वाक्य हिन्दीमें सुना देते हैं और बस समझ लेते हैं कि राजभाषाके प्रति हमारा कर्तव्य पूरा हो गया।
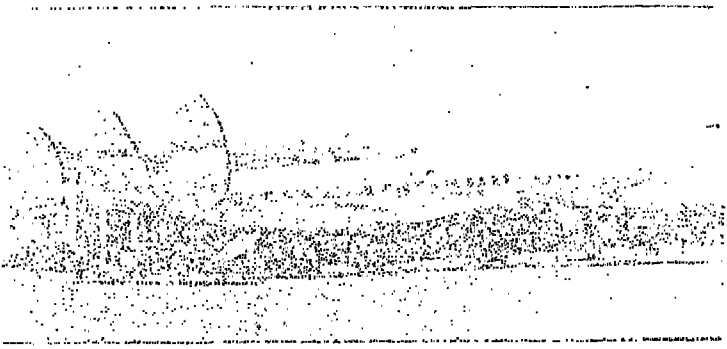
ताशकंदके हवाई अड्डेपर

रास्तेमें विमानके अन्दर एक और हिन्दुस्तानी खिसखिस हुई। एयर इण्डियाके अधिकारियोंने बिना किसीसे सलाह लिये घोषणा कर दी कि पूर्व-निश्चित ८ दिन रूसमें रहनेका कार्यक्रम रद्द किया जाता है और इसी विमानसे दूसरे दिन लोग वापस दिल्ली आ सकते हैं। इसपर बड़ा होहल्ला मचा। पण्डित हृदयनाथ कुंजरू और डाक्टर रामसुभग सिंहने भी विरोधमें साथ दिया और फिर अधिकारियोंको अपनी घोषणा वापस लेनी पड़ी। वापस लेते समय भी खुले दिलसे गलती न मानकर नौकरशाही ढंगसे कह दिया गया कि 'पहलेकी सूचनाके शब्द दुर्भाग्यपूर्ण थे जिससे भ्रम हुआ। हमारा इरादा कार्यक्रम रद्द करनेका नहीं था।'

हम सबने मनमें ही हँसकर बात टाल दी।

ताशकंदमें हमारे स्वागतकी पूरी तैयारी थी। वहाँके मेयर हवाई अड्डेपर आये थे और लंचके समय भाषण आदि हुए। भारतकी ओरसे राजकुमारी अमृत कौर अंग्रेजीमें बोलीं! ताशकंद रेडियोके एक सज्जनने श्री रघुनाथ सिंहका छोटा-सा हिन्दी भाषण टेपपर रेकार्ड कर लिया। सुना कि वहाँकी सारी काररवाई उसी दिन शामको ताशकंद रेडियोसे भारतके लिए सुनायी गयी।

रूस सरकारने ताशकंदको दक्षिणी एशियामें राजनीतिक-सांस्कृतिक कार्य चलानेका अपना मुख्य केन्द्र बनानेका निश्चय किया है। ताशकंदका विस्तार यही दृष्टि सामने रखकर बड़ी तेजीसे किया जा रहा है। ताशकंद रेडियोके ट्रांसमीटर बहुत शक्तिशाली बनाये जा रहे हैं ताकि भारतीय भाषाओंके और पाकिस्तानी भाषाओंके सभी रेडियो

कार्यक्रम यहाँसे ब्राडकास्ट किये जायें। मास्कोके विदेशी भाषा प्रकाशन गृहकी भारतीय भाषाओंकी शाखा भी यहाँ आ सकती है।

जार लोगोंके जमानेमें भी ताशकंद दक्षिणी रूसके लाटका रहनेका मुख्य केन्द्र रहा। सारे मध्य एशियाई रूसी साम्राज्यपर यहींसे शासन होता था। ताशकंद बहुत पुराना शहर है। ईसाके पूर्व दूसरी सदीके चीनी साहित्यमें इसका उल्लेख है। मस-जिदों-मीनारों और गन्दी बस्तियोंका पुराना शहर अब भी नये शहरका एक अंग है, पर वह बड़ी तेजीसे गिराया जा रहा है और कुछ ही वर्षोंमें यहाँ केवल ऐतिहासिक महत्त्वकी इमारतें छोड़कर पुराने शहरका एक भी नामनिशान न रहेगा। प्राचीनकालमें यह व्यापारका भारी केन्द्र था, पूर्वसे पश्चिम जानेवाली सड़कें और उत्तरसे दक्षिण जानेवाली सड़कें ताशकंदमें ही एक दूसरेसे मिलती थीं। व्यापार-मार्गका केन्द्र होनेपर भी यहाँ अपना कोई उद्योग नहीं था और गरीबीका साम्राज्य था।

१९१७ की रूसी क्रान्तिके बाद ताशकंदके अच्छे दिन आये। सोवियट संघके १६ घटक राज्योंमें उजबेकिस्तानका नम्बर महत्वकी दृष्टिसे रूस, यूक्रेन, बायलोरशियाके बाद चौथा है। रूसके मध्य एशियाई टर्कमेन, उजबेक, ताजिक और किरगिज इन चार राज्योंमें सबसे अधिक महत्वका राज्य उजबेक ही माना जाता है। रूसभरके रुईके कुल उत्पादनका दो तिहाई उजबेकिस्तानमें ही होता है। ताशकंद इसी उजबेक सोवियट गणतन्त्रकी राजधानी है। क्रान्तिके बाद इसकी इतनी उन्नति हुई है कि आजकल ताशकंदमें २०० स्कूल, ४० टेकनिकल हाई स्कूल, १७ कालेज, सेण्ट्रल एशियन विश्वविद्यालय, विज्ञान अकादमी और ५३ रिसर्च केन्द्र (जिसमें १ परमाणु खोज केन्द्र भी है), ९ थियेटर, २ फिल हार्मोनिक सोसाइटियाँ (वाद्य संगीतालय), सर्कस, कई सिनेमा, फिल्म स्टूडियो, प्रकाशनगृह (जिनमें पुस्तकोंकी १॥ करोड़ प्रतियाँ हर साल छपती हैं), कलासंग्रहालय तथा ४ अन्य म्यूजियम, ६० क्लब, १० संस्कृति महल, २ युवक महल, पार्क और १ स्टेडियम हैं। १० अखबार यहाँसे निकलते हैं, एक बहुत बड़ा रेडियो स्टेशन है। रेलवे और हवाई यातायातका महत्त्वका केन्द्र है। आबादी इस समय करीब ८ लाख है। मध्य एशियाका यह सबसे बड़ा नगर है। उजबेकिस्तानमें ही प्राचीन बुखारा और समरकंद नगर भी हैं।

उजबेक इसलाम धर्मको मानते हैं। मास्कोके रूसी क्रान्ति-नेताओंने धर्मको अफीमकी गोली कहकर पहले मुल्लाओं आदिको दबानेकी कोशिश की, पर धर्मको अफीमकी गोली अब भी मानते हुए वे उसका व्यावहारिक उपयोग करनेकी योजनाएँ बना रहे हैं। ताशकंदके मुल्लाओंको पहलेसे अधिक स्वतन्त्रता दी गयी है। वे अब चन्दा कर नयी मसजिदें और मदरसे बाँधने लगे हैं। मध्य एशियाके बड़े मुफ्ती जियाउद्दीन खाँ इब्न मुफ्ती खाँ बाबा खाँका वास्तव्य आजकल ताशकंदमें ही १६वीं सदीकी एक पुरानी, पर सुन्दर मसजिद और मदरसेमें है। हालमें मिस्रके राष्ट्रपति नासिरने यहीं आकर नमाज पढ़ी थी। नेपालके

शाह महेन्द्र भी यहाँ गये थे। मोरक्कोसे लेकर पाकिस्तान तकके मुसलिम देशोंकी राजनीतिका केन्द्र भी रूसी सरकार ताशकंदको ही बनाना चाहती है।

इसी ७ अक्तूबरको ताशकंदमें एशिया और अफ्रीकाके ५० से अधिक देशोंके लेखकोंका सम्मेलन हो रहा है। उसकी तैयारी यहाँ जोरोंसे हो रही है। साहित्य प्रदर्शनीके लिए अति प्राचीन ऐतिहासिक हस्तलिखित एकत्र किये गये हैं। यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलियासे भी पर्यवेक्षक आनेवाले हैं। पिछला एशियाई लेखक सम्मेलन नयी दिल्लीके विज्ञान भवनमें हुआ था। उसी समय इस सालका सम्मेलन ताशकंदमें करने और उसमें अफरीकी देशोंके लेखकोंको भी, केवल पर्यवेक्षक ही नहीं, पर पूरे प्रतिनिधिकी हैसियतसे बुलानेका निश्चय हुआ था।
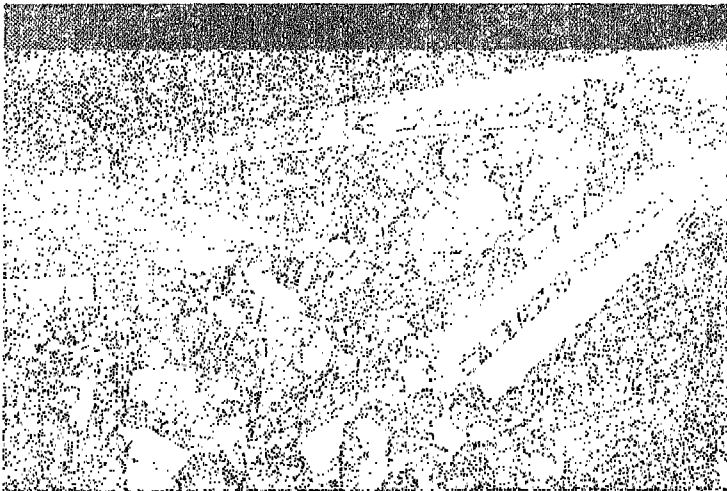
मास्कोके हवाई अड्डेपर विमानसे उतरते हुए संसद सदस्यों और पत्रकारोंका दल

ताशकंदके हवाई अड्डेपर जो खाना मिला उसमें तरबूज और काले अंगूरोंकी भरमार थी। रोटी भी तंदूरकी ब्रेड जैसी बनायी गयी थी।

२ घण्टा ताशकंदके हवाई अड्डेपर ठहरकर हम भारतीय समयके अनुसार ४॥ बजे शामको मास्कोके लिए रवाना हुए। ६ घण्टे उड़नेके बाद जब कैप्टेन विश्वनाथने सूचना दी कि अब १ घण्टेमें ही हमारा विमान मास्को पहुँचनेवाला है, हमारा दिल खुशीसे

नाच उठा। रात ११॥ बजे (मास्कोमें उस समय ९ बजे थे) हमारा विमान धीरेसे मास्कोके व्नुकोवो हवाई अड्डेपर उतरा। यूरोपीय ठण्डका आभास हमें ताशकंदके हवाई अड्डेपर ही मिल चुका था यद्यपि सूर्य भगवान् वहाँ अपनी सब रश्मियोंसे चमक रहे थे, इसलिए मैंने स्वेटर और ओवरकोट पहन लिया था। मास्को शहर विद्युत् दीपावलीसे रत्नभूषित सुन्दर तरुणी जैसा लग रहा था।

हवाई अड्डेपर सुप्रीम सोवियटके अध्यक्ष पी० पी० लोबानोव, 'एयरो फ्लोट'के डिप्टी प्रधान एयर मार्शल एस० एफ० झावोरोन्कोव और रूसी विदेश विभागके दक्षिण-पूर्वी एशियाकक्षके प्रधान वी० एम० वोल्कोव हमारे स्वागतके लिए आये थे। भारतीय राजदूत श्री के० पी० एस० मेनन और बहुतसे भारतीय भी आये थे जिनमें मेरी मुलाकात सबसे पहले 'आज'के मास्को स्थित संवाददाता श्री शंकर गौरसे ही हो गयी। श्री गौर बड़े खुशदिल और औलिया जीव हैं यह मुझे दिल्लीमें ही मालूम हो गया था क्योंकि पहले वे भारत सरकारके सूचना विभागमें काम कर चुके थे, पर उनके पैरपर पड़ा चक्र उन्हें किसी एक जगह ठहरने ही नहीं देता। मास्कोमें भी वे कितने दिन ठहरेंगे कहा नहीं जा सकता, पर कामलायक रूसी भाषा सीखकर उन्होंने वहाँके सैकड़ों युवक-युवतियोंको अपना मित्र बना लिया है। मेरा चेहरा देखकर ही लोग या तो मुझे साधु समझते हैं या नीरस, इसलिए शंकर गौर अपने रोमांसोंकी कथाओंका जिक्र मुझसे नहीं किया करते थे। (मुझे झूठमूठ ही बड़ा भारी साहित्यिक समझकर लौटते समय उन्होंने मुझे ढले लोहेकी उभड़ी रूसी साहित्यिक पुश्किनकी मूर्ति भेंट की।) अस्तु।

१२ घण्टे उड़कर हम दिल्लीसे मास्को पहुँच गये थे। दिल्लीसे सबसे तेज धड़ाका ट्रेनसे मुगलसराय पहुँचनेमें भी इससे अधिक समय लगता है।

नयी हवाई सर्विसने दिल्ली और मास्कोको अब आंगन और ओसारा बना दिया है!

———:o:———

(४)

मास्कोमें

इन्टूरिस्ट एजेन्सी

हम लोग अपनी यात्राभर एयर इण्डिया इण्टरनेशनल कारपोरेशनके मेहमान थे। रूसमें पर्यटकोंकी सारी व्यवस्था वहाँकी एकमेव सरकारी पर्यटक कम्पनी या संस्था 'मैसर्स सोवियट इन्टूरिस्ट ट्रैवल एजेन्सी' करती है। इसलिए मास्कोके हवाई अड्डेपर उतरते ही 'एयर इण्डिया'ने हमें 'इन्टूरिस्ट'के हवाले कर दिया। हवाई अड्डेपर कस्टम आदिके लिए हमें रुकना नहीं पड़ा और स्वागत-भाषण आदि होते ही हम 'इन्टूरिस्ट'की बसों और कारोंमें

अपने होटलको रवाना हुए। रूसमें हम वहाँकी किसी संस्थाके मेहमान न थे, पर साधारण पर्यटक थे। रूसमें पर्यटक बाहरसे चाहे जितनी विदेशी मुद्रा या मूल्यवान चीजें ले जा सकते हैं, पर उन्हें फिर वापस ले जाना हो तो आते ही रजिस्टर कराना पड़ता है। व्यक्तिगत उपयोगके सामानके लिए कोई कस्टम ड्यूटी नहीं लगती।

विदेशी पर्यटकोंके लिए इनटूरिस्ट प्रथम श्रेणीके होटल उन सब शहरोंमें बने हैं जहाँ पर्यटकोंको जानेकी अनुमति है। १९५५ के पहले रूस सरकार यह नहीं चाहती थी कि कोई बाहरी विदेशी रूसमें आवे और रूसी पर्यटक पश्चिमी देशोंमें जायँ, पर अब रूस बहुत तेजीसे बदल रहा है। क्रुश्चेव युगमें रूसमें नया मनु शुरू हुआ है, मन्वंतर हुआ है। अब विदेशी यात्रियोंको रूस आनेके लिए आकर्षित किया जाता है। १९५६ में रूसके केवल १२ नगर—मास्को, लेनिनग्राड, किएव, मिन्स्क, ओडेसा, खारकोव, स्टालिनग्राड, रोस्टोव-आन-डान, टिबलिसी, सुखुमी, याल्टा और सोची—पर्यटकोंके लिए खुले थे। इनकी संख्या अब ४० हो गयी है जिनमें कुछ मध्य एशियाके और कुछ साइबेरियाके नगर भी हैं। इन नगरोंमें भी पर्यटक नगरसे केवल ४० किलोमीटर या २५ मील दूरतक जा सकता है। इस हदके बाहर बिना विदेश विभागकी विशेष अनुज्ञाके नहीं जा सकता, पर इस प्रतिबन्धपर आश्चर्य इसलिए नहीं होता कि हर एक सीमावर्ती और शहरी सोवियट नागरिकको भी अपने वासस्थानसे इससे अधिक दूर जाना हो तो पहले सरकारी परमिट लेना पड़ता है। १९३२ से ही यह प्रतिबन्ध जारी है। सोवियट नागरिकको परमिट मिलने में देर नहीं लगती, पर बिना परमिटके वह नहीं जा सकता। सरकार यह नहीं चाहती कि शहरोंमें बेकाम लोग भर जायें। इसीलिए यह कानून बना है।

स्टालिन युग क्रान्त्युत्तर निर्माणका युग था। कम्युनिज्मके विरोधी और अपने व्यक्तिगत राजनीतिक विरोधियोंको स्टालिनने तलवारके घाट उतारकर मैदान साफ किया। फिर रूसी किसानोंको सामुदायिक कृषिके लिए बलपूर्वक तैयार किया। इसमें भी लाखों किसानोंको मार डालना पड़ा या जेल भेजना पड़ा या साइबेरियामें निर्वासित करना पड़ा। इसके बाद भारी उद्योगोंपर सारा जोर लगानेका युग आया। इसमें भी देशभरमें खाद्य-पदार्थोंकी, खाद्यान्नोंकी तथा जीवनके लिए आवश्यक अन्न-वस्त्र, मकान, औषधि आदिकी कमी पड़ गयी जिसके कारण दारिद्र्य, दैन्य और असन्तोष फैला। डिक्टेटर स्टालिनने दारिद्र्य और दैन्यको राष्ट्रके लिए त्यागका मोहक रूप और असन्तोषको दमनके डरसे दबा दिया था, पर वे यह नहीं चाहते थे कि रूसकी यह कमजोरी कोई विदेशी साम्राज्यवादी देखे, इसलिए विदेशी पर्यटकोंको रूसमें आनेको या रूसियोंको बाहर जानेको कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था, उलटे इसे हेय दृष्टिसे ही देखा जाता था। ५-६ साल पहलेतक रूसी नागरिक खुलेमें किसी विदेशीसे बात नहीं करते थे, फिर चाहे वह विदेशी अपने देशकी कम्युनिस्ट पार्टीका कोई बड़ा नेता ही क्यों न हो, पर अब १९५६ से क्रुश्चेव युगमें सब कुछ बदल गया है और तेजीसे बदल रहा है। अब मास्कोकी सड़कों-

पर या होटलोंके खानपानगृहों (रेस्तराँ) में रूसी नागरिक राजनीतिको छोड़कर और सब विषयोंपर बहुत खुलकर विदेशियोंसे बातें करते हैं। रूसी बच्चे विदेशियोंको देखते ही अपने मनीबेगोंमेंसे पुराने उपयोगमें आ चुके रूसी डाक टिकट निकालकर बदलेमें विदेशी सिक्कोंकी माँग करते हैं।

रूसी जनताके लिए स्तालिन राष्ट्रनिर्माता अवश्य थे, पर जनता उन्हें अपनेसे दूर कोई अलग रहनेवाला, केवल आदरणीय, पर भयजनक रक्तपिपासु तानाशाह मानती थी। क्रुश्चेव जनताके आदमी हैं, जनताके बीच जाते हैं, उनके सुख-दुःखमें शामिल होते हैं, उनसे हँसी-मजाक करते हैं। जनताको इस बातकी कोई परवाह नहीं है कि राजनीतिक क्षेत्रमें वे अब स्तालिन जैसे ही एकच्छत्र राज्यधारी बन गये हैं, शायद राजनीतिके मैदानमें दलदलपुरी मचनेसे अच्छा लोकप्रिय तानाशाह रहना ही रूसी जनता पसन्द करने लगी है। स्तालिनके दोनों सामुदायिक कृषि और भारी उद्योगोंके जबरदस्तीके कार्यक्रमोंसे रूसमें आर्थिक पुनरुद्धारकी अच्छी खासी नींव पड़ी और उस नींवपर सुन्दर इमारत भी खड़ी होने लगी। क्रुश्चेवके जीवनोपयोगी वस्तुओंके उत्पादनपर अधिक जोर देनेसे जनताकी खुशहाली बढ़ी और अब रूसमें विदेशियोंसे छिपानेकी कोई चीज नहीं रही। अब तो वह गर्वके साथ अपनी प्राप्तियाँ विदेशियोंको दिखाना चाहता है, दुनियाके सामने उनका प्रदर्शन करना चाहता है (स्पुटनिक छोड़कर ब्रह्माण्डमें भी उसने इसका प्रदर्शन किया है।) इसलिए विदेशी पर्यटक अब 'लेनिन, केवियर मछली, वोडका शराब, स्पुटनिक और सोशलिज्म'के देशमें विशेष रूपसे आकृष्ट किये जा रहे हैं।

हम जिस दिन मास्को पहुँचे उस दिन केवल उस एक रूसी शहरमें ६५०० विदेशी पर्यटक मौजूद थे। इनमेंसे आधे तो सरकारी डेलिगेशनोंके सदस्योंकी हैसियतसे आये थे, पर आधे विशुद्ध यात्री या पर्यटक थे। जो ३-३॥ हजार यात्री थे उनमें लगभग ५०० अमेरिका, ब्रिटेन तथा पश्चिमी यूरोपके अन्य देशोंके थे।

१९५७ में कुल ५,५३,३६९ विदेशी रूस आये थे जिनमेंसे १,४४,४७६ विशुद्ध यात्री या पर्यटक थे। इनमें कुछ चिकित्सा करानेके लिए और कुछ चर्चों, गिरजाघरोंके धार्मिक कामोंसे आये थे। १५१८२ विदेशी सरकारी डेलिगेशनोंके सदस्योंके रूपमें आये थे। ३२२७५ विदेशी खिलाड़ी तथा ३,२४,८२७ उद्योग-व्यवसायी-व्यापारी थे तथा बचे १६६४७ केवल अन्य देशोंमें जानेके लिए रूसकी सीमाओंसे होकर गये थे। ५॥ लाख विदेशियोंमेंसे ३ लाख ८४ हजार सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट देशोंके थे और बाकी १ लाख ६९ हजार अन्य देशोंके। अन्य देशोंके १ लाख ६९ हजार व्यक्तियोंमें ६४३ ब्रिटेनसे, २७२३ अमेरिकासे, १६६२ फ्रांससे, ५७४३ फिनलैण्डसे, ६५४ स्वीडनसे, ३६५ इटलीसे, १४३ भारतसे, ७८ नारवेसे, ३७ मिस्रसे और १६० आस्ट्रियासे आये थे।

समाजवादी देशोंसे गये लोगोंमें ६९८६९ पोलैंडसे, १८९९५ चेकोस्लोवाकियासे,

२६५२० रूमानियासे, ११३०४ पूर्वी जर्मनीसे और ४७३५० चीनसे गये थे। चीनसे आये लोगोंमें केवल ५७९ विशुद्ध यात्री थे।

१९५७ में आये विदेशियोंकी यह संख्या है। १९५८ में तो यह संख्या और बढ़ जायगी तथा आगे भी तेजीसे बढ़ती जायगी। इस वर्षके पहले ८ महीनेमें ही ४००० अमेरिकन पर्यटक रूस जा चुके हैं और रूसी पर्यटकोंका एक दल पहले-पहल अमेरिका गया है।

रूसमें विदेशियोंका अब स्वागत होनेके कारण सड़कोंपर टैक्सियों और विदेशी कारोंकी संख्या बहुत बढ़ रही है। टैक्सी ड्राइवर अब टिप लेनेमें हिचकिचाते नहीं। होटलोंके नृत्यगृह रोज रातको बहुत जल्दी ही 'हाउस फुल' हो जाते हैं। रेस्तराँओंकी और विभिन्न देशोंके विशिष्ट खाद्यपदार्थ तथा पेय मिलनेवाले खान-पानगृहोंकी संख्या बढ़ रही है और नये-नये इनटूरिस्ट होटल बड़ी तेजीसे हरएक शहरमें बनते जा रहे हैं। पहलेकी अनहोनी, पर क्रेमलिनके स्केच और मास्कोके बड़े नक्शे अब बाजारमें बिकने लगे हैं तथा हरएक बड़े शहरकी गाइड पुस्तकें विभिन्न भाषाओंमें छपने लगी हैं।

मास्कोका 'होटल पेकिंग'

१९५५ में सोवियट रूस भारतकी सहायतासे इण्टरनेशनल यूनियन आफ आफिशल ट्रैवेल आर्गानिजेशन्सका सदस्य बन गया। मास्कोमें इस समय इनटूरिस्टके ८ बड़े-बड़े होटल हैं। इनमें सबसे बड़ा और खर्चीला 'मास्को' होटल है जहाँ विदेशी मन्त्री आदि ठहराये जाते है। 'सेवाय', 'मेट्रोपोल' और 'नेशनल' होटलमें अधिकतर पश्चिमी यूरोपीय देशोंके और अमेरिकन यात्री ठहरते हैं। एशियाई देशोंके पर्यटक 'पेकिंग होटल' 'सोवियटस्काइया', 'यूक्रेन' और 'लेनिनग्राडस्काइया' इन चार होटलोंमें ठहराये जाते हैं। इनटूरिस्टका बड़ा दफ्तर नेशनल होटलमें है।

मास्कोके हवाई अड्डेसे इनटूरिस्ट मोटर-कारें और बसें हमें 'होटल पेकिंग' ले गयीं। मुझे ४२६ नम्बरका यानी चौथी मंजिलपरका २६ नम्बरका कमरा मिला। मित्र शंकर गौर मुझे अपने कमरेमें पहुँचाकर अपने दूसरे मित्र अम्बालेके 'ट्रिब्यून'के श्री ए० सी० भाटियाको उनके कमरेमें पहुँचाने गये।

संयोगवश श्री भाटियाको भी ४२६ नम्बरका ही कमरा मिला और शंकर गौरके दोनों मित्र आपसमें भी मित्र और साथी हो गये।

तबीयत ठीक न होनेके कारण रातको हम दोनोंने कमरेमें ही दूध मंगा लिया और उसीको पीकर रह गये। ११ बज गये थे इसलिए जो लोग होटलकी १३वीं मंजिल-पर रेस्तराँमें भरपेट खाना खानेके इरादेसे गये थे उन्हें भी अधिक सन्तोष नहीं हुआ।

अपनी घड़ी मास्कोके समयसे मिलानेके लिए ढाई घण्टा पीछे कर तथा केवल एक मास्को रेडियोमें जकड़ा हुआ कमरेका रेडियो सेट धीमा कर मुलायम कम्बलोंके अन्दर घुसकर हम तोशक और तकियोंके बिस्तरपर लेट गये। शीघ्र ही निद्रादेवीने हमें अपनी गोदमें ले लिया।

——:०:——

नित्य नियमानुसार प्रातः ५ के लगभग नींद खुली। बाहर देखा तो काफी उजाला हो गया था। मास्को उत्तर ५५°४० अक्षांशपर यानी ३०डिग्री काशीसे उत्तर होनेके कारण और आजकल सूर्य उत्तरायण होनेके कारण वहाँ सूर्योदय काशीके सूर्योदयसे पहले और सूर्यास्त बादमें होता था। दिन बड़ा था, रात छोटी थी। ५ बजे उजाला अधिक होनेपर भी आसमान नित्यकी भाँति बादलोंसे ढँका था। इसलिए सूर्यप्रकाश बादलोंसे छनकर ही आता था।

स्मरण आया कि आज १५ अगस्त है। भारतीय स्वतन्त्रताकी ११ वीं वरसगांठ है। नयी दिल्लीमें ७॥ बजे होंगे और नेहरूजी लाल किलेपर सलामी लेकर भाषण शुरू ही करनेवाले होंगे। चटसे सामनेके टेबुलके पास गया और चाभी दाहिनी तरफ घुमाकर (रेडियोकी चाभी वहां स्विच आफ नहीं होती) रेडियोकी आवाज तेज की। पर फिर स्मरण आया कि यह तो केवल सुग्गेकी तरह मास्को रेडियो ही सुनाता है, और कोई स्टेशन इसपर नहीं लग सकता। बड़ी निराशा हुई। खैर।

बादमें अखबारोंसे मालूम हुआ कि मास्कोमें १३ अगस्तसे ही भारतीय स्वातन्त्र्य-दिनोत्सव मनानेके कार्यक्रम शुरू हो गये थे। उस दिन विदेशी राष्ट्रोंसे मित्रता और सांस्कृतिक सम्बन्ध रखनेवाली सोवियट सोसाइटियोंके संघमें सोवियट-भारत सांस्कृतिक संघके अध्यक्ष अकादेमिशन (हम लोगोंके यहाँके प्रोफेसर या डाक्टरकी तरह यह पदवी है) निकोलाई त्सितसिनके सभापतित्वमें एक सभा हुई थी। उन्होंने अपने भाषणमें शान्तिप्रिय भारतके वैज्ञानिकोंके साथ सम्पर्क अधिक घनिष्ठ करनेपर जोर दिया था। रूस-की कृषि विज्ञानकी राष्ट्रीय अकादमीके सहसदस्य निकोलाई इवेरविनोवस्की और भारतीय

राजदूत श्री के० पी० एस० मेननके भी भाषण हुए थे। श्री मेननने उस सभामें घोषणा की थी कि कलसे भारत और रूसके बीच सीधी हवाई सर्विस शुरू होनेवाली है जो भारत और रूस इन दो महान् देशोंकी मित्रतामें और वृद्धि करेगी और जिसका बड़ा भारी असर विश्वमें शान्ति-स्थापनपर पड़ेगा।

दूसरे दिन यानी १४ अगस्तको भी मास्कोके सोकोल्निकी पार्कमें भारत-रूस मित्रता संघके उपाध्यक्ष डॉ० वी० बालाबुशेविचके सभापतित्वमें सभा हुई थी।

१५ अगस्तको सवेरे रूसके दो सबसे बड़े पत्रोंमेंसे एक 'इजवेस्तिया' में भारतके बारेमें प्रशंसापरक अग्रलेख भी छपा था। उसी दिन 'कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा' में देहरादून-का एक समाचार भी छपा था कि किस प्रकार रूसी खनिज विशेषज्ञोंकी मददसे भारतमें ज्वालामुखी, होशियारपुर और खंभातमें खनिज तेलके लिए कुएँ खोदे जा रहे हैं।

'होटल पेकिंग' किसी भी अच्छे यूरोपीय होटलकी तरह साफ, सज्जित और आरामदेह था। कमरे एयरकण्डीशन नहीं थे, पर सामनेकी पूरी दीवारभर बड़ी शीशोंकी खिड़की पूरी तरह हवाबन्द होनेके कारण ठण्डकी कोई तकलीफ नहीं थी। दिनमें शीत-ताप-मान २१° सेण्टीग्रेड था जो सामान्यतः भारतीयोंके लिए भी सहनीय था। कमरेमें उबलते पानीकी 'सेण्ट्रल हीटिंग'की व्यवस्था थी, पर वह अक्तूबरसे चालू होती थी इसलिए हम लोग गये, तब बंद थी। शुचिगृह-स्नानगृहमें ठंडे-गरम दोनों पानीके पाइप थे। बाथ टबके स्प्रेकी घुमौवा व्यवस्था मुझे हालैंडके बाथ टबोंसे भी अच्छी लगी। स्नानका आनन्द बहुत दिव्य आता था।

रूसमें 'बेड टी' या 'इवनिंग टी'का रिवाज नहीं है। पर हमारे कहनेसे दूसरे दिनसे होटलमें हम लोगोंके लिए 'बेड टी'की भी व्यवस्था हो गयी। घूमने-घामनेके कारण 'इवनिंग टी'के समय हम किसी भी दिन होटलमें थे ही नहीं, पर उसकी व्यवस्था और आसानीसे हो जाती क्योंकि पर्यटकोंके लिए शामको चायकी व्यवस्था होटलवाले रखते हैं।

प्रातर्विधि और प्रातराह्निकसे निपटकर हम ९ बजे ब्रेकफास्टके लिए और बाहर जानेके लिए तैयार हो गये। मास्कोमें एक छोटेसे 'मास्को न्यूज' नामक द्विसाप्ताहिकको छोड़कर और कोई अंग्रेजी समाचारपत्र नहीं छपता और बाहरसे भी १-२ कम्युनिस्ट अंग्रेजी अखबारोंको छोड़कर और कोई अखबार नहीं आता। इसलिए रेडियो और अखबारोंके अभावमें हम आर्त ही रह गये। 'होटल पेकिंग'की इमारत १३ मंजिलकी है और बिल्कुल ऊपरके मंजिलमें हमारे लिए खाने-पीनेके रेस्तराँकी व्यवस्था की गयी थी। ऊपर जाने-आनेके लिए २ लिफ्टें थीं, फिर भी लिफ्ट आनेमें कुछ देर ही लगती थी।

ब्रेकफास्ट कर हम भारतीय दूतावासमें स्वातन्त्र्य-दिनोत्सवके प्रीत्यर्थ होनेवाले सांस्कृतिक कार्यक्रममें सम्मिलित होने रवाना हुए। मैं जरा और लोगोंसे पीछे छूट गया इस-लिए अकेला ही टैक्सी करके गया। किराया ३ रूबल लगा जो पर्यटकोंके विनिमय-दरसे ४॥ रुपयेके लगभग हुआ। यह कोई बहुत अधिक नहीं था। सवेरे ही बंबवाले हमसे

होटलमें आये थे और हमने रुपयेके बदले रूबल उनसे ले लिये थे। भारतीय पर्यटकोंके लिए विनिमय दर १०० रुपये बराबर लगभग २०८ रूबल है यद्यपि अन्तरराष्ट्रीय बाजार में १०० रुपयेके बराबर ८३ या ८४ रूबल ही होते हैं। हरएक व्यक्ति भारतसे २७० रुपयेतक धन ले जा सकता है इसलिए हमें २७० रुपयेका ५६० के करीब रूबल मिला था।

भारतीय दूतावासका सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही ऊँचे दर्जेका था। संगीत, नृत्य, ग्रामगीत, ग्रामनृत्य, दक्षिण भारतके व्यंजन आदिके कारण लगता था कि हम भारतमें ही हैं।

वहाँसे लौटकर हमने १ बजे होटलमें खाना खाया। इनटूरिस्टने हमारी तैनातीमें ४ लड़कियों और ३ युवक दुभाषियों तथा दो बड़ी बसोंको रख दिया था। खाना खाकर हम मास्कोके ऐतिहासिक स्थान देखने चले।

शामको ६ बजे डिनरके लिए लौटे और इसके बाद 'सिनेरामा' देखने गये। हाल १ हजार दर्शक बैठने लायक बड़ा था। परदा बहुत बड़ा और अर्द्ध गोलाकार था। सिनेमामें कोई लड़के-लड़कीकी कहानी नहीं थी, पर रूसके भव्य विकासकी पूरी झाँकी थी। फिर भी हाल दर्शक स्त्री-पुरुषोंसे ठसाठस भरा था। टिकट भी कम नहीं था। सिनेमा शुरू होते ही त्रिमिति फिल्मके कारण ऐसा लगता था कि हम खुद ही या तो किसी मोटरमें बैठे हैं, या गाड़ीमें बैठे हैं या विमानमें बैठकर सब दृश्य देख रहे हैं। जिन्होंने थ्री डाइमेन्शनल सिनेरामा उस दिन पहले-पहल देखा उन्हें तो कुछ देरतक विमानकी पहली यात्रामें या पहली बार झूला झूलनेपर जैसा चक्कर आता है वैसा होने लगा। मैं भी ऐसे ही लोगोंमेंसे एक था। १०-५ मिनटमें ही फिर दिमाग ठीक अपनी जगहपर आ गया।

वापस आकर फिर हम आराममें अपने कमरेमें रातभर सोये।

——:o:——

(६)

रूसका पुराना इतिहास

आजकल जिसे हम रूस या सोवियट रूस कहते हैं उसका वास्तविक नाम यह नहीं है। उसका नाम है यू० एस० एस० आर० यानी यूनियन ऑफ सोवियट सोशलिस्ट रिपब्लिक्स (सोवियट समाजवादी गणतन्त्रोंका संघ।) इसमें कहीं भी 'रूस' शब्द नहीं है। रूस इस बड़े संघका एक घटक है। इस संघमें इस समय १६ गणतन्त्र हैं जिनमें रूस अवश्य सबसे बड़ा है। पर १९१७ की समाजवादी क्रान्तिके पहले इसका नाम रूस था इसलिए सोवियट संघको दुनिया अब भी रूस नामसे ही संबोधित करती है। रूसी

जनता प्रकृत्या बहुत कट्टर राष्ट्रवादी (नेशनलिस्ट) रही है। चूंकि १९१७ की क्रान्तिके बाद उस क्रान्तिके नेता सारी दुनियामें कम्युनिज्मकी स्थापनाका कार्यक्रम बनानेका निश्चय कर चुके थे इसलिए जितने क्षेत्रमें क्रान्तिके उपरान्त कम्युनिज्मकी स्थापना हो चुकी थी उतने क्षेत्रको वे रूस नाम नहीं दे सकते थे। इससे कम्युनिज्मका क्षेत्र सीमित होता और पुराने रूसके बाहरके देशों-प्रदेशोंको इसमें आपत्ति भी होती, इसलिए नये विधानमें देशका नाम 'सोवियट संघ' रखा गया ताकि इसमें सारी दुनियाके देशोंको सम्मिलित होनेकी गुंजाइश रहे।

रूसी जनताकी प्रकृति बदलनेके प्रयत्न १०० प्रतिशत सफल नहीं हुए हैं। रूसी अब भी राष्ट्रवादी हैं, यद्यपि यह भी साबित हो चुका है कि प्रयत्नसे मनुष्यकी प्रकृति भी केवल १ पीढ़ीमें यानी २०-२५ सालमें बहुत कुछ बदली जा सकती है। रूसियोंके राष्ट्रवादी रहते हुए भी संघके अन्य १५ राज्योंको वे लोग बहुत अधिक हीन भावनासे नहीं देखते और न हमारे यहाँ जैसा प्रान्तवाद वहाँ है। सोवियट संघके सभी १६ राज्य भाषाके आधारपर बंटे हैं, पर रूसी सबकी राजभाषा है क्योंकि वह सबसे बड़े राज्यकी भाषा है। भाषाके आधारपर किस प्रकार रूसके राज्य बंटे हैं और राजभाषा रूसीपर बहुत अधिक जोर देकर सब राज्योंको एक कैसे बनाया जा सकता है इसका अध्ययन भारतके राजनीतिज्ञोंको अवश्य करना चाहिये। हिन्दी-विरोधी लोग यदि रूसके उदाहरणपर गौर करें तो उनका हिन्दी-विरोध बिलकुल नहीं रह जायगा। पर यहांका हिन्दी-विरोध तो राजनीतिक है।

रूसी जनता इतनी अधिक राष्ट्रवादी है कि आज यदि उसके सामने यह प्रस्ताव रखा जाय कि चीन या भारतको आप सोवियट संघमें सम्मिलित कर लीजिये तो सम्भवतः वे इसे स्वीकार न करेंगे क्योंकि ऐसा करनेपर फिर चीनी या हिन्दी भाषाको सोवियट संघकी राजभाषा बनाना पड़ेगा। रूसके इर्द-गिर्दके छोटे राज्योंके लिए रूसके साथ रहना ठीक हो सकता है। उन्हें भी आजकी साम्राज्यवादी भूखी दुनियामें कोई न कोई रक्षक चाहिये ही और रूस जैसा ताकतवर पड़ोसी, जो सांस्कृतिक उत्थानका पूरा-पूरा अवसर देता है, रहनेपर वे उससे क्यों झगड़ेंगे।

इनटूरिस्टने हमें जो गाइड दिये थे वे सब विश्वविद्यालय या उच्च टेकनिकल कालेजों में पढ़नेवाले शिक्षार्थी, छात्राएँ और छात्र थे। रूसके पुराने इतिहासका वे बड़े गर्वके साथ बखान करते रहे। प्राचीन इतिहासके और राजपुरुषोंके स्मारकोंका सोवियट सरकार बहुत उदारतापूर्वक रक्षण करती है। धर्मको न माननेवाली सरकार भी प्राचीन गिरजा-घरोंकी बड़ी सावधानतासे रक्षा करती है और उसे अधिकाधिक सुन्दर बनानेका प्रयत्न करती है। क्रेमलिनके अन्दरके गिरजाघर, जहाँ जार बादशाह लोग दफनाये गये हैं, बहुत कलापूर्ण ढंगसे रखे गये हैं। मास्कोमें ईसाइयोंके विभिन्न सम्प्रदायोंके गिरजे हैं जहाँ अब वृद्धोंके अतिरिक्त युवक लोग भी रविवारको ईशु-प्रार्थनाके लिए अधिकाधिक संख्यामें

जाने लगे हैं। मास्कोमें एक मसजिद भी है जहाँ रोज ४ बार और शुक्रवारको जुमेकी बड़ी नमाज पढ़ी जाती है। अधिकतर गिरजाघर, राजमहल और रईसोंके महान संग्रहालय बना डाले गये हैं।

रूसी लोगोंके कट्टर मातृभूमिभक्त, राष्ट्रवादी होनेके कारण वर्तमान सोवियट संघको समझनेके लिए रूसके कुछ प्राचीन इतिहासकी जानकारी भी आवश्यक है।

सन् ८८३ में रूरिक नामके एक नार्स सरदारने कियेवको राजधानी बनाकर एक नया स्लाव राज्य स्थापित किया। प्राचीन रोमन साम्राज्यके पूर्वकी ओर बचे बाइज्ञाण्टाइन (कुस्तुन्तुनिया) राज्यके ईसाई पादरी रूस गये और वहाँके लोगोंको धर्म और अक्षर ज्ञान कराकर सभ्य और संस्कृत बनाना शुरू किया। चूँकि बाइज्ञाण्टाइन साम्राज्य-पर पश्चिमी यूरोपकी संस्कृतिसे अधिक पूर्वका रंग चढ़ा था इसलिए रूसी लोग भी पश्चिमी यूरोपके लोगोंसे पूर्वके लोगोंको अपना अधिक निकटका मानने लगे। पिताकी सम्पत्ति सभी जीवित लड़कोंमें बराबर-बराबर बाँटनेके रिवाजके कारण रूरिक द्वारा स्थापित नया राज्य सैकड़ों टुकड़ोंमें बँटकर कमजोर हो गया और सन् १२२४ में चंगेज खाँके आक्रमणमें और १२३७ में तातारों या मंगोलोंके दूसरे आक्रमणसे उनका रूसपर पूरा अधिकार हो गया।

सन् १३८० में मास्कोके ग्रैंड ड्यूक डिमित्री डोनस्कोईने कुलिकोवोके मैदानपर मंगोलोंको हराकर रूसी जनताको मंगोलोंकी निकृष्टतम दासतासे मुक्त किया। मास्कोके सामन्त ड्यूकको तातारोंने कर वसूलनेके लिए कायम रखा था। चेतसिंहकी तरह इस सामन्तने कभी मंगोलोंको खुशकर और कभी उनसे लड़कर अपनी ताकत बढ़ायी थी। सन् १४६३ में मास्कोका शासक ईवान तृतीय अपनेको पूर्वी रोमन साम्राज्य, बाइज्ञाण्टाइनका उत्तराधिकारी घोषित कर सीजर या जार कहलाने लगा। उस समय देशका नाम रूस नहीं, पर मस्कोवा था।

जिस साल कोलम्बसने अमेरिकाका पता लगाया उसी साल सन् १४९२ में टिरोलके आर्कबिशपकी आज्ञासे रूसका पता लगानेके लिए इनुष्स नामक एक वैज्ञानिकके नेतृत्वमें एक दल पूर्वकी ओर गया। पर रूसी उस समय भी किसी विदेशीको अपने यहाँ नहीं आने देना चाहते थे इसलिए इनुष्स रूसकी सीमाके अन्दर जानेमें सफल नहीं हुआ। ६१ साल बाद रिचार्ड चांसलर नामका एक अंग्रेज समुद्रमें भटकते-भटकते रूसके उत्तरी तटपर पहुँच गया। इस बार लोग उसे मास्को ले गये और वहाँ ग्रैंड ड्यूकने उसके साथ व्यापारिक सन्धिपर हस्ताक्षर किये। रूसका और बाहरी दुनियाका यह पहला सम्बन्ध था। इसके बाद रूसने बाहरी दुनियाके साथ अधिकाधिक सम्बन्ध बढ़ाना शुरू किया।

१५९८ में फियोडोर प्रथमके राज्यकालमें रूरिक द्वारा स्थापित राज्यवंशकी समाप्ति हो गयी। इसके बाद ७ वर्षतक बोरिस गोडुनोव नामक एक अर्ध-तातारने जार बनकर मास्कोके राज्यपर शासन किया। इसके बाद सन् १८६१ तक रूसी जनता इन नये शासकोंकी

पूरी तरह गुलाम बना ली गयी थी। गोडुनोवकी मृत्युपर सन् १६६१में मास्कोके रोमानोव परिवारके फियोडोरके पुत्र माइकेलको रूसी सामन्तोंने नया 'जार' बनाया। सन् १६७२ में माइकेलके प्रपौत्र पीटरका जन्म हुआ। पीटर जब १० सालका था तभी उसकी सौतेली बहन सोफियाने राज्य छीन लिया। पीटर मास्कोके बाहरकी विदेशियोंकी बस्तीमें रहने लगा और यूरोपके विभिन्न देशोंके लोगोंके जीवनक्रमसे परिचित होने लगा। १७ सालकी उम्र होनेपर पीटरने सोफियासे अपना राज्य छीन लिया और रूसको बाइझाण्टाइन-तार्तार राज्यसे बदलकर उसे एक सम्पूर्ण सभ्य यूरोपीय साम्राज्यका रूप देना शुरू किया। सन् १६९८ में जार पीटरने पश्चिमी यूरोपकी यात्रा शुरू की। यह मौका देखकर मास्कोके प्राचीन-प्रेमी सामन्तोंने सोफिया और स्ट्रेल्त्सी नामक एक सैनिकके नेतृत्वमें बगावत की। पीटरने तुरत लौटकर इसका दमन किया। सन् १७१६ में पीटर पश्चिमी देशोंकी दूसरी यात्रापर निकला तो मास्कोमें फिर पोंगापंथियोंने विद्रोह किया। पीटरने तुरत लौटकर इसे भी दबा दिया। अबकी बार विद्रोहका नेतृत्व पीटरके अर्द्धविक्षिप्त पुत्र अलेक्सिसने किया था जो बादमें मार डाला गया। बाकी हजारों विद्रोही साइबेरियामें निर्वासित कर दिये गये। इसके बाद पीटरने १७२५ तक (अपनी मृत्युतक) शान्तिपूर्वक रूसी साम्राज्यको सभ्य राज्योंकी श्रेणीमें लानेका काम जारी रखा। रोज-रोज अनगिनत आज्ञापत्र निकालकर उसने पुरानी सारी व्यवस्था बदल दी। मरनेके समय पीटर २ लाखकी पैदल सेना और ५० जहाजोंकी नौसेना संघटित कर चुका था। सामंतोंकी सभा ड्यूमाको भंग कर उसने अपने सलाहकारोंकी एक सिनेट बना ली थी। पीटरने ही आधुनिक रूसकी नींव डाली। मास्कोसे हटाकर उसने अपनी नयी राजधानी पेट्रोग्राडकी (जो बादमें लेनिनग्राड बन गयी) १७१२ में स्थापना की जो बादमें यूरोपका उस समयका सबसे बड़ा नगर बन गया। विश्वविद्यालयों, अस्पतालोंकी स्थापना हुई। पक्की सड़कें बनायी गयीं। लम्बे बालोंवाले रूसी सैनिकोंको उसने सफाचट दाढ़ी-मूँछवाले पश्चिमी यूरोपियन जैसा बदल डाला। १७२१ में पीटर रूसी चर्चका प्रधान भी बन गया। १७०९ में आक्रमणकारी स्वीडेनको पीटरने पोल्टावाकी लड़ाईमें हराया और रूस उस समय यूरोपका सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य बन गया। पर इसके बाद यूरोपमें प्रशिया आदि अन्य राज्य अधिक ताकतवर होने लगे और रूस फिर अपनी सीमाके अन्दर ही कछुएकी तरह सिमटने लगा और १९वीं सदीके प्रारम्भमें अलेक्जेण्डरके राज्य में पूरी तरह सिमटकर बैठ गया। १९१७ की लेनिन-प्रणीत समाजवादी क्रान्तिके बाद भी रूस कई वर्षोंतक बाहरी दुनियासे इसी तरह सिमटकर अपनी सीमामें बैठा था। ५ मार्च, १९५३ को स्तालिनकी मृत्युके बाद ख्रुश्चेवके राज्यकालमें अब वह धीरे-धीरे बाहर आने लगा है।

———:o:———

(७)

रूसकी अर्थ-व्यवस्था

बेकारी नहीं, उलटे श्रमिकोंकी कमी

रूससे लौटनेके बाद सबसे पहला प्रश्न जो हमसे पूछा जाता रहा है वह यह है कि रूसके लोग खा-पीकर खुशहाल हैं या नहीं, वहाँ कोई बेकार तो नहीं है, लोगोंको तनखाहें या आमदनी क्या होगी और जो आमदनी होगी उसमें जीवनयापनके लिए आवश्यक चीजें वे खरीद सकते हैं या नहीं। रहनेके उनके मकानोंकी क्या व्यवस्था है। बीमार पड़नेपर उनका इलाज कैसे होता है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक उत्थानके लिए उन्हें क्या-क्या साधन उपलब्ध हैं।

रूसकी वर्तमान पीढ़ीको बेकारी नामकी चीज मालूम ही नहीं है। १९१७ की क्रान्तिके पहले, और देशोंकी तरह, रूसमें भी हजारों-लाखों बेकार थे। क्रान्तिके बाद भी बेकारीको समाप्त करनेके लिए रूसी क्रान्ति-नेताओंको १३ साल लगे। १९३० से रूसमें बेकारी बिलकुल नहीं है। सोवियट सरकारने अपनी सारी अर्थव्यवस्थाका पुनस्संघटन इस प्रकार किया और उद्योगों तथा यातायातका इस प्रकार विस्तार करना शुरू किया कि हर एक काम करने लायक व्यक्तिको कारखानोंमें, खानों-खदानोंमें और नयी-नयी बननेवाली रेल-लाइनोंके निर्माणमें काम मिलने लगा। गाँवोंमें सामुदायिक कृषि शुरू होनेके कारण किसानोंकी खुशहाली बढ़ने लगी जिससे देहातोंसे शहरोंमें कामके लिए आनेवालोंकी संख्या भी घटने लगी। सरकारने उद्योगोंको इतनी तेजीसे बढ़ाना शुरू किया कि कृषिके मशीनीकरणसे खाली होनेवाले मजदूरों तथा प्रति वर्ष बढ़नेवाली ३० लाख जनसंख्याका समावेश भी कारखानोंमें आसानीसे होने लगा। मजदूरोंको दक्ष बनानेके लिए सरकारने ट्रेनिंग स्कूल खोले जहाँ उन्हें मुफ्त मकान, वस्त्र और भोजन मिल जाता था। इस प्रकार १९१३ में राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थामें जहाँ केवल १ करोड़ ९ लाख मजदूरोंकी आवश्यकता थी वहाँ १९५६ में ५ करोड़ मजदूर खपानेकी गुंजाइश हो गयी। १९६० तक साढ़े ५ करोड़ मजदूरोंके लिए रूसमें काम मिलेगा। रूसमें अब बेकारीका तो नाम ही नहीं है, उलटे मजदूरोंकी कमी पड़ती है जिसके कारण कारखानोंमें विज्ञान और यन्त्र-शिल्पका अधिकाधिक उपयोग कर भारी परिमाणमें कारखानोंका मशीनीकरण और मशीनोंका यन्त्रीकरण करनेकी गुंजाइश हो जाती है।

मजदूरोंका वेतन

मजदूरीके सम्बन्धमें सोवियट संघने अपना यह विधान बनाया है कि समान कामके लिए समान वेतन मिलेगा। इसमें न स्त्री-पुरुषका भेदभाव किया जाता है, न विभिन्न

राष्ट्रीयताओंका भेदभाव किया जाता है और न युवकों और बड़े लोगोंमें उम्रके लिहाजसे भेदभाव किया जाता है। मजदूर जैसा माल तैयार करता है और जितने परिमाणमें तैयार करता है उसके अनुसार उसका वेतन निश्चित होता है। पारिश्रमिकका निश्चय श्रमिक-प्राप्तिकी स्थिति, श्रमिककी योग्यता, उद्योगका महत्व और जहाँ वह उद्योग है वहाँकी भौगोलिक अवस्थितिके आधारपर किया जाता है। योग्यताके अनुसार मजदूरोंकी टैरिफ श्रेणी निश्चित की जाती है और पहली श्रेणीके यानी सबसे कम योग्यता-वाले मजदूरसे ८ वीं श्रेणीके यानी सबसे अधिक योग्यतावाले मजदूरको २॥-३ गुना अधिक वेतन मिलता है। कठिन कामके लिए १५-२० प्रतिशततक और यूरल तथा साइबेरिया जैसे दूरवर्ती स्थानोंमें कामके लिए २० प्रतिशततक अधिक वेतन मिलता है। अधिकतर मजदूर मासिक निश्चित वेतनपर न रखे जाकर कामके आधारपर दैनिक वेतन-पर रखे जाते हैं, पर दैनिक वेतन-दर मासिक वेतन-दरसे कुछ अधिक ही होती है। जिस कारखानेमें दैनिक कामके आधारपर पारिश्रमिक निश्चित नहीं किया जा सकता वहाँ निश्चित वेतन और अधिक उत्पादनके लिए बोनस दिया जाता है। कच्चे मालकी, ईंधनकी और बिजलीकी बचत करना, मशीनको अधिकाधिक समय उपयोगमें रखना, खराब माल बिलकुल न निकलने देना आदिके लिए बोनस मिलता है जो निश्चित वेतन का १० से ५० प्रतिशततक रहता है। कारखानेके मैनेजरों, इञ्जीनियरों आदिके वेतन सरकार द्वारा निश्चित किये जाते हैं और इसमें कारखानेका उत्पादन, उसका महत्व, उसका शैल्पिक स्तर, कार्यकर्ता, श्रमिककी योग्यता और उसकी सेवाकी अवधि इन सबका विचार किया जाता है। कारखानेके लिए निश्चित उत्पादनसे अधिक उत्पादन होनेपर इनको बोनस भी मिलता है। लम्बी सेवाके लिए भी कुछ उद्योगोंमें अतिरिक्त पारिश्रमिक मिलता है। कारखानेमें मुनाफेका १ से ६ प्रतिशततक और अतिरिक्त मुनाफेपर २० से ५० प्रतिशततक रकमका एक कोश बनाया जाता है जिसमेंसे भी श्रमिकोंको अतिरिक्त धन मिलता है। मुनाफेके धनका कुछ हिस्सा उत्पादन बढ़ानेमें, मजदूरोंके मकान बनानेमें, उनके लिए अवकाश-गृह, चिकित्सा-गृह और बाल-गृह बनानेमें लगाया जाता है। कारखानोंमें देशव्यापी प्रतियोगिताएँ होती हैं जिनमें सफल कारखानोंको मिले पुरस्कार-धनमेंसे भी श्रमिकोंको हिस्सा मिलता है।

इस प्रकार उत्पादन बढ़ानेसे और उसकी गुणात्मक उन्नतिसे जो मुनाफा बढ़ता है उसमें श्रमिकोंको हिस्सा मिलनेसे उत्पादनकी गुण-मात्रावृद्धि और श्रमिकोंकी वेतन-जीवनयापन स्तरकी वृद्धिका सिलसिला अपने-आप चलता जाता है। १९५५ में १९५० से श्रमिकोंकी आयमें ३९ प्रतिशत वृद्धि हुई है। छठे पंचवर्षीय आयोजनमें श्रमिकोंकी आय ३० प्रतिशत बढ़ानेकी योजना थी। कामके घण्टे भी धीरे-धीरे कम करनेका प्रयत्न होनेवाला है।

मास्कोमें सैकड़ों सरकारी कारखाने होंगे, पर कहीं किसी कारखानेका

साइनबोर्ड हमें सड़कपर बाहर नहीं दिखाई दिया। मशीन टूलके एक कारखानेमें हम गये थे। फाटकके अन्दर घुसनेके बाद मालूम हुआ कि अन्दर चार हजार स्त्री-पुरुष मजदूर कारखानेमें काम करते हैं। कारखानेके अन्दर जानेके बाद ऊँची-ऊँची दीवारोंपर बड़े-बड़े अक्षरोंमें उस कारखानेका नाम, आजतक हर साल अच्छा-अच्छा काम करनेके कारण प्रशंसापत्रप्राप्त मजदूरोंके नाम और उनके बड़े-बड़े फोटो लगाये गये थे। कारखानेका जो डाइरेक्टर (मैनेजर) था उसने हमसे बातें करनेके लिए यूनियनके अध्यक्षको भी बुला लिया। उसने हम सबको पहले कोटपर लगानेके लिए कारखानेके चिह्नका एक-एक चमकीला बिल्ला दिया। उससे बातचीत करनेपर मालूम हुआ कि मजदूरोंको सप्ताहमें ५ दिन ८ घण्टे और शनिवारको ६ घण्टे मिलाकर कुल ४६ घंटे काम करना पड़ता है। इस निश्चित अवधिमें भी जो मजदूर अधिक परिश्रम कर अधिक उत्पादन करता है उसे अधिक पारिश्रमिक मिलता है। बीमार पड़नेपर पूरे वेतनकी छुट्टी मिलती है। हर कारखानेमें यूनियन होती है और यूनियनके सदस्य मजदूरोंको कुछ विशेष सुविधाएँ मिलती हैं। कारखानेके बाहर समाजसेवाका कुछ न कुछ काम करनेवालोंको ही यूनियनकी सदस्यता मिलती है, फिर भी हम जिस कारखानेमें गये थे वहाँके २०-२५ अस्थायी मजदूरोंको छोड़कर बाकी सब ४ हजार मजदूर यूनियनके सदस्य थे। मजदूर हमेशा अपना शैक्षिक और वित्तीय ज्ञान बढ़ानेके प्रयत्नमें रहते हैं जिससे उनको अपने परिश्रमका अधिकाधिक फल प्राप्त होता रहता है।

किसानोंकी कमाई

मजदूरोंकी मजदूरी निश्चित करनेकी जो प्रणाली है उससे भिन्न प्रणाली किसानों, सामुदायिक कृषिका काम करनेवालोंका पारिश्रमिक निश्चित करनेके लिए है। किसानोंको व्यक्तिगत बचतसे भी अतिरिक्त कमाई होती है। कृषि उत्पादनका जो हिस्सा सरकार लेती है उसका निश्चित मूल्य देती है। यह मूल्य बराबर बढ़ाया जाता है, अनिवार्य रूपसे लिया जानेवाला हिस्सा धीरे-धीरे घटाया भी जाता है। बीच-बीचमें बकायेकी माफी भी दी जाती है। १९५४से५६ तक पिछले ३ वर्षोंमें किसानोंकी आय दूनी हुई है। पाँचवीं पंचवर्षीय योजनामें सामुदायिक कृषकोंकी औसत आय ५० प्रतिशत बढ़ी और छठी योजनामें ४० प्रतिशत और बढ़ानेका आयोजन था।

सरकारी कर

रूसमें तीन प्रकारके कर हैं—आय-कर, अविवाहितों और छोटे परिवारोंपर कर, कृषि-कर और कुछ छोटे-छोटे कर। ३७० रूबलसे अधिक आमदनीवालोंपर आय-कर लगता है। १ जनवरी, १९५६के पहलेतक २६० रूबलसे अधिककी आमदनीपर ही कर लगता था। आय-करकी दर क्रमिक आयपर और आश्रितोंकी संख्यापर डेढ़ प्रतिशतसे

१३ प्रतिशततक रहती है। तीन या तीनसे अधिक आश्रित होनेपर ३० प्रतिशत आय-कर कम देना पड़ता है।

१२००० रूबल प्रति मासले अधिक आयवाले साहित्यिक कार्य करनेवालोंको भी १३ प्रतिशत आय-कर लगता है। डाक्टर, वकील तथा अन्य प्राइवेट प्रैक्टिस करनेवालों-को इससे अधिक दरपर आय-कर देना पड़ता है।

२० और ४० वर्षकी उम्रके बीचके पुरुषों और २० और ४५ वर्षकी उम्रके बीचकी स्त्रियोंको, यदि वे अविवाहित हों तो अविवाहित-कर, यदि उनको बच्चा न हो तो ६ प्रतिशत, १ बच्चा हो तो १ प्रतिशत और दो बच्चे हों तो आधा प्रतिशत आयपर कर देना पड़ता है। २५ वर्षकी उम्रतकके छात्रोंको यह कर नहीं देना पड़ता। इस टैक्सकी आमदनी गर्भवती माताओं, अधिक बच्चोंवाली माताओं और अविवाहित माताओंके सहायतार्थ लगायी जाती है।

किसानोंको कृषि-कर देना पड़ता है। यह १९५३में पहलेसे २॥ गुना बढ़ाया गया है। सामुदायिक कृषकोंकी प्रतिदिनकी आयपर कोई कर नहीं लगता।

इन सब सरकारी करोंसे सरकारी वार्षिक बजटका केवल ९ प्रतिशत प्राप्त होता है। इसलिए यह कर वहाँ भारस्वरूप नहीं मालूम होता। १९५६में करोंसे सरकारी आय ५ अरब ३ करोड़ रूबल हुई थी। उस साल सरकारने शिक्षा और सामाजिक सेवाओंपर १० अरब रूबल खर्च किया था।

सोवियट सरकारका झुकाव जनतापर सरकारी टैक्स कम करते जानेकी ओर है, बढ़ाते जानेपर नहीं, पर टैक्स कम रहनेपर भी चीजोंके भाव बहुत ज्यादा हैं जिससे सरकारकी आमदनी बहुत बढ़ जाती है।

चीजोंके दाम

सोवियट संघमें उत्पादनके साधनोंपर सरकारका अधिकार होनेके कारण दैनिक जीवनके लिए आवश्यक चीजोंके दाम सोवियट सरकार स्वयं निश्चित कर सकती है। १९४७ से १९५४ तक सरकारने कई बार धीरे-धीरे कर खाद्य पदार्थों तथा अन्य आवश्यक चीजोंके दाम ५० प्रतिशतसे अधिकतक घटा दिये हैं। १९४७ में जितनी मात्रामें डबल रोटी, मांस, मक्खन, शकर और दूध खरीदनेमें जहां सौ रूबल लगता था वहीं १९५६ में ४३ रूबल लगने लगा। जितने धनमें १९४७ में एक फर्स्ट क्लास सूट आता था उतने ही धनमें अब वैसे ही एक सूटके अलावा एक जोड़ा बड़े बूट और दो जोड़े बच्चोंके बूट खरीदे जा सकते हैं। ये सब आंकड़े तुलनात्मक हैं। अब भी अन्य देशोंकी तुलनामें रूसमें चीजें बहुत महंगी हैं। रूस सरकार हमारे देशमें आगरे और कानपुरसे दस रुपये जोड़े-वाले चमड़ेके बूट खरीदकर अपने देशमें उन्हें १००-१०० रुपयेमें बेचती है पर इसका

उद्देश्य मुनाफाखोरी करना उतना नहीं है जितना अन्य चीजोंके प्रचलित भावोंके अनु-रूप उन्हें रखना है।

बाजारमें चीजोंके भाव पिछले आठ सालमें कई बार कम करनेपर भी अब भी युद्धपूर्वके भावोंसे कुछ अधिक ही हैं। पर लोगोंकी तनख्वाहें पहलेसे दूनी हो गयी हैं। इसीलिए सेविंग बंकोंमें ३ करोड़ ७० लाख व्यक्तियोंके छ अरब तीस करोड़ रूबल १९५७ के शुरूमें जमा थे जो युद्धपूर्वकी जमा रकमसे नौगुना है। सोवियट सरकारको देशका सारा उत्पादन करनेवाली और उसे बेचनेवाली एकाधिकारप्राप्त बहुत बड़ी कम्पनी ही समझना चाहिये। इसलिए इतने बड़े रूस देशमें आप एक कोनेसे दूसरे कोने चले जाइये, सब जगह, खाद्यपदार्थों और शाक-भाजियोंको छोड़कर, बाकी सब चीजों के दाम आप एकसे पाइयेगा। हर चीजका दाम सरकार निश्चित करती है। दूकानदारोंका मुनाफा भी निश्चित रहता है इसलिए वे मुनाफाखोरी नहीं कर सकते। लोगोंके वेतन बढ़नेसे लोगोंकी खरीदकी शक्ति भी बढ़ती है और १९५० में जहां १०० रूबलकी चीजें बिकीं वहां १९५५ में १९० रूबलकी चीजें बिकीं और सरकारका आयोजन है कि १९६० में २८६ की बिकें। चीजोंके दाम अब भी महंगे रहनेपर भी लोगोंकी खुशहाली पहलेसे इसलिए बढ़ी है कि रूसमें परिवारके पति-पत्नी दोनों काम करते हैं। मकानोंका किराया अपेक्षाकृत बहुत कम लगता है। बच्चोंकी पढ़ाई-लिखाईका सारा खर्च सरकार करती है और चिकित्साकी सारी जिम्मेदारी सरकारकी होती है।

अपंगावस्था और वृद्धावस्थाकी चिंता व्यक्तिको नहीं करनी पड़ती और न अपने बाल-बच्चोंके भविष्यके बारेमें चिंता करनी पड़ती है। भारतमें तो परिवारके कमानेवालेको न केवल अपनी और अपने ऊपर आश्रित पूरे परिवारकी फिक्र करनी पड़ती है पर यह भी चिंता रहती है कि मेरे मरनेपर मेरी अन्त्येष्टि क्रिया कैसे होगी और मेरे आगेके आठ पुश्त मुझे किस प्रकार पानी देते रहेंगे! इसी चिंतामें वह जीवनभर जीते जी ही मरा जाता है। रूस, ब्रिटेन, यूरोपके कुछ अन्य प्रदेश, अमेरिका आदिमें, जहां सोशल सिक्युरिटी यानी सामाजिक सुरक्षाकी अधिकाधिक जिम्मेदारी स्टेट यानी सरकारें उठाती है, वहां व्यक्तियोंका जीवन अधिक सुखी होता जा रहा है। रूसमें तो सामाजिक सुरक्षाकी शतप्रतिशत जिम्मेदारी सरकारकी होनेके कारण हर एक स्त्री-पुरुष नागरिकका जीवन सुखमय रहता है, बशर्ते कि वह राजनीतिमें महत्वाकांक्षी या श्रम करनेमें काम-चोर और आलसी न हो तथा स्त्रियां भी पुरुषोंकी तरह घरोंके बाहर श्रमिकोंकी तरह काम करें। रूसमें सड़कें साफ करना आदि गंदे समझे जानेवाले काम स्त्रियोंको करने पड़ते हैं और अमेरिकामें एक ओर जहां स्त्री-पूजाकी अति होती है वहां रूसमें स्त्री-समानताके नामपर उन्हें पूरा श्रमिक बनानेके लिए भी अति की जाती है।

सोवियट सरकार समाजसेवा और सांस्कृतिक आवश्यक कामोंकी पूर्तिपर जो धन खर्च करती है वह हर नागरिकके मासिक वेतनके एक तिहाईके बराबर होता है।

इसका मतलब यह हुआ कि सरकार वहां चीजोंके दाम अधिक रखकर उसकी तुलनामें वेतन और पारिश्रमिक कम रखकर उसकी पूर्तिमें शिक्षा, चिकित्सा, वृद्धावस्थाका बीमा, पेंशन, स्वास्थ्यगृहोंमें छुट्टी विताने, समाचारपत्र, पुस्तक प्रकाशन, आमोद-प्रमोद तथा अन्य सांस्कृतिक उत्थानके साधन प्रस्तुत करती है। उत्पादनोंके साधनोंपर सरकारका अधिकार रहता ही है। पारिश्रमिक और वेतन तथा कृषि उत्पादनपर कृषि-उत्पादनका लिया जानेवाला भाग और कृषि-उत्पादनका मूल्य निश्चित करना सरकारके हाथमें रहता है। सामाजिक और सांस्कृतिक नियन्त्रण कर सरकार हर एक नागरिकका जीवनक्रम स्वयं भी नियन्त्रित करती हैं। इसके उल्टे अमेरिकामें सामाजिक-सांस्कृतिक सेवाएं रहनेपर भी अर्थनीति स्वतन्त्र और मुक्त रखकर व्यक्तिको अपने संघटन और अपने श्रम तथा शिल्प ज्ञानके आधारपर खुले बाजारमें प्रतियोगिता करनेके लिए मुक्त छोड़ दिया जाता है।

प्रथम पंचवर्षीय योजनामें रूस सरकारने सामाजिक और सांस्कृतिक सेवाओंपर २० अरब २० करोड़ रूबल खर्च किये थे। पांचवीं पंचवर्षीय योजनामें यह खर्च बढ़कर ६८९ अरब ९० करोड़ रूबल हो गया यानी पहली चारों पंचवर्षीय योजनाओंमें मिलाकर जितना खर्च हुआ उससे अधिक केवल १ पांचवीं पंचवर्षीय योजनामें हुआ। सन् १९५७में राज्यके बजटका ३० प्रतिशत यानी १८८ अरब २० करोड़ रूबल सामाजिक और सांस्कृतिक सेवाओंपर रखा गया था। इसमेंसे शिक्षापर ७८ अरब ९० करोड़, जन-स्वास्थ्य और शारीरिक उत्थानपर ३७ अरब ९० करोड़, बीमेपर ६६ अरब ३० करोड़ तथा अधिक बच्चोंवाली और अविवाहित माताओंपर ५ अरब १० करोड़ रूबल खर्च हुआ था।

१९६० में इन सेवाओंकी बदौलत हर नागरिकपर १९५५ से २८० रूबल अधिक खर्च होगा।

मकान

नागरिकोंको स्वच्छ और हवादार मकान देनेकी जिम्मेदारी सरकारकी होनेके कारण पिछले १० वर्षोंमें २९८ अरब वर्गफुट वासस्थानके नये मकान बनवाकर प्रस्तुत किये गये जिनमें ४५ लाख मकान देहातोंमें बनाये गये। नये मकान इतनी तेजीसे बनते हैं कि शहरों में कोई २ हजार परिवार और देहातोंमें १००० सामुदायिक कृषक परिवार प्रति दिन नये घरोंमें जाते हैं। मकानोंका किराया अधिक नहीं लगता। अधिकसे अधिक प्रति वर्गफुट १३ कोपेक किराया लगता है। रसोईघर, आने-जानेके बीचके रास्ते और स्नानगृहका किराया नहीं लगता। ४ से ६ व्यक्तियोंके परिवारको किरायेमें ५ से १५ प्रतिशततक कमी की जाती है। छठी पंचवर्षीय योजनामें ८४ वर्गफुटके २ फ्लैट प्रति मिनट किरायेदारोंके लिए तैयार मिलनेकी व्यवस्था थी (यह योजना रद्द कर अब १९५९-१९६१ के लिए एक नयी सप्तवर्षीय योजना बनायी गयी है।)

जनस्वास्थ्य

सोवियट सरकार जनस्वास्थ्यकी पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है। डाक्टरों और अस्पतालोंकी संख्या पहलेसे बहुत अधिक बढ़ गयी है। गर्भवती स्त्री-श्रमिकोंको ११२ दिनकी प्रसूतावस्थाकी सवेतन छुट्टी मिलती है। माताएं अपने बच्चोंको बालगृहोंमें (क्रीचोंमें) छोड़कर कामपर जाती हैं और शामको लौटते समय उन्हें वापस ले जाती हैं। बच्चा तीन सालका होनेपर माता-पिता उसे किंडर गार्टनमें रख सकते हैं। वहांके खर्चेका ५० प्रतिशततक देना पड़ता है। ९ सालसे १६ सालकी उम्रतकके बच्चोंको यंग पायनियरकी शिक्षा दी जाती है। इसके बाद कामसो-मोलोंमें उनकी भरती होती है। बालकोंके रक्तके १-१ बूंदमें कम्युनिज्मकी शिक्षा भरनेका कार्य यहींपर होता है। रूसमें अब यह परिवर्तन हो गया है कि पीटर, अलेक्जेण्डर और इवान जैसे जार बादशाहोंको अत्याचारी, साम्राज्यवादी, खूंखार बादशाह कहनेके बजाय अब उनके सद्‌गुण खोज-खोजकर उनका बखान किया जाता है।

साक्षरता

रूसमें अब शत-प्रतिशत साक्षरता है। १७ वर्षतक उच्च माध्यमिक शिक्षा सब बालक-बालिकाओंको अनिवार्य रूपसे निःशुल्क दी जाती है। १७ सालकी उम्रमें छात्रके शैक्षणिक झुकावकी बहुत कड़ी परीक्षा ली जाती है। इसी समय उसका भविष्य निश्चित हो जाता है। १० साल शिक्षा पूरी किये हुए छात्र-छात्राओंकी हर अगस्तमें गणित, रूसी साहित्य, इतिहास, सोवियट संघटन, केमिस्ट्री, फिजिक्स और १ किसी विदेशी भाषाकी बड़ी कड़ी परीक्षा ली जाती है। इस कड़ी परीक्षामें जो केवल प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण होते हैं उन्हींको आगे पढ़नेका अवसर मिलता है, बाकी सब श्रमिकोंकी लम्बी फौजमें भर्ती हो जाते हैं। श्रमिकोंकी कमी पड़नेके कारण अब माध्यमिक शिक्षाकी अवधि दो साल और कम की जा रही है।

रूसमें शतप्रतिशत साक्षरताके साथ नये-नये विषयोंकी पुस्तकें लाखों-करोड़ोंकी संख्यामें प्रकाशित की जाती हैं। १९५५में १२२भाषाओंमें ५४७०० नयी किताबोंकी ११५०००००० प्रतियां छपी थीं।

रूसमें लाइब्रेरियोंकी संख्या भी बड़ी तेजीसे बढ़ायी जा रही है। सन् १९५६में रूस-भरमें ३९२००० लाइब्रेरियां थीं, जिनमें कुल मिलाकर १ अरब ३० करोड़ पुस्तकें संग्रहीत थीं। मास्कोकी लेनिन स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी दुनियाकी सबसे बड़ी लाइब्रेरियोंमें एक समझी जाती है। यहां १६० भाषाओंकी एक करोड़ नब्बे लाख पुस्तकें हैं। कोई ५ हजार पाठक प्रतिदिन इसमें पुस्तकें पढ़नेके लिए जाते हैं।

——:०:——

(८)

राजधानी मास्को

मास्को विशाल सोवियट संघकी राजधानी है। उस संघके सोलह घटक राज्योंमेंसे सबसे बड़े रूसी गणतन्त्रका यह प्रधान शहर है और मास्को प्रदेशका केन्द्रीय नगर है। यह ओका और वोल्गा नदियोंके बीचके बड़े रूसी मैदानके बीचोंबीच स्थित है और मास्को नदी तथा उसकी शाखाएं इस नगरके बीचसे सर्पाकार टेढ़ी-मेढ़ी २४ मीलकी लम्बाईमें बहती हैं। यह मास्को नगरको पूर्व-पश्चिम दो छोटे-बड़े हिस्सोंमें काटती है। ऊपरके उत्तरके बायें किनारेके ऊंचे भागपर शहरका बड़ा हिस्सा और क्रेमलिन स्थित है। मास्को पहाड़ी प्रदेशपर बसा है और उसका दक्षिण-पश्चिम हिस्सा समुद्रकी सतहसे साढ़े छः सौ फुटकी ऊंचाईपर लेनिन हिल्सके नामसे प्रसिद्ध है। यहांपर सभी बड़े आदमियोंके वासस्थान हैं और मास्कोके नये ढंगके रईसोंका यह मुहल्ला कहाता है। जाड़ेमें जनवरीमें औसत शीत-ताप-मान शून्यसे ११ डिग्री नीचे रहता है और कभी-कभी शीतमान तो ० से ४० डिग्री सेंटीग्रेड नीचे चला जाता है। सबसे गर्म जुलाई महीना रहता है तब भी औसत तापमान केवल २० डिग्री सेंटीग्रेड रहता है। कभी-कभी ३७ डिग्रीतक पहुंचता है। हम जब अगस्तके तीसरे सप्ताहमें वहां गये तो तापमान २१ डिग्री सेंटीग्रेड था।

राजधानीका क्षेत्रफल लगभग डेढ़ सौ वर्गमील होगा और आबादी करीब ५० लाख होगी जिसमें उपनगरोंकी जनसंख्या शामिल नहीं है। नगरकी व्यवस्था बालिग मताधिकारके आधारपर दो सालके लिए निर्वाचित मास्को सोवियट श्रमिक सिटी प्रतिनिधि सभाके जिम्मे रहती है जिसके इस समय ८५३ प्रतिनिधि हैं। उसके अन्तर्गत मास्कोके पच्चीस वार्डों या विभागोंकी व्यवस्थाके लिए पच्चीस विभागीय प्रतिनिधि सभाएं हैं। १८५७के मास्कोके बजटमें आय ६,७५,५०,५६,०००रूबल और खर्च ६,०५,४९,४९,००० रूबल था।

मास्को न केवल सोवियट संघकी राजधानी है, बल्कि यह सारे देशका औद्योगिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक केन्द्र भी है। सोवियट संघकी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समिति का कार्यालय भी यहीं है। रूसी संसद सुप्रीम सोवियटकी बैठकें भी यहीं होती हैं। १९४७ में शहरका ८००वां वार्षिकोत्सव मनाया गया। जार बादशाहोंके खिलाफ दूसरा जो सशस्त्र विद्रोह १९०५-७ में हुआ उसका प्रारम्भ मास्कोमें ही हुआ था। १९१७ में जो तीसरी रूसी क्रांति सफल हुई उसमें क्रांति शुरू होनेके १० दिन बाद १६ नवम्बर सन् १९१७ को मास्को नगर कम्युनिस्टोंके अधिकारमें आया। मार्च १९१८ में लेनिनके नेतृत्वमें सफल सोवियट सरकारने पेट्रोग्राड (बादमें लेनिनग्राड) से यहां आकर इसे ही

फिर अपनी राजधानी बनाया। प्राचीन क्रेमलिन (किले) पर दुनियाकी पहली समाजवादी सरकारका लाल झण्डा फहराने लगा।

वस्तुत: रूसी झंडेका लाल रंग कोई क्रांतिसूचक नहीं है। रूसी जनता प्राचीनकालसे ह लाल रंगको बहुतसुन्दर रंग मानती आयी है और रक्तपूर्ण क्रांतिके कारण उस लाल रंगमें एक और नया अर्थ समा गया है। यही लाल झंडेकी विशेषता है। ३० दिसम्बर १९२२ को मास्कोमें ही सर्व-संघ सोवियट कांग्रेसने यू० एस० एस० आर० की स्थापनाकी विधिवत् घोषणा की और मास्कोको संघकी राजधानी घोषित किया। दिसम्बर १९४१ में हिटलरकी सेना मास्कोके पश्चिममें पड़ाव डाले थी, पर यहींपर उसे अपनी पहली हार खानी पड़ी और पीछे हटना पड़ा। मास्कोमें अपना मकान बनानेके लिए हिटलर मकान बनानेका सारा सामान भी लादकर जर्मनीसे मास्कोको लाते जा रहे थे, पर वह मकान बनानेके बजाय वहींकी धूल उन्हें चाटनी पड़ी और आगे जाकर उसी धूलमें उनकी कब्र बरलिनमें बनी।

हम जब मास्कोसे वापस भारत आनेको थे तब वहांसे नयी हवाई सर्विससे गये दिल्लीके अखबारोंसे मालूम हुआ कि दिल्लीमें पानीकल फेल हो गया और भारतकी राजधानी बेपानी हो गयी है। जहां पेय पानी (वाटर) और त्याज्य मल (सीवेज) का इन्तजाम एक हीसम्मिलित बोर्ड कमेटी देखती हो वहां और क्या हो सकता है? पर वहां यह जलकलका समाचार पढ़कर मास्कोके पानीकलके इन्तजामके बारेमें मैंने विशेषदिलचस्पीसे पूछताछ की।
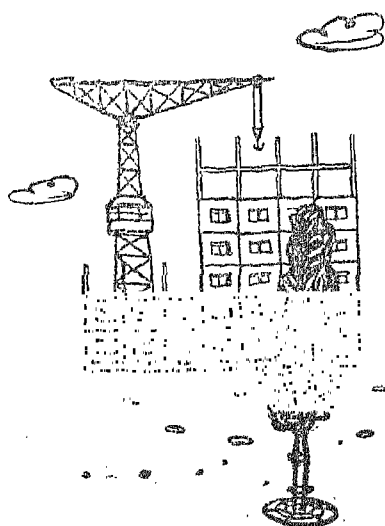
पहले मास्कोमें पासकी एक पहाड़ीकी धारासे और मास्को नदीमेंसे ही, पर शहरसे ३१ मील दूरके एक स्थानसे, जहां नदीमें बहुत अधिक पानी रहता है, नहरोंसे पेय पान लाया जाता था, पर वह पूरा न पड़नेके कारण वोल्गा और मास्को नदीको जोड़नेवाली एक नहर बनायी गयी और वोल्गाका पानी मास्कोवासियोंको पिलाया जाने लगा। ५ पंपघरोंसे पानी ऊपर चढ़ाया जाता है। मास्कोके लिए पानी लानेवाली पक्की नहरोंकी कुल लम्बाई १२४० मील है।

बढ़ते शहरकी मकानोंकी समस्या पुराने छोटे-छोटे मकान गिराकर उनपर नये बड़े-बड़े मकान बनाकर हल की जा रही है। नये-नये आसपासके क्षेत्रोंमें बड़े-बड़े मकानोंकी नयी-नयी बस्तियां बसाकर शहर बढ़ाया जा रहा है। वस्तुतः मास्कोमें आजकल घूमनेवालेको जो सबसे अधिक नजरमें भरनेवाली चीज है वह नगरभरमें फैले हुए हजारों ऊंचे-ऊंचे क्रेन हैं जिनकी सहायतासे लगातार मकान बनाये जा रहे हैं।

पुराना मास्को शहर क्रेमलिन किलेके इर्द-गिर्द मकड़ीके जाले जैसी गोलाकार सड़कों और इन गोल सड़कोंको काटनेवाली सीधी-सीधी और क्रेमलिनके पास आकर मिलनेवाली सड़कोंसे बना था। वही सड़कोंका चित्र आज भी कायम रखा गया है पर सड़कें खूब चौड़ी-चौड़ी और चौक खूब विस्तृत तथा मकान खूब हवादार बनाये जा रहे हैं। मास्कोमें जितनी चौड़ी सड़कें हैं उतनी चौड़ी सड़कें, कहते हैं कि यूरोपकी किसी भी राजधानीमें नहीं हैं।

पेय पानीकी तरह जलानेवाली गैस भी ८-८ सौ मील दूरीसे कोयलेके विभिन्न ४ स्थान क्षेत्रोंसे ४ पाइप लाइनों द्वारा मास्कोमें लायी गयी है। जमीनके अन्दर बिजलीके तार, पानीके पाइप, गैसके पाइप, मकान गरम रखनेके लिए खौलता पानी देनेके पाइप और टेलीफोनके तारकी सैकड़ों मील लम्बी लाइनें बिछायी गयी हैं।

१९३५में मास्कोके नवनिर्माणकी योजना बनी तबसे १९४६तक ११ सालमें इस काममें १३ अरब रूबल खर्च हुए।

द्वितीय महायुद्धकी समाप्तिके तुरन्त बाद मास्कोके नगर-निर्माताओंको अमेरिकाकी एम्पायर स्टेट बिल्डिंगकी तरह ऊंची-ऊंची इमारतें बनानेका शौक चर्राया। क्रेमलिनकी इर्द-गिर्द २८-३२ मञ्जिलकी ७ इमारतें बनायी गयीं, पर इसके बाद यह शौक व्यर्थ का समझकर छोड़ दिया गया। इसीमें शहरके सबसे ऊंचे भाग लेनिन पहाड़ी (हिल्स) पर बनी मास्को विश्वविद्यालयकी इमारत भी है और अर्वाचीन मास्कोकी यह सबसे भव्य वास्तु लगती है। अब मास्कोमें ८-१० मंजिलसे अधिक ऊंची इमारतें नहीं बनायी जा रही हैं। इन इमारतोंमें २-२ या ३-३ कमरोंके परिवारोंके रहनेके फ्लैट बने हैं।

मास्कोके पुनर्निर्माणमें रहनेके सैकड़ों मकान बनाने और सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओंकी इमारतें बनानेको प्राथमिकता दी गयी है। १९५६ में दो करोड़ चालीस लाख वर्गमीटर या दो करोड़ पचीस लाख वर्गगज वासस्थानवाली इमारतें बनायी गयीं। मास्को में मकान बनानेकी छठी पंचवर्षीय योजनामें १९५६ से १९६० तक एक करोड़ तेरह लाख वर्गगज वासस्थानकी इमारतें बनानेका आयोजन हुआ है। इन इमारतोंसे नये-नये मुहल्ले ही बस रहे हैं। इमारतें बनानेका सारा सामान पहले कारखानोंमें तैयार किया जाता है और वह सामान इमारत बनानेकी जगहपर लाकर क्रेनोंकी सहायतासे ८-८

या १०-१० मंजिलकी इमारतें ८-१० महीनेमें खड़ी की जाती हैं। रहनेके मकानोंके साथ स्कूल, किंडरगार्टन, सिनेमा, अस्पताल, सार्वजनिक स्नानगृह, लांड्री, दूकानें और होटलोंकी इमारतें भी बनती हैं।

मास्कोके दक्षिण-पश्चिम ऐसे ही बननेवाले एक नये मुहल्लेको हम देखने गये थे। इसका क्षेत्रफल १२.५ हेकटाएकड़ है और मुहल्लेके निर्माणमें कुल ६ करोड़ रूबल लगेगा। २००० परिवार या ४ हजार लोगोंके रहनेके लिए १६ मकानोंमें २००० फ्लैट बनाये जा रहे हैं। इनके साथ ही इस बस्तीमें ८ सौ बच्चोंके पढ़ने लायक स्कूल, एक किण्डरगार्टेन, तीन भोजनघर, एक डिपार्टमेंटल स्टोर, ८५० दर्शक बैठने लायक एक सिनेरामा, टेली-फोनघर, कई मोटर गराज और लाइब्रेरी तथा मुहल्लेके इमारतोंकी व्यवस्था करनेवाली संस्थाकी इमारत उसमें रहेगी। रहनेका किराया १ रूबल ४२ कोपेक फी वर्ग मीटर रहनेकी जगह पड़ता है। ५ सौ रूबलसे कम वेतनवालोंको किराया ८० कोपेक फी वर्गमीटर देना पड़ता है। तीन कमरेवाले फ्लैटका मासिक भाड़ा ८० रूबल पड़ता है। इन कमरोंमें एक स्नानघर, गैस-बिजलीके चूल्हे, रेफ्रिजरेटर आदिसे सज्जित एक रसोईघर और एक कमरा बैठने-सोनेका रहता है। (१ रूबल = १०० कोपेक)

सार्वजनिक यातायात

मास्कोकी ५० लाख जनताके आवागमनके लिए भूमिगत (मेट्रो रेल) रेलगाड़ी, बिजलीसे चलनेवाली ट्राली बसें, तेलसे चलनेवाली बसें, टैक्सियां, ट्राम, कारें और मास्को नदीपर तथा नहरोंमें मोटर लंच सर्विसें चलती हैं। मेट्रोका किराया बहुत कम है, ८ कोपेक फी किलोमीटर लगता है। बसमें १७ कोपेक, ट्राली बसमें १५ और ट्रामकारमें ९ कोपेक लगता है। प्रति वर्ष १ अरब व्यक्तियोंको ट्राम कारें इधरसे उधर ले जाती हैं। पर अब ट्राली बस अधिक लोकप्रिय हो रही है। आवागमनके इन सब साधनोंसे १९५५में तीन अरब सत्तर करोड़ पचास लाख व्यक्तियोंने यात्रा की। इसके अलावा प्राइवेट और विभिन्न दफ्तरोंकी मोटर कारें चलती हैं, वह अलग।

मास्कोमें ९ रेलवे स्टेशन हैं और देशभरसे दस रेलवे लाइनें वहां आकर मिलती हैं। भूमिगत रेलवे और मास्कोको चक्कर लगानेवाली भूमिपर चलनेवाली रेलें भी हैं। जहांसे ट्रेन आती है वही नाम रेलवे स्टेशनोंके रखे गये हैं। इस प्रकार मास्कोमें, लेनिनग्राड, यारोस्लाव, कज़ान, कुर्स्क, पावेलेक्स, कियेव, बाइलोरशिया, साव्योलोवो, रीगा ये स्टेशनोंके नाम हैं। रेलवेके अलावा मास्कोसे दूर-दूरके स्थानोंको बसें भी जाती हैं। मास्को-वोल्गा नहर और वोल्गा-डान नहरोंके बननेसे मास्कोका सम्बन्ध रूसके इर्द-गिर्दके पांचों—श्वेत, बाल्टिक, कैस्पियन, एजोव और कालासागरसे हो गया है। मास्कोको इसलिए लोग पांच सागरोंका बन्दरगाह कहने लगे हैं।

संसारका सबसे बड़ा विश्वविद्यालय

सोवियट विज्ञान और संस्कृतिका केन्द्र भी मास्को हो गया है। अकादमी आफ
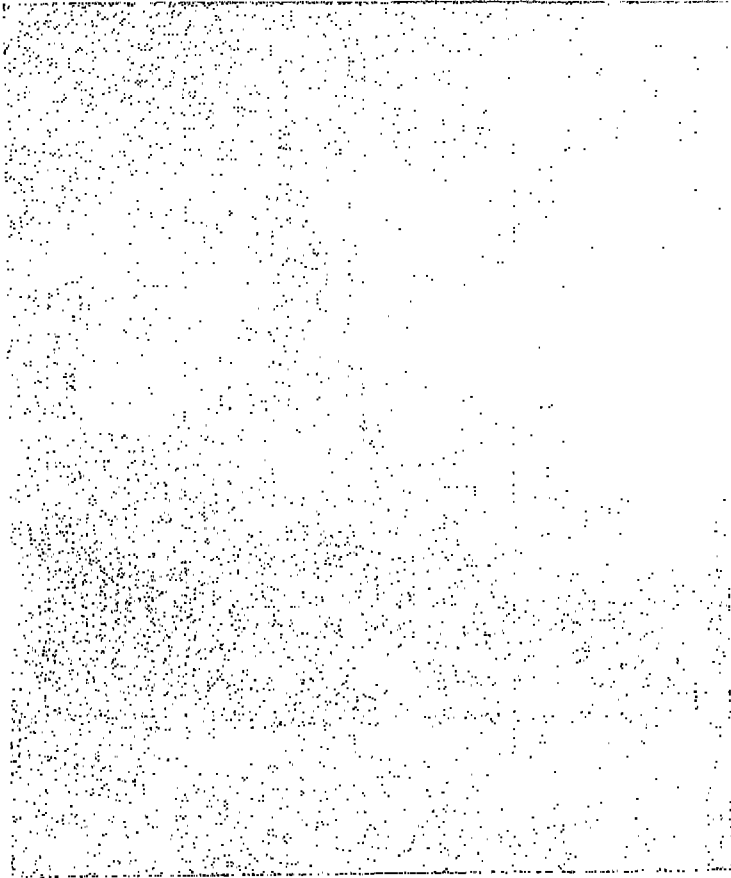
मास्को विश्वविद्यालयकी इमारत

साइन्स, कृषि और चिकित्सा विज्ञान अकादमी, वास्तुकला अकादमी, कला अकादमी, दण्ड विधान अकादमी और सार्वजनिक सेवा (युटिलिटीज) अकादमीके केन्द्रीय कार्यालय

यहीं है। राजधानीमें ४४८ खोज संस्थाएं और ७० कालेज हैं जिनमें १८००० प्रोफेसर और ढेड़ स्त्री-पुरुष शिक्षक काम करते हैं। सर्वोपरि मास्को विश्वविद्यालय है। इसकी इमारत तो मास्कोमें सबसे अधिक ऊंचाईपर सबसे ऊंची बनी है ही, पर इसमें २३ हजार छात्र शिक्षा पाते हैं जिसके कारण छात्रोंकी संख्याकी दृष्टिसे भी यह संसारमें एकमेवाद्वितीयम् हो गया है। ६००० छात्र रहते भी उसी इमारतमें हैं। अमेरिकाके सबसे बड़े कोलंबिया विश्वविद्यालयमें भी केवल २० हजार छात्र पढ़ते हैं।

मास्को ड्रामा, आपेरा और बैलेके लिए भी प्रसिद्ध है। आर्ट थियेटर, बोलशोई थियेटर और माली थियेटर विश्वविख्यात हैं। हम जब गये तब बोलशोई थियेटर बन्द था इसलिए हम उसे देख न सके। इनके अलावा ८-९ और बहुत प्रसिद्ध थियेटर तथा बखरुशिन थियेट्रिकल म्यूजियम भी विख्यात हैं। इस म्यूजियममें स्टेजके कलाकारोंके २०००० फोटोग्राफ और नेगेटिव तथा २०००० तैल, मसी और मूर्ति चित्र हैं। स्टेजोंकी सेटिंग्स और वस्त्राभरणोंके ३०००० स्केच भी यहां हैं। वाचालय और संगीतालय भी बहुतसे हैं। ४७ म्यूजियम, ९४१ सार्वजनिक वाचनालय तथा बहुतसे संस्कृतिभवन, फैक्टरी क्लब, सैनिक क्लब भी राजधानीमें हैं। चलचित्र स्टूडियो, रेडियो और टेलीविजन स्टेशन, दर्जनों समाचारपत्र और कितने ही प्रकाशनगृह मास्कोमें हैं। पुस्तकालयोंमें लेनिन पुस्तकालय दुनियाके सबसे बड़े पुस्तकालयोंमें गिना जाता है।

जनताके आमोद-प्रमोदके पार्कों और बगीचोंकी कमी नहीं है। जलक्रीड़ाके भी कई स्थान हैं। १० आमोद-प्रमोद पार्कों और १७ बालक पार्कोंपर हर साल १ करोड़ रूबल खर्च किया जाता है। इनमें सबमें बड़ा गोर्की रिक्रियेशन पार्क है। सोकोलिनकी पार्क भी प्रसिद्ध है जहां सभाएं होती हैं। यह १४८० एकड़ क्षेत्रपर फैला है। पहले क्रांतिकारियोंका यह अड्डा रहा है।

———:o:———

रूसी सरकस

सोवियत संघमें सरकसको जनताकी सांस्कृतिक उन्नतिका एक प्रमुख साधन माना जाता है। १९२९ में जहां देशभरमें १४ सरकस थे वहां १९३९ में उनकी संख्या ७० हो गयी। द्वितीय महायुद्ध कालमें यह संख्या घटने लगी, पर युद्धके बाद फिर बढ़कर
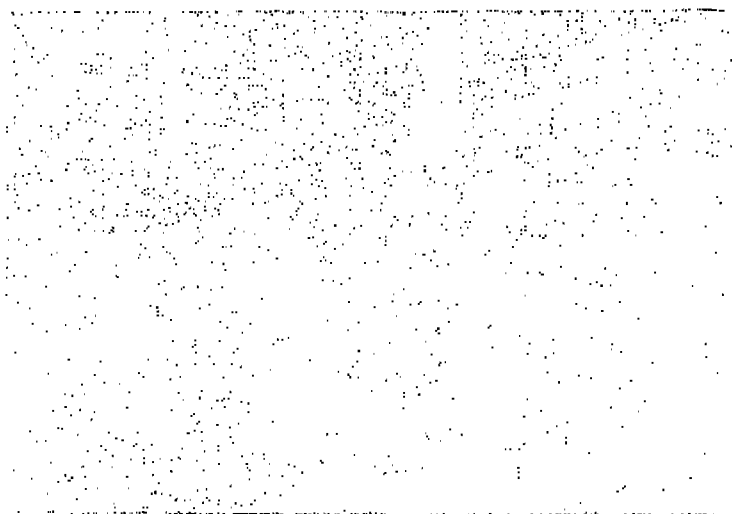
इरिना बुग्रिमोवा—सिंहोंको ट्रेण्ड करनेवाली पहली रूसी महिला। पिछले २० साल में इन्होंने ३० सिंहोंको पालतू बनाकर सरकसके खेल सिखाये हैं। यह एक साथ ११ सिंहों को मैदानमें उतारकर खेल दिखाती हैं।

१९५६ में उनकी संख्या ६९ हो गयी। इनमें ४९ सरकस अपने स्थानपर कायम रहने-वाले स्थिर थे और २० देशभरमें एक स्थानसे दूसरे स्थानपर घूमनेवाले थे। स्थिर सरकसोंने १९५५ में ८८२६ खेल दिखाये जिनको १,२०,७०००० दर्शकोंने देखा। घूमनेवाले सरकसोंने १९५५ में ६३००४ खेल दिखाये जिनको १,६९,२१००० दर्शकोंने देखा। रूसी सरकसमें थियेटरके दृश्य, संगीत तथा अन्य कलापूर्ण साधनोंका उपयोग कर खेल बहुत जोशीला और आकर्षक बनाया जाता है ताकि साहस, हिम्मत और शरीरकी

मार्गारिटा नजारोवा—शेरोंको प्यार करनेवाली नवयुवती। इसके प्रेमपूर्ण शब्दोंको मानकर एक शेर पानीमें तैरकर अपना कारनामा दिखाता है।
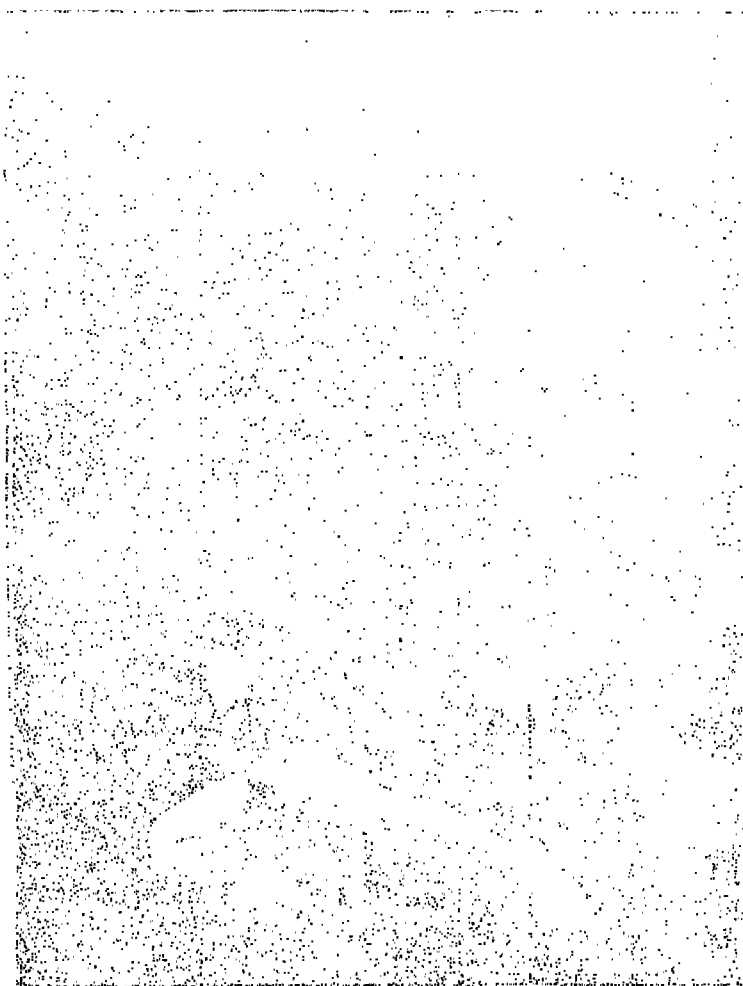
पलिना चेरनेगा--यह नवयुवती अपने साथी स्टेपन राजुमोवके साथ ट्रेपीजपर संतुलनके ऐसे करतब दिखाती है कि मालूम होता है कि हवामें मूर्तियां ही उड़ रही हैं।

ताकतकी सहिष्णुताका जोरदार प्रदर्शन हो। रूसी सरकस यूरोप और एशियाके देशोंमें दौरेकर बहुत सम्मान कमा चुके हैं।

अन्य सब रूसी उद्योगों, कृषि, शिक्षा, कला और सांस्कृतिक साधनोंपर जिस प्रकार रूसी सरकारका पूरा नियन्त्रण है उसी प्रकार रूसी सरकसोंपर भी रूसी सरकारका पूरा नियन्त्रण है। 'अमलगमेशन आफ स्टेट सरकसेस' नामक सरकारी संस्था सभी सरकसोंका नियन्त्रण करती है। यही खिलाड़ियोंका चुनाव और देशभरमें सरकसोंके दौरोंका कार्यक्रम निश्चित करती है। यही नये-नये खेल तैयार कराती है, मैनेजर, पेण्टर, लेखक आदि तैयार कर देती है और सरकसोंका रिहर्सल कराती है।

करण्डाश—जोकर करण्डाशकी चुटीली व्यंग्योक्तियां रूसभरमें प्रसिद्ध हैं।

मास्कोमें स्टूडियो आफ सरकस आर्टमें सरकसके नये-नये खेल तैयार किये जाते हैं और उनके रिहर्सल होते हैं। स्टेट सरकस स्कूलसे हर साल नये-नये खिलाड़ी तैयार होकर सरकसोंमें नौकरी करते हैं। करान डी आश, ओलेग पोपोव, रस्सेपर नाचनेवाली नीना लोगाचेवा, सन्तुलनके खेल दिखानेवाले नीमोन कोखेवनिकोव आदि कलाकार और कलाकारिनियां विश्व-विख्यात हो चुकी हैं। स्टेट सरकस स्कूल पिछले २० वर्षोंमें प्रथम श्रेणीके १ हजारसे अधिक खिलाड़ी तैयार कर चुका है।

रूसी सरकसोंके छुट्टीके दिन खुले स्टेडियमों, चौकों, पार्कों और कार्निवलोंमें खेल होते हैं। कारखानों, सामुदायिक कृषिके खेतों आदिमें भी खेल दिखाये जाते हैं।

रूसमें सरकसके खेल बहुत लोकप्रिय हैं और सर्कसके खिलाड़ी जनताके आदरके पात्र होते हैं।

———:०:———

(१०)

वापसी यात्राका संक्षिप्त विवरण
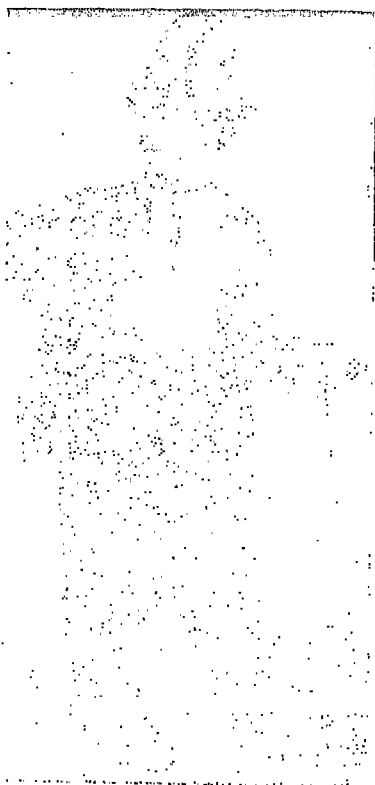
मास्कोमें पहले चार दिन तो हम पत्रकार और संसद-सदस्य एक साथ ही सब कार्यक्रमोंमें जाते थे, दो दिन लेनिनग्राडमें भी हम लोग साथ ही थे, पर अन्तिम दो दिन मास्कोमें हमने अपने दलोंको दो भागोंमें विभाजित कर लिया। संसद-सदस्य रूसी संसदसम्बन्धी संस्थाएँ देखने गये और हम लोग 'तास समाचार समिति', 'प्रावदा' अखबारका दफ्तर और पत्रकार संघके कार्यक्रमोंमें गये। १५ अगस्तको मास्कोमें शामको हम लोग ऐतिहासिक और पुरातन शिल्प सम्बन्धी स्मारक देखते रहे तथा मास्कोके दक्षिण-पश्चिम बड़ी तेजीसे बननेवाले बड़े-बड़े रहनेके मकानोंके निर्माणका काम देखने गये। १६ अगस्तको सवेरे क्रेमलिन देखा, पुराने ऐतिहासिक गिरजाघर देखे, प्राचीन जारकालीन शस्त्रास्त्र भण्डार देखा और लेनिन तथा स्टालिनके मजार(मोसोलियम)में मसालेसे भरे उनके शवोंके दर्शन किये।
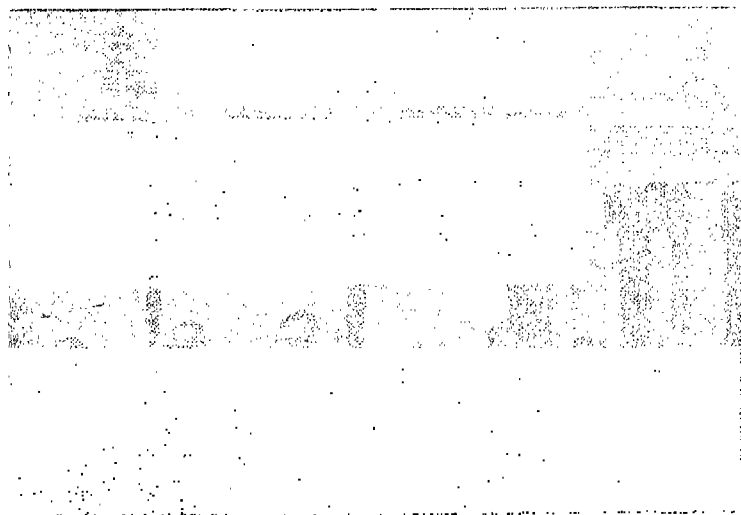
प्रदर्शनीके द्वारपर भारतीय टोली

शामको छसे आठतक भारतीय दूतावासमें दिल्ली-मास्को सीधी हवाई सर्विस शुरू

होनेकी प्रसन्नतामें एक स्वागत समारोहका आयोजन था, जिसमें सम्मिलित होनेके लिए हम लोग गये थे। १७ अगस्तको सवेरे सोवियत संघकी कृषि सम्बन्धी पिछले ४० सालकी प्रगति दिखानेवाली विशाल प्रदर्शनी देखते रहे और उसके बाद इसी प्रकारकी औद्योगिक प्रगति दिखानेवाली विशाल प्रदर्शनी देखी। दोनों प्रदर्शनियाँ इतनी बड़ी थीं कि पाँच-छ घण्टे दोनों प्रदर्शनियोंको देखनेमें लगे। मैं और तुषार बाबू—दोनों बहुत थक गये थे इसलिए हम दोनों कुछ पहले ही वहाँसे खिसककर टैक्सीमें होटल पेकिंग वापस आये।

१६ अगस्तको रातको हम लोग रूसी सरकस देखने गये थे। सरकसमें अधिकतर काम अजीब-अजीब सन्तुलनके थे। सरकसमें मामूली कुर्सी और बेंच, ये दो क्लास थे और बेंचपर बैठनेसे हमारे साथ गये बम्बईके कुछ लक्षाधिपतियोंको तकलीफ हुई और रूसकी सामाजिक समानताका कुछ चुभनेवाला अनुभव भी हुआ। बम्बईके ये साथी अपने साथ लहसुनकी चटनी और पापड़ ले गये थे जिनका आनन्द बीच-बीचमें खाना खानेके समय हमें भी मिल जाता था।

१८ अगस्तको हम लोग सवेरे मास्को युनिवर्सिटी देखने गये और शामको पानी बरसते रहनेपर भी मास्को नदीपर एक घण्टेतक मोटरलंचमें जलविहारका आनन्द लिया। रातको १२॥ बजेकी टूरिस्ट स्पेशल गाड़ीमें हम लोग लेनिनग्राड रवाना हुए और दूसरे दिन सवेरे आठ बजेको लगभग वहाँ पहुँचे। दो दिन लेनिनग्राडके दर्शनीय ऐतिहासिक, शिल्पपूर्ण स्मारक और वहाँका विशाल हर्मिटेज म्यूजियम देखने गये। १० अगस्तकी रातको एक विशाल थियेटरमें बेले—मूक नृत्याभिनय देखा। कहानी प्राचीन
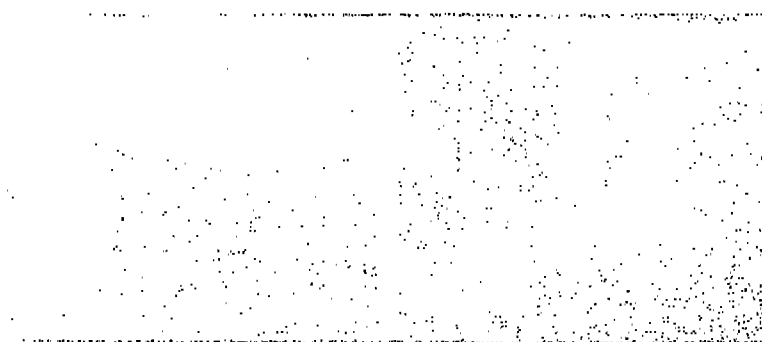
पीटरके राजमहल और फौवारोंका दृश्य

लिथुआनियन लड़ाई-भिड़ाईको प्रोत्साहन देनेवाली थी। उसमें मीर या शान्तिकी कोई बात जानबूझकर छुसेड़ी नहीं गयी थी।

दूसरे दिन यानी २० अगस्तको लेनिनग्राडसे १०-१५ मील दूर गल्फ आफ फिनलैण्ड-के समुद्रके किनारे बने पीटर महानके राजमहलों और तरह-तरहके चित्र-विचित्र एक सौ उन्तीस फौवारोंको देखने गये। उस बगीचेमें द्वितीय महायुद्धमें जर्मन सेनाका पड़ाव पड़ा था, पर रूसियोंने इनके पहुँचनेके पहले ही सुन्दर-सुन्दर मूर्तियोंको उखाड़कर जमीनके अन्दर गाड़ दिया था इसलिए उनमेंसे अधिकतर बच गयी हैं। इन महलों और फौवारोंके आगे ताजमहल भी फीका लगता है।

मास्को और लेनिनग्राड दोनों ही भव्य शहर हैं पर मास्कोका वातावरण कामकाजी तथा लेनिनग्राडका वातावरण बड़ा आनन्दपूर्ण और प्रसन्नतापूर्ण लगा। जबतक हवाई यातायात अधिक नहीं शुरू हुआ था तबतक यूरोपीय संस्कृतिके लिए रूसका प्रवेशद्वार जलमार्गसे लेनिनग्राड ही था। इसीलिए वह शहर बड़ा आनन्दपूर्ण लगता है। लेनिन-ग्राडमें हम इनटूरिस्टके होटल एस्टोरियामें ठहराये गये थे जहाँ रेस्तराँ नीचेकी पहली

पीटरके महलके बाहर डाक्टर रामसुभग सिंह और श्री रघुनाथ सिंह

मंजिलपर ही था (रूसमें ग्राउण्ड फ्लोअर नहीं होता) और खाना परोसनेवाली लड़कियाँ बड़ी सुन्दर थीं और वे हर एकको आग्रह कर करके भर पेटसे भी अधिक खाना खिलाती थीं। हमारे एक साथी दिल्लीकी एक एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट कम्पनीके प्रति-

लिये सरदार गुरपाल सिंह अपने साथ कई दर्जन फैन्सीगुल चूड़ियां ले गये थे और यदा-कदा बच्चों लड़कियोंको पहनाकर उन्हें प्रसन्न करते थे और खुद आप भी प्रसन्न होते थे। लाल रूसमें वे लाल साफा पहनते थे और दर्शकोंका ध्यान बरबस उनकी ओर आकृष्ट होता था। एक दिन मैंने उनसे कहा कि दूसरी बार जब आप रूस आयें तब सिन्दूर भी ले आइयेगा ताकि रूसी लड़कियोंकी 'मांग' भी चमकने लगे। इसपर उन्होंने चटसे कहा कि तो फिर अपने साथ एक पण्डित भी लाना पड़ेगा। इसपर सब साथियोंमें हंसीका फौवारा छूट पड़ा।

हमारे एक दूसरे साथी आगरेके उत्साहिक युवक पद्मचन्द जैन अपने साथ कई दर्जन संगमरमरके छोटे ताजमहल ले गये थे और लड़कियोंको उसे बांटते रहे। एक तीसरे साथी डागा महोदयने एस्टोरिया होटलकी परोसनेवाली एक नाटी और बहुत सुन्दर लड़कीकी सुन्दरता और खानेमें आग्रह करनेकी चतुरतापर मुग्ध होकर उसके गलेमें एक
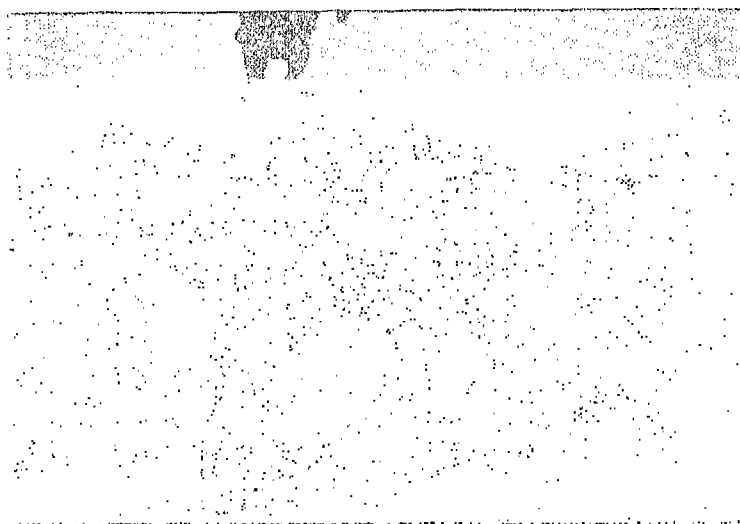
सरदार गुरपाल सिंह और ठाकुर रघुनाथ सिंह
लेनिनग्राडमें पीटर महानकी मूर्तिके सामने रूसी स्त्री-पुरुषोंके साथ

रंगीन बनारसी स्कार्फ खुद अपने हाथसे बांधा। इसपर इस लड़कीकी दूसरी साथिनको इतनी ईर्ष्या हुई कि उसने भरे हालमें सबके सामने पद्मचन्द जैनके पास जाकर उनके

डाहिले चालकाा इतनी तेजीसे चुम्बन किया कि वे हक्का-बक्का रह गये। हमारी टोलीमें इस मामलेमें सबसे भाग्यवान् वही एक अकेले निकले और उस दिन दिनभर वे हम लोगोंके मजाकका शिकार बने रहे। हमारे साथकी पारसी युवती श्रीमती भामजीने भी इस मजाकमें रस लिया।

रातको १२-२० पर 'रेड ऐरो' एक्सप्रेस ट्रेनसे हम लेनिनग्राडसे चलकर दूसरे दिन सुबह ७॥ बजे मास्को वापस आ गये।
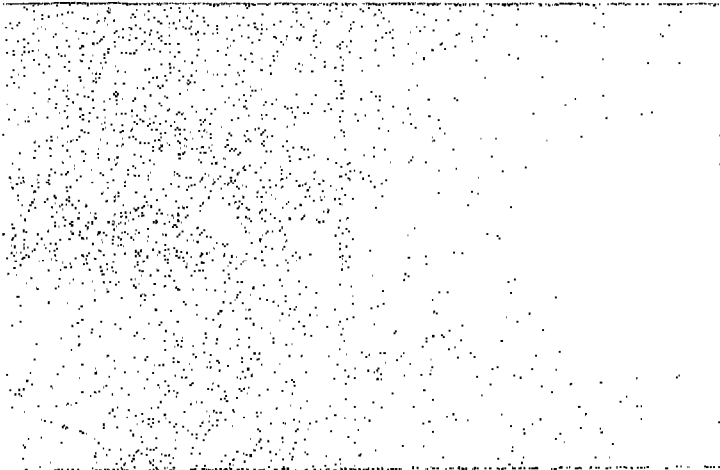
लेनिनग्राडके किरोव स्टेडियममें पत्रकार-दल

२१ अगस्तको सबेरे हमने मास्कोमें ४००० मजदूर काम करनेवाले एक मशीन टूल्के विशाल कारखानेको देखा। कुछ बड़े संग्रहालय देखे तथा तास, प्रावदा और मास्को प्रेस क्लबके कार्यक्रमोंमें भाग लिया। अन्तिम दिन २२ अगस्तको मैं मास्कोकी भूमिगत मेट्रो रेलगाड़ीपर बैठकर वहाँ रहनेवाले एक महाराष्ट्र परिवारके घर गया। ये पति-पत्नी मेरी तरह ही महाराष्ट्र होनेपर भी बम्बईमें हिंदीका कार्य करते रहे। श्रीयुत उमराणीकर बम्बई सरकारके, सूचना विभागके हिन्दी कक्षके अध्यक्ष थे और श्रीमती उमराणीकर किसी कालेजमें हिन्दीकी अध्यापिका थीं। दोनोंने हिन्दीमें स्नातकोत्तर डिग्रियाँ प्राप्त की हैं और अब भारत सरकारके भेजनेपर मास्कोके विदेशी भाषा-प्रकाशन-गृहमें हिन्दी अनुवादकोंका काम करते हैं। उनके लड़केको न हिन्दी आती है, न मराठी,

पर रूसकी पाठशालामें वह रूसी भाषा बहुत अच्छी तरह सीख गया है। लाहौर षड्यंत्र केसमें फाँसीकी सजा पाये क्रांतिकारी श्री राजगुरु जब काशीमें संस्कृत पढ़नेके लिए ब्रह्माघाटपर सांगलीकरके बाड़ेमें रहते थे तब इन्हीं श्री उमरानीकरके चाचा भी उनके साथ यहाँ रहे।

मास्कोमें भारतीय दूतावासके भारतीय कर्मचारियोंको मिलाकर कुल भारतीयोंकी संख्या करीब डेढ़ सौ हो गयी है जिनमेंसे बहुतसे मास्को रेडियोमें और विदेशी भाषा-प्रकाशन-गृहमें काम करते हैं। रूस-भारत-छात्र-आदान-प्रदान-कार्यक्रमके अन्तर्गत करीब एक दर्जन भारतीय छात्र और अध्यापक मास्को युनिवर्सिटीमें पढ़ते हैं। इनमेंसे एक काशी विश्वविद्यालयके डाक्टर नारलीकरकी पत्नीके भाई गणितमें डाक्टरेट लेने मास्को गये हैं। वे मेरे होटलमें मेरा नाम सुनकर मुझसे मिलने आये थे और अन्तिम दिन हवाई अड्डेके लिए रवाना होते समय होटलमें हमको विदा करते हुए उन्हें हमारे इस भाग्यपर कुछ रश्क हुआ कि हम १० ही दिनके अन्दर फिर अपने बाल-बच्चोंके साथ हो जायँगे और उन्हें अभी डेढ़ सालतक अपने आप्तजनोंसे दूर (अभी उनका विवाह नहीं हुआ है) विदेशवास करना पड़ेगा। मैंने उनको ढाढ़स दिया।

अन्तिम दिन मास्कोकी सड़कपर अचानक, पहले इलाहाबाद रेडियोमें काम करने-वाली, कुमारी हेमलता जनस्वामीसे मुलाकात हो गयी। उन्हें मास्कोका पानी बहुत भाया है, पर यदि मैं उनके मोटापेका और अपने दुर्बल होते जानेका जिक्र एक साथ करता तो शायद उनको कुछ झुंझलाहट होती। इसलिए मैंने अपना वह विचार मुँहके अन्दर ही दबा लिया।

आखिरी दिन शामको होटलसे पाँच बजे रवाना होनेतक हम डिपार्टमेंटल स्टोरों और सावेनियरोंकी दूकानोंमें जाकर अपने ५६० रूबल पूरे खर्च करनेमें मशगूल रहे। थोड़ेसे रूबल बचे तो हवाई अड्डेकी दूकानपर भी खरीदारी की।

हवाई अड्डे रवाना होनेके पहले मास्को रेडियोके हिन्दी विभागके एक रूसी सज्जनने हिन्दीमें मेरी रूस-यात्राके अनुभव टेपपर रिकार्ड कर लिये। वे रूसी और हिन्दी जानते थे, पर पुरानी आदतके कारण जब उन्हें श्वेत देखकर उनसे मैं अंग्रेजीमें बात करने लगता तो वे हर बार स्मरण दिलाते कि वह अंग्रेजी नहीं जानते।

भारतमें अंग्रेजी-प्रेमी चाहे जितने साल अंग्रेजीसे चिपके रहें, पर रूस-भारत और चीन-भारतमें ज्यों-ज्यों अधिकाधिक सम्बन्ध स्थापित होगा त्यों-त्यों अंग्रेजीको अपने-आप यहाँसे भागना पड़ेगा।

२२ अगस्तकी रातको हम एयर इण्डिया इण्टरनेशनलके सुपर कान्स्टेलेशन रानी आफ नीलगिरि विमानसे दिल्लीके लिए रवाना हुए और दूसरे दिन भारतीय समयके

अनुसार ढाई बजे दिल्ली पहुंचे। रास्तेमें डेढ़ घण्टे ब्रेकफास्टके लिए ताशकन्दके हवाई अड्डेपर रुके थे। इस बार विमानमें मेरा साथ भारत सरकारके प्रधान सूचना अफसर श्री चारीसे हो गया था। मास्कोसे हम वहांके समयके अनुसार साढ़े दस बजे या भारतीय समयके अनुसार रात १ बजे रवाना हुए थे। इस प्रकार इस बार भी मास्कोसे दिल्ली पहुंचनेको उड़नेका समय १२ घण्टे ही लगा। रास्तेमें ताशकंद पहुँचनेके पहले हमें विमानमेंसे सूर्योदयका बड़ा दिव्य दर्शन हुआ। हम बादलोंके ऊपरसे उड़ रहे थे। इसलिए क्षितिजके उस बिंदुपरसे, जहाँ सूर्योदय हुआ, सूर्यका लाल बिम्ब बादलोंको
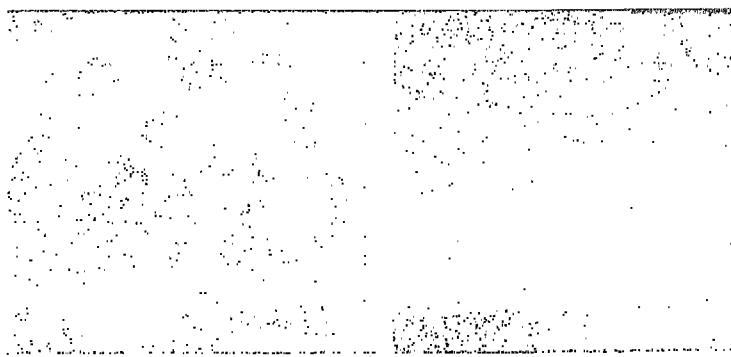
मास्कोमें रहनेवाले हिन्दी-सेवी महाराष्ट्र उमराणीकर परिवारके साथ

विमानमेंसे लिया गया सूर्योदयका चित्र

चीरता हुआ हम लोगोंको दिखाई दे रहा था और उसके और आगे जहाँ बादल समाप्त हुए मालूम होते थे, सूर्यकी सफेद किरणोंसे बादलोंका किनारा चमचमा रहा था। मुझसे न रहा गया और मैंने अपनी अटैचीमेंसे अपना पुराना बाक्स कैमेरा, जिसे मैंने १९४८में नौ दिनकी आसाम यात्राके पहले खरीदा था और जो सैकड़ों या दो-तीन हजार रुपयोंके कैमेरेसे अच्छी तस्वीरें लेता है, निकाला और इस दिव्य श्वेत सूर्य दर्शनके दो चित्र ले लिये। एक अंग्रेज पत्रकार भी अपना मुव्ही सिने कैमेरा निकालकर सूर्योदयके चित्र लेने लगा कि इतनेमें स्वागतिकाकी नजर हमारे ऊपर पड़ गयी और उसने धीरेसे विनयपूर्वक हमें याद दिलायी कि विमानके अन्दरसे तसवीरें लेनेकी मनाही है। हमने अपने कैमेरे फिर अटैचीमें रख दिये

रानी आफ नीलगिरि विमान घण्टे-डेढ़ घण्टे पालम हवाई अड्डेपर रुककर सीधे बम्बई रवाना हो गया। जो लोग बम्बईकी तरफके थे, वे उसी विमानसे आगे बढ़

गये। जो लोग मद्रास या कलकत्ताकी तरफके थे, उन्हें दूसरे दिन सबेरे विमान मिले। मुझे काशी आना था, इसलिए दूसरे दिन कलकत्ता जानेवाले 'डकोटा' विमानमें सफ़दरजंग हवाई अड्डेसे ठीक सवा आठ बजे रवाना हुआ। हवाई अड्डेपर चतुर्वेदीजी और श्री बोरपडे विदा करने आये थे। 'जी सुपर कान्स्टेलेशन'में यात्रा करनेके बाद 'डकोटा'में यात्रा करना वैसा ही लगा जैसा एयर कण्डीशनसे निकलकर पुराने तीसरे दर्जेके तथा ठसाठस भीड़भरे रेलके डब्बेमें बैठनेसे लगता है। फिर भी नीचे नदी-नाले भरे हुए थे। बीच-बीचमें बादलोंकी दीवार चीरकर विमान जाता था और कभी-कभी बादलोंके ऊपरसे जाते समय ऊँचे-नीचे मेघोंके कारण ऐसा लगता था कि यह भी कोई पर्वतीय प्रदेश है और बीच-बीचमें ऊँचे-ऊँचे पर्वतशिखर जमीनमेंसे ऊपर उभड़ आये हैं। विमानमें दिखाई देनेवाले इन सब लुभावने दृश्योंके कारण चार घण्टेकी दिल्ली-बाबतपुरकी यात्रा बड़ी जल्दी कट गयी। विमानमें इक्कीस आदमियोंके लिए बैठनेकी जगह होनेपर भी उस दिन हम केवल ५-६ यात्री थे इसलिए स्वागतिकाका सारा ध्यान भी हमारी सेवामें ही था। लखनऊ और इलाहाबादमें १५-१५ मिनट ठहरनेके बाद अब हम बमरौलीसे उड़कर दारागंजके गंगाजीके छोटे लाइनके पुलके ऊपरसे गुज़र रहे थे तो भरी गंगामें पुल एक लाल रेखाकी तरह सुहावना लगता था। आधे घण्टेमें ही बाबतपुर आ गया और हवाई यात्रामें लगनेवाले इतने थोड़े समयपर मैं मनमें आश्चर्य करने लगा। मैंने अपने काशी पहुँचनेकी कोई पूर्व-सूचना नहीं दी थी, इसलिए बाबतपुरमें मैं किसीके आनेकी अपेक्षा नहीं कर रहा था। फिर भी अन्दाज़से मनोहर और मेरे भतीजे अरुणको हवाई अड्डेपर आया देखकर मुझे हर्षमिश्रित आश्चर्य हुआ।

इस प्रकार आठ-दस दिनके लिए दिल्ली गया हुआ मैं फिर दुबारा 'फारेन रिटर्न्ड' होकर और नये रहस्योंसे अवगुण्ठित सोवियत संघकी पहली बार यात्रा कर २६ दिनके बाद काशी वापस आ गया।

———:०:———

(११)

रूसकी पत्रकारिता

हम पत्र-स्वातन्त्र्य और लेखन-स्वातन्त्र्यकी बहुत बात करते हैं और शतप्रतिशत आदर्शोंकी दृष्टिसे वह ठीक भी है, पर दुनियामें आजतक होता यह आया है कि किसी देशके अखबार वहांकी शासनसत्ताके ढांचेके अनुकूल रहते हैं, यानी समाचारपत्र अपने देशकी सरकारके स्वरूपके अनुसार होते हैं। राजनीतिक दर्शनोंका और सरकारी व्यवस्थाओंका समाचारपत्रोंपर बहुत व्यापक प्रभाव रहता है।

मैंने पत्र-स्वातन्त्र्यकी दृष्टिसे दुनियामें पत्रकारोंकी विभिन्न प्रणालियोंके कई भाग किये हैं। पहले प्रकारका नाम मैंने 'सत्यं ब्रूयात्' रखा है। इसमें अच्छा-बुरा सब सत्य लिखा जाता है। दूसरा प्रकार 'प्रियं-ब्रूयात्'का है। इसमें पत्र सरकारके पूर्ण रूपसे दास रहते हैं। तीसरा प्रकार 'न ब्रूयात् सत्यमप्रियं'का है। यह प्रणाली सत्य लिखनेकी है, पर सरकारोंको अप्रिय सत्य दबानेकी है। रूस, चीन और अन्य कम्युनिस्ट देशोंमें यह अपनायी गयी है। कम्युनिस्ट राज्य और समाजप्रणालीकी दासता समाचारपत्रोंको स्वीकार करनी पड़ी है। वे यह नहीं लिख सकते कि कम्युनिज्मके अतिरिक्त भी कोई अच्छा 'वाद' दुनियामें हो सकता है।

इस प्रणालीमें कुछ अच्छाइयां भी होती हैं। पहली अच्छाई यह है कि सड़कोंपर-की दुर्घटनाएं, चोरी, डकैती, अपराध, मामूली-साधारण बातें, सनसनी पैदा करनेवाली बातें और यौन सम्बन्धी बातें अखबारोंमें नहीं रंगी जातीं। दूसरी अच्छाई इस प्रणालीमें यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार जो योजनाएं बनाती है और काम निर्धारित करती है, उनके करनेमें यदि कोई आलस्य दिखाता है या भ्रष्टाचार करता है तो उसकी पोल खोलनेकी और उसपर टीका करनेकी पूरी स्वतन्त्रता सरकारी नौकरों, पार्टीके सदस्यों और पाठकोंको रहती है। इनसे लाभ यह होता है कि शासन विशुद्ध होनेमें बहुत सहायता मिलती है।

रूसमें हम 'प्रावदा' अखबारके दफ्तरमें, तास समाचार समितिमें और मास्को प्रेस क्लबके स्वागत समारोहमें सम्मिलित हुए थे। सच्चे पत्रकार जब आपसमें मिलते हैं तब वे चाहे रूसके हों, चाहे अमेरिकाके हों, उनकी स्वतन्त्र प्रवृत्ति हमेशा जाग्रत होती है। हमने तीनों जगह ऐसे-ऐसे प्रश्न किये कि जो रूसी पत्रकारोंको झुंझलाहट पैदा करनेवाले हो सकते थे, पर उन्होंने उसके उत्तर भी हमारी जितनी ही स्वतन्त्रतासे दिये। 'तास' समाचार समितिके डाइरेक्टरसे मैंने पूछा कि जब यह समिति सरकारी पैसेसे चलती है तो इसकी स्वतन्त्रतापर सरकारका अंकुश अवश्य रहता होगा? इसपर डाइरेक्टर

महोदयने ऐसा चातुरीपूर्ण उत्तर दिया कि हम उनकी चातुरीपर रीझ गये, यद्यपि उनके उत्तरमें तर्क या दलील बिलकुल लचर थी। उन्होंने उत्तर दिया कि पैसेके कारण ही यदि किसीका अंकुश लगता हो तो वह रूसी सरकारका हमारे ऊपर न होकर, हमारा रूसी सरकारपर होना चाहिये। क्योंकि हम हर साल अपने मुनाफेका लाखों-करोड़ों रूबल रूसी सरकारको देते हैं। यदि हमारी समाचार समिति कोई निजी संस्था चलाती तो वह निजी कम्पनी हरसाल लाखों-करोड़ों रूबल नफा कमाती।

'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया'में ईर्ष्या

'प्रावदा'में हम लोगोंने पूछा कि आपमें और 'इजवेस्तिया' अखबारमें चढ़ा-ऊपरी, स्पर्द्धा और एक दूसरेको हरानेकी क्या होड़ रहती है? उत्तर मिला कि हां, रहती है। पर यह ईर्ष्या या द्वेषकी भावनासे नहीं, स्पर्धाकी भावनासे रहती है। कभी हम उनके ऊपर बाजी मार लेते हैं और कभी वे हमसे आगे बढ़ जाते हैं।

'प्रावदा'के सहायक सम्पादकको (सम्पादक उस समय छुट्टीपर गये थे) हम लोगोंने पहलेके सम्पादक और विदेशमन्त्री शेपिलोवके बारेमें प्रश्न किये तो उन्होंने बिना झिझकके यह बता दिया कि शेपिलोव आजकल किस विश्वविद्यालयमें किस विषयके प्रोफेसरका काम कर रहे हैं।

'सम्पादकके नाम पत्र'के सम्बन्धमें मैंने बहुतसे प्रश्न पूछे। एक प्रश्न यह था कि मान लीजिये कि किसी पाठकने किसी पुलिस अधिकारीकी आपसे शिकायत की और आपने उस शिकायतका निराकरण करनेके लिए उस पत्रको पुलिस विभागके पास भेजा और जिस पुलिस अधिकारीकी शिकायत है उसको शिकायत करनेवालेका नाम मालूम हो गया और उसने यदि शिकायत करनेवालेपर बदला लेनेकी कारखाई की तो? इसपर उत्तर मिला कि ऐसा नहीं हो सकता। रूसमें एक कानून है, जिसके अनुसार अखबारोंमें सच्ची शिकायतें छापनेपर यदि कोई सरकारी कर्मचारी बदला लेनेकी कारखाई करता है तो उसे बड़ी कड़ी सजा मिलती है।

'प्रावदा' अखबारके दफ्तरमें रोज करीब तीन हजार शिकायती पत्र आते हैं, जिनको सम्बन्धित सरकारी विभागोंके पास जांचके लिए भेजने और वहांसे उत्तर आनेपर पत्र-प्रेषकको उत्तर भेजनेके लिए एक अलग विभाग ही रखना पड़ा है। ये पत्र बहुत मनोरंजक और रूसकी सामाजिक स्थितिका गहरा भेदक दर्शन करानेवाले होते हैं। इन पत्रोंके पढ़नेसे मालूम होता है कि मनुष्य दुनियाभरमें सब जगह एक-सा ही होता है। रूसमें पिछले चालीस सालतक मनुष्यको बदलनेके जो भी प्रयत्न हुए उनके बावजूद रूसी मनुष्यमें अब भी उन्हीं सद्गुणों और दुर्गुणोंके बीज विद्यमान हैं, जो गैरकम्युनिस्ट देशोंके लोगोंमें हैं। मैंने एक प्रश्न यह किया कि 'प्रावदा'के खिलाफ जो पत्र आते हैं, क्या इन्हें भी आप छापते हैं तो उसपर उत्तरदाता मौन रह गये।

मास्कोके हर एक चौकमें मैंने शीशेके ढक्कनदार बोर्डोंपर कई अखबार चिपकाये हुए देखे। मैंने पूछा—ये सैकड़ों, हजारों अखबार क्या पत्रका सर्कुलेशन कम नहीं करते और इनकी कीमत कौन देता है? उत्तर मिला कि इनके बावजूद हमारा सर्कुलेशन पचास लाखसे अधिक है और सांस्कृतिक उत्थानमें योग देनेवाली सरकारी संस्था इन अखबारोंको खरीदकर सड़कोंके बोर्डोंपर लगाती है।

'प्रावदा' कम्युनिस्ट पार्टीका मुखपत्र और 'इजवेस्तिया' सोवियट सरकारका मुखपत्र है। 'प्रावदा'से ही युवकोंका 'प्रावदा' और बच्चोंका 'प्रावदा' ये पत्र भी निकलते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 'प्रावदा' छापनेवाली मास्कोकी बड़ी रोटरी मशीन ब्रिटेनमें बनी है। जब इस मशीनकी आवश्यकता पड़ी होगी तब रूसमें छपाईकी बड़ी-बड़ी रोटरी मशीनें नहीं बनती थीं। इसलिए इसे ब्रिटेनसे मंगाना पड़ा, नहीं तो रूसी सरकार गैरकम्युनिस्ट देशोंमें बनी कोई चीज अपने देशमें नहीं बिकने देती। (मुझे
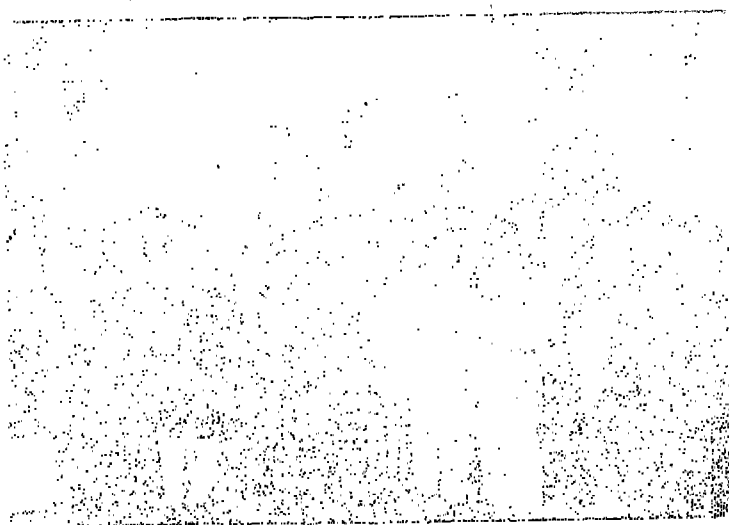
मास्को प्रेस क्लबमें पत्रकार दल

सिगरेट लाइटर चाहिये था, पर मास्कोके सबसे बड़े डिपार्टमेंटल स्टोरमें भी वह नहीं मिला, क्योंकि रूसमें सिगरेट लाइटर बनते नहीं और बाहरका माल रूसके बाजारोंमें बेचनेके लिए रूस सरकार मंगाना नहीं चाहती।)

मास्को प्रेस क्लबके स्वागत समारोहमें भी 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया'की स्पर्धाकी

चर्चा छिड़ी थी। 'प्रावदा'के सम्पादक श्री डी० गोरीउनोवने कहा कि 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया' दोनों सगी बहिनें हैं, पर 'प्रावदा' बड़ी बहिन है। इसपर 'इजवेस्तिया'के सम्पादक श्री ए० जी० वालीनने पत्रकारोचित मजाक करते हुए कहा कि हां, 'इजवेस्तिया' छोटी बहिन है जरूर, पर अकसर छोटी बहिन ही बड़ी बहिनसे अधिक सुंदर होती है।

रूसमें 'मार्क्स दर्शन'के अनुसार राज्यका दास मनुष्य रहता है और मनुष्यकी सेविका पत्रकारिता रहती है। इसलिए पत्रकारिताको चतुर्थ स्तम्भ जैसी बड़ी पदवियां वहां नहीं मिलतीं। पत्रोंका महत्व वहां उद्योग-धन्धे, कृषि और शिक्षाके बाद सांस्कृतिक उत्थानके साधनोंमें भी अन्तिम रूपसे आता है। समाचारपत्रोंसे अधिक महत्व वहां पुस्तक प्रकाशनको, नाटक, फिल्म और सरकसको, म्युजियमोंको, क्लबों और उनसे अधिक लाइब्रेरियोंको दिया जाता है। फिर भी पत्रों और पत्रिकाओंकी पिछले वर्षोंमें बहुत प्रगति हुई है। रूसियोंका दावा है कि जब क्रांति हुई तब उन्होंने केवल प्रतिक्रियावादी पत्रोंको ही बन्द किया। सोशलिस्ट रिवोलुशनरी, सोशल डिमोक्रेट (मेन्शेविक) और पापुलर सोशलिस्ट पार्टीके पत्र भारी संख्यामें बराबर बिना किसी बाधाके निकलते रहे। ज्यों-ज्यों क्रांतिविरोधी शक्तियोंकी ताकत कम होती गयी, त्यों-त्यों ये पत्र भी अपने आप धीरे-धीरे समाप्त हो गये।

रूसमें साक्षरता शत-प्रतिशत है, इसलिए पत्रोंकी ग्राहक संख्याएं भी बहुत बड़ी हैं। ऐसी कोई वैज्ञानिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और क्रीड़ा समिति नहीं है, जिसका अपना पत्र न हो। ट्रेड यूनियनके केन्द्रीय कौंसिलका पत्र 'ट्रूड' नामक निकलता है, जो 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया'की तरह ही लोकप्रिय है। इधरके वर्षोंमें पत्र-पत्रिकाओंकी संख्या और ग्राहक संख्या कितनी तेजीसे बढ़ी है, यह नीचे लिखी तालिकासे स्पष्ट होगा—

वर्ष	समाचारपत्र		पत्रिकाएं	
	संख्या	ग्राहक संख्या	संख्या	ग्राहक संख्या
१९१३	१०५५	३३००००००	१४७२	......
१९२८	११९७	९४००००००	२०७४	३०३१०००००
१९३५	६४५५	२३२००००००	६५७	७२८०००००
१९५५	७२४६	४८७००००००	२०२६	३६१३०००००

सन् १९५५ में रूसी सोवियटमें सबसे अधिक ४५५२ पत्र निकलते रहे। इसके बाद यूक्रेन (१०६१), 'कझाक' (३७३) और 'बाइलोरशिया' (२१८) का नम्बर आता है। सबसे कम इस्टोनियामें ५९ पत्र निकलते हैं। पत्रिकाओंमें भी सबसे अधिक पत्रिकाएं रूसी सोवियटमें ही १२४६ निकलतीं हैं, जिनमें ११५४ तो केवल रूसी भाषा

में निकलती हैं। इसके बाद यूक्रेन (२४५), जार्जिया (७६), कज़ाक (७१) और उजबेक (५४) का नम्बर आता है।

१९५६ में पत्रोंकी संख्या ७५३७ और उनकी दैनिक ग्राहक संख्या ५४००००००० हो गयी। ये पत्र सोवियट संघकी लगभग ७० भाषाओंमें छपते हैं। 'प्रावदा'की ग्राहक संख्या ५० लाख इतनी अधिक है कि इसे रूसके विभिन्न सोलह शहरोंमें एक साथ छपवाना पड़ता है। १९१३ में रूसमें जनसंख्याके प्रति सौ मनुष्य पीछे जहां दो प्रतियां छपती थीं वहां १९५६ में यह संख्या २७ हो गयी।

——:०:——

(१२)

रूसी भाषा

रूसमें जानेके पहले मुझे कोई फुरसत नहीं मिली थी, अन्यथा जानेके पहले मैं हिन्दी-रूसी ग्राइमरसे, जिसे मैंने ऐसे ही सम्भावित अवसरके लिए जतन कर रखा था, रूसी भाषाके कुछ शब्द सीख लेता। रूसमें जानेके बाद हमने सुना कि संस्कृत भाषा और व्याकरणका रूसी भाषासे जितना साम्य है उतना यूरोपकी दूसरी किसी अन्य भाषा में नहीं। रूसी भाषामें 'उदक' (पानी) 'वोदा' हो गया है। शकरके लिए तो उनका शब्द ठीक मराठी साखर शब्दके समान मय उसी उच्चारणके इस्तेमाल होता है। मास्कोके होटल पेकिंगमें मुझे चार सौ छब्बीस नम्बरका कमरा मिला था। दिनभर ७-८ बार जाते समय उसकी ताली उस मंजिलकी फ्लोवर अटेंडेंटके पास रखनी पड़ती थी और आनेपर नम्बर बताकर मांगनी पड़ती थी। हर बार ताली मांगते समय भाषा न जाननेके कारण कागजपर कमरेका नम्बर लिखकर दिखलाना पड़ता था। (रूसी भाषामें अंक अन्तरराष्ट्रीय रोमन ही लिखे जाते हैं।) एक-दो बार इस प्रकार स्लिप लिखनेपर फ्लोवर अटेंडेंट महिलाने मुझे रूसी भाषामें चार-दो-छः नम्बर बोलनेको सिखा दिया। चारको 'चेतिरे', दो को 'द्वा' और छःको रूसीमें 'षेष्ट' कहते हैं। इस प्रकार 'चेतिरे द्वा षेष्ट' कहनेपर मुझे अपने कमरेकी ताली मिल जाती थी। संस्कृत चत्वारि द्वाषट्से चेतिरे द्वा षेष्टका कितना साम्य है देखिये। हमने सुना कि राहुलजीने संस्कृत और रूसी भाषाके साम्यके सम्बन्धमें बहुत-सा अनुसंधान-कार्य किया है।

वर्णमाला

रूसी भाषा रोमन वर्णमालामें ही लिखी जाती है, पर दोनों वर्णमालाओंमें उच्चारण, अक्षरोंकी लिखावट आदिमें इतना अधिक अन्तर है कि अंग्रेजी जाननेवाला

आदमी रूसी भाषा पढ़ नहीं सकता। रूसी भाषामें अठ्ठाइस अक्षर या वर्ण हैं चार और भी अतिरिक्त वर्ण हैं पर उनका इस्तेमाल बहुत ही कम होता है अठ्ठाइसमें छः अक्षर तो ऐसे हैं जिनका ठीक अंग्रेजीकी तरह उच्चारण होता है ये हैं—A, E, O, K, M और T, इनका उच्चारण भी ए, ई, ओ, के, एम, टी होता है। छः अक्षर ऐसे हैं जो लिखे तो जाते हैं बिलकुल अंग्रेजीकी तरह पर जिनका उच्चारण अंग्रेजीसे बिलकुल ही भिन्न होता है। ये छः अक्षर हैं,—B, H, P, C Y, X और इनका उच्चारण होता है, वी, एन्, आर, एस्, ऊ और ह या च।' सोलह अक्षर अंग्रेजीसे लिखावटमें भी और उच्चारणमें बिलकुल भिन्न हैं। पूरी रूसी वर्णमाला मय वर्णोंके उच्चारणोंके इस प्रकार है—

(१)	А	ए	(१५)	П	पी	(१)	Л	
(२)	Б	बी	(१६)	Р	आर	(२)	Ъ	
(३)	В	वी	(१७)	С	एस	(३)	Ы	इ
(४)	Г	ग घ	(१८)	Т	टी	(४)	Й	
(५)	Д	डी	(१९)	У	ऊ			
(६)	Е	ये	(२०)	Ф	फ			
(७)	Ж	स ज	(२१)	Х	ख च			
(८)	З	झ	(२२)	Ц	त्स			
(९)	И	इ ई	(२३)	Ч	च			
(१०)	К	के	(२४)	Ш	श			
(११)	Л	एल	(२५)	Щ	श्छ			
(१२)	М	एम	(२६)	Э	ए			
(१३)	Н	एन	(२७)	Ю	यू			
(१४)	О	ओ आ	(२८)	Я	या			

Do you serve breakfast in the room ?	Podayo'tsya lee za'vtrak vno'myerye
Please send my suit to the cleaners.	Poshlee'tye pazha'lsta moy kostyoom v cheestkoo'
I must have another suit pressed.	Mnye nyeobkhodeemo eemyet' droogoy kostyoom viglazhennim
Can you send something to eat to my room ?	Mozhetye lee vi poslat chto-neebood poyest' v moy nomyer
Let me see the menu	Pokazheetye mnye menyoo
Send up some cold meat, bread, butter and an iced glass of beer.	Poshleetye kholodnovo mya'sa, khle'ba, masla ee staka'n khalodnovo peeva
I am tired after the voyage.	Ya oosta'l doro'gee
Can you recommend me a young man speaking good English to act as guide ?	Mo'zyete lee vi Porekomy-endova't mnye molodo'vo chelovye'ka govoryash-chevo po angleeskee vka'chestvye gee'da.
Here is your bill	Vot vash schyo't
Will you take a traveller's cheque ?	Pri-nee-ma'ye-tye lee poo-tye-she'st-vyon-niy chek
Thank you.	Spaseebo
Farewell	Schastlee'vavo Pootee'
We hope that our visit to the Soviet Union will prove to be very fruitful.	Mi nadye'yemsya shto na'she posyeshchye'nye Sovye'tskovo Soyooza boo'-dyet vyesma' plodotvo'rno
Coins	Monye'ti
one kopeck	Adna' kopye'yka
Two, three kopecks	Dvye. tree kopye'ykee
One rouble	Adne'n roo'bl'

Two, three roubles.	Dva, tree rooblya'
One hundred roubles	Sto rooblye'y
Please change a hundred rouble note	Pazha'lsta, razmyenya'yte storooblyo'viy beelye't
What does it cost ?	Sko'lko e'to sto'eet
I would like a glass of beer	Ya khate'l bi stakan piva
Bottle of wine, lemonade, mineral water	Booti'lka veena', lyemona'da, meenera'lnoy vodi'
At what time is dinner served ?	V kakee'ye chasi' poday-otsya obye'd
Bring me the menu, please.	Preenyesce'tye mnye myenyoo, pazha'lsta
Bill, please	Schyot, pazha'lsta
Some more bread, please	Yeshcho' khlye'ba, pazha'-lsta
Hors d'oouvres	Khalo'dniye zakoo'skee
Smoked sausage, liver sausage	Kopchyo'naya kolbasa', leevernaya kolbasa
Ham, ham and egg	Vyetcheena, vyetcheena's yaytsom
Caviare-fresh, granular	Eekra-svyezhaya, zyernees-taya
Fried eggs, scrambled eggs	Yaee'chnitsa glazoo'nya, yaee'chnitsa boltoo'nya
Soft boiled egg	Yaytso'v smya'tkoo
Poached egg	Yaytso'v mye sho'chkye
Hard boiled egg	Yaytso' vkrootoo'yoo
Shashlick' Caucasian dish	Shashli'k
Dinner	Obye'd
Tea	Chay
Supper	Oo'z hin
Lunch, midday meal	Vtoro'y za'vtrak

Breakfast	Za'vtrak
Vegetables	O'voshchi
Lettuce	Sala't
Tomatoes	Toma'ti
Beetroot	Svyo'kla
Radish	Ryedsee'ska
Cucumber	Ogoorye'ts
Sweets, confectionery	Knofe'ti
Cakes pastry	Peero'zhniye
Sandwich	Booterbro'd
Cabbage soup, beetroot soup	Shchee, borshch
Noddle soup	Lapsha'
Chicken broth	Kooree'niy soop
Chicken cutlets	Kooree'niye kotlye'ti
Roast chicken, duck, goose, turkey.	Zha'renaya koo'ritsa, ootka goos', indyeyeka
Mutton, veal	Bara'neena, tyelya'teena
Roast beef	Rost-beef
Fish pie	Peero'g s ri'boy
Cabbage pie	Peero'g s kappoo'stoy
Roast meat	Zharko'ye
Mashed potatoes	Karto'fyelnoye pyoorye'
Cauliflower	Tsvetna'ya kapoo'sta
Peas, carrots, beans	Goro'shyek, morko'v, faso'l'
Fresh fruit	Svye'zhiye froo'kti
Stewed fruit, tinned fruit.	Kompo't, konservee' rovanniye froo'kti
Orange	Apyelsee'n
Butter, cheese, milk	Ma'slo, sir, malako'
Strong, weak tea	Krye'pkee, sla'biy chay
Coffee, cocoa	Kofye, kaka'o
Chocolate	Shokola'd
Sugar	Sa'khar

Jam, honey	Varye'nye, myo'd
Ice Cream	Moro'zhenoye
Tips	Chayevi'ye
Roll, bun	Kroo'glaya boo'lochka, sdo-bnaya boo'lochka
What would you like ?	Shto vi zhela'yetye
I would like some soup first	Snacha'la preenyesee' tye mnyo soop
Afterwards I will have some meat wit hvegetables and potatoes.	Poto'm ya khochoo'mya'so ovoshcha'miee karto' fym' lyem
I prefer fish	Ya pryedpoceita'yoo ri'boo
Beefsteak	Beefsht'ks
Lamb, pork	Bara'neena, sveenee'na
Bacon and egg	Be'kon s yaytso'm
Salt, pepper, mustard.	Sol', pye'ryets, gorchee'tsa
Different kinds of sausage	Ra'znovo ro'da kolbasi'
Rye bread, brown bread	Cho'rniy khlye'b
White bread	Bye'liy khlye'b
Wholemeal bread	Poklye'vanniy khlye'b
Slice of bread	Lo'mtik khlye'ba
Cold meat	Khalo'dnoye mya'so
Red, white wine	Krasnoye, byeloy veeno
Sweet wine	Sla'dkoye veeno'
A glass of wine	Staka'n veena'
A bottle of wine	Boot'lka veena'
Brandy	Konyak
Champagne	Shampa'nskoye
Apple juice	Ya'blochniy sok
Something to drink	Ko-ye-shto vi-peet'
Excuse me, can you tell me the way to..?	Eezveenya'yoos, nye mo'-zhetye lee vi mnye ooka-za't doro'gook..?

How far is it from here to..?	Kak dalyeko' otsyoo'da nakho'deetsya..
I am lost	Ya potyerya'l doro'goo
what is the news ?	Shto no'vovo
May I have London daily papers ?	Mogo'lee ya eeme't Londons keeye yezhednye'vniya gazye'ti
What is the price ?	Kaka'ya eem tzena'
Black and red ink	Tch'rniye ee krasniye tchernila
Letter Paper	Pachto'vaya boomaga
Envelopes	Konvyerti
Do you sell picture post-cards ?	Prodayotye lee vi otkritkee s veedamy
May I have a Moscow Guide Book ?	Mogoo'lee ya eemyet' Pootyevodeetel' po Moskvye'
I am here as a tourist	Ya preeye'khal syooda' kak tooreest
We want to look round the town	Mi khatee'm osmotrye't go'rod
Where can I get something to eat, drink ?	Gdye mozhno zakoosee't ee shto-nebood vipdeet'
What is on tonight at the ..theatre ?	Shto syevodnya dayoo't v tyea'trye
Department Stores	Oonivermа'g
Confectioner's	Kondeeterskaya
Grocery and Provision shop	Castronomeecheskee magazee'n
Pharmacy, Chemist's	Astyeka
Cafe	Kafe'
Snack Bar	Zakoo'sochnaya
Books, Second-hand Book-dealer	Kneegee, Bookeenee'st

Gramophone Records	Grmplastee'nki
Gifts	Padarkee
Toys	Eegrooshkee
Clothes	Odyezhda
Stamps	Markee
Camera	Fotoapara't
I want some films for my camera	Mnye tryebooyootsya plyonkee dlya moyevo' fotoapara'ta
My name is	Mayo eemya
I live in Hotel	Ya zhivoo' v gostee'neetsye
I would like to see the puppet show	Mnye khotyelos bi posmotryet' predstavlyenye maryonye'tok
Please send for the doctor	Poshlee'tzye za do'ktorom (vrachom)
He has a temperature	Oo nyevo' povi'shennaya tyempyeratoora
I am hungry, thirsty, tired	Ya galodna, ya khochoopee't, ya oostala
I have got a headache	Oo myenya baleet galava
Take two aspirin tablets	Preemee'tye dvye tablye'tkee aspeereena

———:o:———

[२]

बदलते रूसमें

सोवियट शासनके पिछले ४० वर्ष

पिछले पृष्ठोंमें अपनी सोवियट संघकी ८ दिनकी यात्राका मैंने वर्णन किया है और उसीके अनुषंगमें रूस पिछले ४० वर्षोंमें कितना बदला है इसका प्रसंगानुसार संक्षिप्त विवरण भी देता आया हूँ।

पुस्तकके इस खंडमें कम्युनिस्ट क्रान्तिका संक्षिप्त इतिहास और कम्युनिज्मके विस्तारका उतार-चढ़ाव देनेके बाद स्टालिन और क्रुश्चेव-युगकी विशेषताएँ बतायी गयी हैं। सोवियट शासनकी पिछले ४० वर्षकी प्राप्तियों; स्टालिनके अधिनायकवादी युगमें हुई प्रगति, पर जनतासे सरकारके होनेवाले दुराव; सन् १९५३ में स्टालिनकी मृत्युके बाद सोवियट संघके वयस्क होने तथा सन् १९५५-५६ में रूसमें हुई नयी जनवादी उत्क्रांतिका विस्तृत विवरण दिया जा रहा है। अन्तमें भविष्यकी झलक देखनेका भी प्रयत्न किया गया है। भारत तथा रूसके बदलते हुए सम्बन्धपर भी विस्तारसे प्रकाश डाला गया है।

(१३)

सोवियट क्रान्तिका इतिहास

वर्तमान सोवियट संघको अच्छी तरह समझनेके लिए जिस प्रकार १९१७ की क्रान्तिसे पहलेके रूसके राष्ट्रीय तत्वोंको समझना आवश्यक था और जिसके लिए मैंने रूसके प्राचीन इतिहासपर एक छोटेसे अध्यायमें पहले ही प्रकाश डाला है उसी प्रकार क्रान्तिके बादके रूसको, सोवियट संघको, सहानुभूतिपूर्ण, पर पूर्वाग्रह दोषसे रहित दृष्टिसे समझनेके लिए क्रान्त्युत्तर रूसके इतिहासको भी संक्षिप्त रूपसे समझना आवश्यक है।

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरीक एंगेल्सने सन् १८४८ में अपने सुप्रसिद्ध कम्युनिस्ट मेनिफिस्टोमें दुनियाके मजदूरोंको यह नारा दिया था—वर्किंग मैन ऑफ आल कंट्रीज युनाइट (दुनियाके मजदूरों एक हो जाओ।) इस नारेको कार्यान्वित करनेके लिए दुनियामें जो पेशेवर क्रांतिकारी पैदा हुए उनमें सफल होनेवालोंमें लेनिन सर्वप्रमुख थे।

प्रथम महायुद्ध यद्यपि रूसके जार बादशाह और फ्रांसके परराष्ट्र विभागके संयुक्त रूपसे सर्वियाको उकसानेपर १९१४ में शुरू हुआ, पर जर्मन सैनिक ताकतके आगे रूसकी कुछ चल न सकी और दो ही सालमें रूसकी हालत बिगड़ गयी। खाद्य पदार्थोंकी कमीके कारण रूसके कई शहरोंमें दंगे शुरू हुए, अग्रिम मोर्चेपर सैनिक-विद्रोह होने लगे और जार तन्त्रकी रक्षाके लिए जर्मनीके साथ समझौता करनेकी मांग की जाने लगी। इन मांग कर्ताओंका मुखिया रासपुटिन मारा गया।

८ मार्च १९१७ को पेट्रोग्राडमें रोटीके लिए दंगे शुरू हुए और आम हड़ताल हुई। सैनिकोंने भीड़पर गोली चलानेसे इनकार किया। उस समय बोलशेविक पार्टीकी कुल सदस्य-संख्या २३-२४ हजारसे अधिक नहीं थी। लेनिन और जिनोविएव स्विट्जरलैण्डमें अन्तर-राष्ट्रीय वर्गयुद्धकी योजनाएं बना रहे थे कि रूसके इस उपद्रवकी अप्रत्याशित खबरें उनके पास पहुंची। पेट्रोग्राडमें उस समय श्लाइआपनिकोव, जालुत्स्की और २७ वर्षीय मोलोटोव पार्टीका काम कर रहे थे। १२ मार्चको श्रमिकों और सैनिकोंकी प्रतिनिधि सोवियट बन गयी और इसने सेनाका संचालन भी अपने अधिकारमें ले लिया। उधर जार निकोलस द्वितीयने राजत्याग किया और उनके भाई माइकेलने गद्दीपर बैठनेसे इनकार किया। इसपर ड्यूमा पार्लमेंटके दक्षिण पक्षीय सदस्योंने अपनी सरकार बनायी। प्रिन्स ल्वोवने पहला मन्त्रिमण्डल बनाया जिसमें सोवियटके आदेशके विरुद्ध केरेन्स्कीने भाग लिया। सोवियटके चुनावमें भी मेनशेविकों और सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरियोंको बहुमत मिला। बोलशेविक अल्पमतमें रहे। २५ मार्चको कामेनेव, स्टालिन और मुरानोव साइबेरियासे भाग कर पेट्रोग्राड पहुंचे। पहले उन्होंने श्रमिकों-सैनिकोंकी सोवियटसे समझौतेका रूख

रखा। पर इधर ज्युरिखमें लेनिन सिर्फ श्रमिक प्रतिनिधियोंकी सोवियटपर दृढ़ थे और उन्होंने यह नारा दिया कि केवल श्रमिक सोवियट ही 'रोटी, शांति और स्वतन्त्रता' दे सकती है। १६ अप्रैलको लेनिन पेट्रोग्राडके फिनलैण्ड स्टेशनपर पहुंचे तो उनका कोई बहुत उत्साहसे स्वागत नहीं हुआ। लेनिनने आते ही दूसरे दिन पुलिस, सेना और नौकरशाहीको अलग कर श्रमिकों, खेतिहर मजदूरों और किसानोंकी सोवियटका नारा दिया। 'प्रावदा'की नीति बदल देनेको कहा, पर पार्टीने २ के विरुद्ध १३ मतोंसे लेनिनका नारा अस्वीकार कर दिया। 'प्रावदा'पर कामानेवका ही अधिकार रहा। पर लेनिन चुप बैठनेवाले नहीं थे। २७ अप्रैलसे ५ मईतक हुई पार्टीकी पेट्रोग्राड नगर कांफ्रेंसमें और बादमें ७ से १२ मईतक हुई सार्व-रूस कांफ्रेंसमें उन्होंने अपना कार्यक्रम मनवा लिया।

ल्वोव सरकार युद्ध जारी रखना चाहती थी जिसपर सैनिकोंने प्रदर्शन किये। युद्ध-मन्त्री और परराष्ट्रमन्त्रीने इस्तीफा दिया। नया मन्त्रिमंडल बना जिसमें सोवियटकी विभिन्न ४ पार्टियोंके ६ मन्त्री लिये गये। सोवियट और ड्यूमामें समझौता हो गया। इसका फल यह हुआ कि सोवियटके दक्षिण पक्षीय नेताओंसे असन्तुष्ट जनता रुष्ट हो गयी। फिर भी १७ मईसे १० जूनतक पेट्रोग्राडमें राष्ट्रीय किसान सोवियटकी जो कांग्रेस हुई उसमें बोलशेविकोंके पक्षमें केवल १४ वोट थे और विरोधमें १११५। पर जल्दी ही सोशल रिवोल्यूशनरी पार्टीमें फूट पड़ गयी। ७ नवम्बर १९१७ को पेट्रोग्राडके विंटर पैलेसपर 'आरोरा' क्रूजर परसे विद्रोहियोंने गोलाबारी कर रूसी क्रांतिकी शुरुआत की। (वह क्रूजर अब भी ऐतिहासिक स्मृतिके रूपमें लेनिनग्राडमें नदीमें सुरक्षित रखा गया है।) उसी दिन पेट्रोग्राडके सैनिकोंने विद्रोह कर अस्थायी सरकारको उखाड़ फेंका। सोवियटोंकी दूसरी अखिल रूस कांग्रेस हुई जिसने 'कौंसिल ऑफ पीपुल्स कमिसार्स' बनायी जिसके अध्यक्ष लेनिन चुने गये। रूसमें राज्यक्रांति हुई और एक नये ढंगकी अर्थ-क्रांति भी हुई। सोवियट समाजवादी सरकार स्थापित हुई।

१९१८में बोलशेविकोंने अपना नाम बदलकर 'कम्युनिस्ट पार्टी' रखा। रूसमें सर्वहाराका अधिनायक तन्त्र शुरू हुआ। रूसी नेता दुनियामें कम्युनिस्ट क्रांति करनेकी योजनाएं बनाने लगे। इसपर रूसके पुराने मित्र देश भी उसके विरुद्ध हो गये। रूसने अकेले ही जर्मनीसे संधि-चर्चा भी शुरू की। १७ दिसम्बर १९१७ को युद्धविराम हुआ और मार्च १९१८ में ब्रेस्टलिटोस्ककी संधिसे रूस महायुद्धसे अलग हो गया। सोवियट सरकारने पुराने सब कर्जे देना अस्वीकार कर दिया, देशके अन्दर सब विदेशी पूंजी जब्त कर ली।

अगस्त १९१८ में चेकोस्लोवाकिया, ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, जापान आदि मित्र-राष्ट्रोंने सोवियट रूसकी आर्थिक घेरेबन्दी की और उसपर बाहरसे सैनिक आक्रमण कर दिया। देशके अन्दर भी गृह-युद्ध छिड़ा और कम्युनिस्टोंके विरोधी सोशलिस्टोंने भी विद्रोह किया। छिटफुट तोड़-फोड़ भी शुरू हुई।

सोवियट सरकारने भी देशके अन्दरके विद्रोहियोंका उसी क्रूरतासे दमन किया। मार्च

१९१९ में कम्युनिस्ट या तृतीय इण्टरनेशनलकी स्थापना की गयी, जो मास्कोके नियन्त्रणमें और दुनिया भरके देशोंकी कम्युनिस्ट पार्टियोंकी मददसे शत्रु देशोंके अन्दर विद्रोह उत्पन्न कर संसारव्यापी कम्युनिस्ट क्रांति करनेमें सहायक होती।

ट्राटस्कीके नेतृत्वमें लाल सेनाने देशके अन्दरके और बाहरके आक्रमणोंका मुकाबला कर दोनोंको विफल किया। इसमें दो साल लग गये। १९२०-२१ में लाल सेना पूरी तरह विजयी हुई।

१९२४-२५ तक रूससे व्यापारके लोभमें अमेरिकाको छोड़ बाकी सब राष्ट्रोंने रूसकी नयी सोवियट सरकारको मंजूर कर लिया। अमेरिका १९३३ तक अड़ा रहा।

१९२० के अंतमें लालसेनाने अपने विरोधियोंकी सेनाओंको पूरी तरह परास्त तो कर दिया, पर अब श्रमिकों और कृषकोंने अपने मन लायक शासक चुननेकी मांग बोलशेविक अधिनायक लेनिनसे की। पेशेवर क्रांतिकारी इसे कब सहन कर सकता था। लेनिनकी आज्ञासे ट्राटस्कीकी लालसेनाने जनताके इस विद्रोहको दबा दिया, पर साथ ही लेनिनने जनता को आर्थिक सुविधाएँ देनेकी आवश्यकता भी महसूस की और मार्च १९२१ में कम्युनिस्ट पार्टीकी दसवीं कांग्रेसमें नयी आर्थिक नीतिकी योजना उपस्थित की। इसके अनुसार कृषि और व्यापार-व्यवसायमें निजी क्षेत्र और बढ़ाया गया। १९२२ के अन्ततक खुदरा वाणिज्यव्यवसाय निजी गैर सरकारी हाथोंमें आ गया था। बड़े-बड़े उद्योग धंधे अब भी सरकारके ही हाथमें थे और अधिकांश श्रमिक वर्ग उन्हींमें काम करता था। मार्च १९२२ में पार्टीकी ग्यारहवीं कांग्रेस हुई जिसमें पार्टीका ट्रेड युनियनोंपर नियंत्रण और भी कड़ा किया गया। १० जुलाई १९१८ को सोवियटोंकी पांचवीं कांग्रेसने जो संविधान स्वीकार किया था, उसके अनुसार रूसकी सर्वोच्च सत्ता ऑल रशियन कांग्रेस ऑफ सोवियटको दी गयी थी, पर वस्तुतः सत्ता इसकी २०० सदस्योंकी कार्यकारिणी समितिमें केन्द्रीभूत हो गयी थी। पार्टी और सरकारके बीच अधिकारोंका झगड़ा पहलेसे ही चल रहा था। १९१९ में आठवीं पार्टी काँग्रेसने यह निश्चित आदेश निकाला था कि पार्टी सोवियटोंके काम निश्चित करती है, पर पुरानी सोवियटें हटाकर नयीं नहीं बना सकती। पार्टीमें भी धीरे-धीरे सोवियटोंकी तरह अधिनायक वाद घुसने लगा। सोवियट शासनके पहले आठ वर्ष तो प्रतिवर्ष पार्टी कांग्रेसका अधिवेशन नियमित रूपसे होता था, पर बादमें सेण्ट्रल कमेटीके अधिकार धीरे-धीरे घटने लगे। १९२३ का सोवियट संविधान संशोधित कर १९३६के दिसंबरमें सोवियट संघमें एक नया संविधान लागू किया गया। इन संशोधनोंके अनुसार ग्राम सोवियटोंसे लेकर सुप्रीम सोवियटतक सभी सोवियटोंके चुनाव प्रत्यक्ष निर्वाचनसे होने लगे। कौंसिल आफ यूनियनके (जो संसदका दूसरा सदन था) सभी निर्वाचन क्षेत्र बराबरीके कर दिये गये। इससे ग्राम निवासियोंका अधिक प्रतिनिधित्व जाता रहा। वोटका अधिकार सभी नागरिकोंको बिना किसी सामाजिक भेद भावके समान रूपसे दिया गया। पर व्यवहारमें इसका लाभ अधिक इसलिए नहीं हो

सकता था क्योंकि निर्वाचनके लिए कम्युनिस्टों द्वारा तैयार की गयी एक ही सूचि निर्वाचकोंके सामने रखी जाती है।

१९२३ में सोवियट संघकी (यू० एस० एस० आर०) विधिवत स्थापना हुई। इस संघमें ७ राज्य थे। रूस इस आशासे अपनी आर्थिक व्यवस्था मजबूत करता रहा कि दूसरे महायुद्धके छिड़नेपर विश्वव्यापी कम्युनिस्ट क्रांति होगी और उसका नेतृत्व उसे करना पड़ेगा। १९२४ के जनवरी महीनेमें लेनिनकी मृत्यु हुई और उनके दोनों हाथ स्टालिन और ट्राटस्कीमें आपसमें ही झगड़ा शुरू हुआ। ट्राटस्कीका कहना था कि रूसके अन्दर तुरत सभी धनी किसान समाप्त कर दिये जायं और निजी व्यापार भी खतम किया जाय तथा विश्वव्यापी कम्युनिस्ट क्रांतिकी योजना बने। स्टालिनने पार्टीका बहुमत अपनी ओर कर लिया था और १९२७ में ट्राटस्की पार्टीसे और देशसे निकाल बाहर किये गये।

१९२८ में रूसमें फिर युद्धपूर्व उत्पादनकी स्थिति आ गयी। लेनिनकी नयी आर्थिक नीति त्याग दी गयी और पंचवर्षीय योजनाओंका सिलसिला शुरू हुआ। सोवियट सरकार विश्वशांतिकी रक्षाके लिए प्रयत्नशील रही और पार्टी कोमिंटर्नकी मार्फत विश्वक्रांतिका प्रयत्न करती रही। १९२८ में कोमिंटर्नकी छठी कांग्रेसके बाद ७ सालतक और कोई कांग्रेस नहीं हुई।

१९३३ में जर्मनीमें हिटलरके फासिज्मका उदय हुआ और रूसके बाहरकी सबसे बड़ी, जर्मन कम्युनिस्ट पार्टीने घुटने टेक दिये। अपने साथ सोशलिस्ट पार्टीको भी ले डूबी। जिस पार्टीके आशापर विश्वक्रांति हो सकती थी वही नहीं रही। रूसको अपनी सारी परराष्ट्रनीति ही बदलनी पड़ी।

१९३५ में कोमिण्टर्नकी ७वीं कांग्रेसने 'साम्राजी युद्धको गृहयुद्धमें बदल दो' वाले अपने नारेको त्यागकर नया नारा दिया—फासिज्मके खिलाफ एक हो जाओ। सोशलिस्टों और लिबरलोंसे दोस्ती की जाने लगी। जर्मनीके नाजी-विरोधी रोमन कैथलिकोंसे भी दोस्ती जोड़ी जाने लगी। खुद रूसके अन्दर जुलाई १९३४ में ओगपू (खुफिया राजनीतिक पुलिस) दलका अलग अस्तित्व समाप्त कर उसे गृहमन्त्रालयमें मिला दिया गया। जून १९३६ में एक नया संविधान स्वीकार किया गया और सबको (पुराने शत्रुओंको भी) मताधिकार दिया गया। संघके राज्योंकी संख्या ७ से ११ हो गयी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी सीमा कुछ और बढ़ायी गयी। पर यह अधिक दिन नहीं चला और १ दिसंबर १९३४ को स्टालिनके मित्र सर्जी किरोवकी लेनिनग्राडमें हत्या होनेके बाद स्टालिन खूंखार तानाशाह हो गये। बड़े-बड़े रूसी नेता खतम कर दिये गये। ३-४ सालतक स्टालिनने पार्टीके अन्दरके अपने सभी विपक्षियोंको 'लिक्विडेट' कर दिया।

स्टालिनके इस कट्टरपनसे जर्मनी और जापान अवश्य डर गये और जर्मनीने पहले अपने पश्चिमी शत्रुओंसे समझ लेनेका निश्चय किया। मार्च १९३९ में कम्युनिस्ट पार्टीकी अठारहवीं कांग्रेसमें स्टालिनने नये जर्मन-इटालियन 'जारो' की तारीफ और म्युनिखवाले

चेम्बरलेन-इत्यादियेकी निंदा की। ५ मास बाद जर्मनीने सोवियट संघसे अनाक्रमण संधि की और पोलैण्डपर हमला कर दिया। पश्चिमी राष्ट्रों और जर्मनीमें विश्वयुद्ध छिड़ गया।

रूस और जर्मनी दोनों अपनी-अपनी ताकमें लगे रहे। जर्मनी फ्रांस और ब्रिटेनके हारनेकी राह देख रहा था और रूस साम्राज्यवादी बनकर अपनी पश्चिमी सीमापर अपनी रक्षापंक्तियां दृढ़ करनेके लिए नये-नये प्रदेश जीत रहा था। अन्तमें अगस्त १९४० में हिटलरने निश्चय कर लिया कि साल-छ महीनेके अन्दर ही रूसपर आक्रमण करना अवश्यंभावी है।

रविवार २२ जून १९४१ को प्रातः जर्मनीका मोरचा पूर्वकी ओर खुल गया। रूस की सारी परराष्ट्रनीति फिर बदल गयी। चर्चिल और रूजवेल्ट स्टालिनके दोस्त हो गये। अमेरिकाने उधारपट्टाकी बहुत मदद भेजी पर ३ सालतक अकेले ही रूसको जर्मनीसे भिड़ने दिया। स्टालिन, मोलोटोव, वोरोशिलोव, बेरिया, मालेनकोवकी 'रक्षा पंच कमेटी'ने युद्धके संचालनका भार लिया। १८१२ के नेपोलियनके आक्रमणके बाद रूसके लिए यह दूसरा 'पेट्रियाटिक' युद्ध था।

नवंबर १९४२ में स्टालिनग्राडकी जीतसे युद्धका पासा पलट गया। १९ नवम्बरको रूसी सेनाने जर्मनोंपर प्रत्याक्रमण किया।

सोवियट संविधानमें फिर परिवर्तन करना पड़ा। ११फरवरी १९४४ को राज्योंको अपने अलग सैनिक दल रखने और अन्य राष्ट्रोंके साथ दूत सम्बन्ध स्थापित करनेकी स्वतन्त्रता दी गयी। इसी वजहसे यूक्रेन और बाइलोरशिया बादमें संयुक्त राष्ट्रसंघके अलग सदस्य बन सके। फादरलैण्ड, पितृ भूमिके नामपर—रूसी राष्ट्रवादके नामपर—देशभक्ति खूब जागृत की गयी। धर्म-विरोधी आन्दोलन भी ढीला कर दिया गया। २२ मई १९४३ को कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल बर्खास्त कर दिया गया। इतिहासने यह साबित कर दिया था कि सम्पन्न और प्रगल्भ पूँजीवादी समाजोंके लिए मार्क्सवादका अवश्यम्भावी समाजवादी क्रांतिका सिद्धान्त लागू नहीं होता। ऐसे समाजमें सर्वहारा वर्ग बहुमतमें नहीं रहता। उधर महायुद्धकी स्थितिमें जर्मन प्रोलातारियतने नाजियोंका समर्थन किया। द्वितीय महायुद्धके विजय-दिवसपर मास्कोमें स्टालिनको 'स्लाव' राज्योंकी एकता और स्वतन्त्रताका स्मरण आये बिना न रहा।

रूसमें सन् १७ में कम्युनिज्मके नामपर क्रान्ति हुई, पर दूसरे महायुद्धमें सन् १९४१ में रूसी सेनाके, जर्मन सेनाके हाथ हार खानेपर, कम्युनिस्ट रूसी सैनिकोंमें उत्साह भरनेके लिए सोवियट नेताओंको रूसी देशभक्तिका नारा लगाना पड़ा। उस कठिन समयमें सोवियट कम्युनिस्ट पार्टीको मार्क्सवाद और लेनिनवादका नाम छोड़ देना पड़ा था और सैनिकोंको कम्युनिस्ट पार्टीके दरवाजे खुले छोड़ देने पड़े थे। इसी कारण जनवरी १९४० में जहां सोवियट कम्युनिस्ट पार्टीके ३४०००००० सदस्य थे, वहां जनवरी १९४५ में यह संख्या तेजीसे बढ़कर ५७००००० हो गयी। अगस्त १९४१ में वोल्गा

जर्मन गणतन्त्र और जून १९४६ में क्रिमीयन तातार गणतन्त्र और चेचन इंगुश गणतन्त्र (उत्तर कोहकाफ) समाप्त कर दिये गये और वहां रहनेवाले हजारों-लाखों लोग निर्वासित किये गये। पश्चिमी कैस्पियन पठारके काल्मिक गणतन्त्र और उत्तर कोहकाफके वाल्करों और काराचायोंके गणतन्त्र भी समाप्त कर दिये गये। तीनों बाल्टिक राज्योंके भी हजारों लोग रूसके सुदूरवर्ती प्रदेशोंमें निर्वासित किये गये।

महायुद्धके बाद मित्रराष्ट्रों और रूसकी मैत्री समाप्त हो गयी। ठण्डा युद्ध शुरू हुआ। रूसी जनता बाहरी खतरेके समय हमेशा किसी रूसी तानाशाहको आगे कर उसके पीछे चलने लगती है। इस बार भी यही हुआ। कम्युनिस्ट पार्टीके नेताओंके पीछे जनता संघटित रही। १९३९ के बादसे कोई पार्टी कांग्रेस नहीं हुई थी। दिसम्बर १९३० के बाद १० फरवरी १९४६ को पहले पहल रूसमें चुनाव हुए। सोवियट कानूनमें एकसे अधिक पार्टियों और चुनावमें खुली कशमकशका विधान ही नहीं है। १२ मार्च १९४६ को नयी सुप्रीम सोवियटका अधिवेशन हुआ। मन्त्रिपरिषद् चुनी गयी। २६ मई १९४७ को रूसमें मृत्युदण्ड रद्द कर दिया गया। १४ दिसम्बर १९४७ को राशनिंग समाप्त हो गयी। चीजोंके दाम देशभरमें एक ही समान निश्चित किये गये और नये नोट निकालकर रूबल के पुराने नोट रद्द किये गये। नकद १० नोटके बदले १ नया नोट, ३००० तक बंकमें जमा १ नोटके लिए १ नया नोट, १०००० तकके लिए ३ के लिए २ और १० हजारसे ऊपरके लिए २ पुराने नोटोंकी जगह १ नया नोट दिया गया। पुराने सब सरकारी कर्ज १:३ के अनुपातमें चुकते किये गये।

कम्युनिजमके फिर संघटनका काम शुरू हुआ। ५ अक्तूबर १९४७ को घोषणा की गयी कि कोमिनफार्म (कम्युनिस्ट इनफार्मेशन ब्यूरो) बनाया गया है जिसकी सभामें दुनियाके १५ देशोंकी कम्युनिस्ट पार्टियोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। गैरकम्युनिस्ट देशोंमें फ्रांस और इटलीके प्रतिनिधि भी थे। ब्यूरोमें ९ देशोंकी पार्टियोंके प्रतिनिधि थे।

सुप्रीम सोवियट सालमें केवल दो ही बार कुछ दिनोंके लिए बैठती है और जारी किये गये सरकारी कानूनोंपर अपनी मुहर लगाती है तथा दो-चार सबसे बड़े रूसी नेताओंकी वार्षिक रिपोर्टें तथा बजट-सम्बन्धी भाषण सुनती है। बाकी सारे साल शासनका काम सुप्रीम सोवियट द्वारा निर्वाचित एक छोटी-सी प्रेसिडियम समिति करती है।

सुप्रीम सोवियट विधानतः मंत्रिपरिषदका भी चुनाव करती है। १९४६के पहले इस परिषद्का नाम कौंसिल ऑफ पिपुल्स कमिसार्स था। उस वर्षसे इसका नामकरण कौंसिल ऑफ् मिनिस्टर्स कर दिया गया। महायुद्धके बाद मंत्रि-परिषदके सदस्योंकी संख्या ५०तक हो गयी। इसके कारण पूरी मंत्रिपरिषद्की बैठक कभी भी संभवतः नहीं हो पाती थी। मुख्य मन्त्री (प्रीमियर) और उपमंत्रियोंकी बैठक ही अन्तरंग मन्त्रिमंडलका काम करती है। १९५२ में इन मंत्रियोंकी संख्या भी १३ हो गयी थी। स्तालिनकी मृत्युके बाद अन्तरंग मंत्रिपरिषद् केवल ५ व्यक्तियोंकी रह गयी थी, इसमें मालेनकोव प्रधान मंत्री

और बेरिया, मोलोटोव, बुलगालिन और कागानोविच ये चार प्रथम डिप्टी प्रीमियर थे।

विधान सभा और मंत्रिपरिषद्की तरह न्याय विभाग भी कम्युनिस्ट पार्टीके नियंत्रणमें ही रहता है। क्योंकि जजोंका चुनाव भी वे ही सोवियटें यानी वे ही निर्वाचक करते हैं, जो सोवियटोंका भी चुनाव करते हैं। सुप्रीम सोवियट, प्रोक्युरेटर पदपर, जो न्याय विभागका सर्वोच्च पदाधिकारी होता है, अपना आदमी नियुक्त करती है। और यह बड़ा प्रोक्युरेटर अन्य सब छोटे-छोटे प्रोक्युरेटरोंको नियुक्त करता है। इस प्रकार न्याय विभाग पर भी सुप्रीम सोवियटका ही अंकुश रहता है। प्रोक्युरेटर किसी अदालत का फैसला भी रद कर सकता है। सोवियट फौजदारी संविधानकी दफा ५८ के अनुसार प्रतिक्रांतिकारी अपराधोंके नियंत्रणके लिए जो सुरक्षा पुलिस (एम० वी० डी०) नियुक्त रहती है, वह भी अदालतोंके अधिकार कुछ कम करती है। इसी प्रकार सेनामें भी पोलिटिकल कमिसार और एम० वी० डी० के आदमी नियुक्त किये जाते हैं, जिससे सैनिकोंपर भी अन्तिम रूपसे सुप्रीम सोवियटका ही नियंत्रण आ जाता है।

अमेरिका और रूसमें ठण्डा युद्ध अब भी जारी है। यद्यपि अन्दर-अन्दर दोनों एक दूसरेके निकट आते-जा रहे हैं। दोनों देशोंमें सांस्कृतिक समझौता हो चुका है। एक देशके पर्यटक और सरकारी प्रतिनिधिमण्डल दूसरे देशमें अधिकाधिक संख्यामें जाने लगे हैं। सम्भवतः ऊपर-ऊपरसे ठण्डा युद्ध जारी रखना दोनों देशोंके लिए अभीष्ट है। बाहरी डर दिखाकर रूसी जनतासे रक्षाके नामपर चाहे जितना त्याग कराया जा सकता है। उसे कम्युनिस्ट पार्टीके नेतृत्वमें बांधकर रखा जा सकता है। अमेरिका भी आर्थिक मन्दीसे बच सकता है। पर ठण्डे युद्धमें हमेशा यह डर रहता है कि वह कभी न कभी छोटा-सा कारण भी पाकर गरमा जाता है, बारूदके ढेरके लिए उस समय एक चिनगारी काफी रहती है।

———:o:———

(१४)

कम्युनिज्मके विस्तारके चढ़ाव-उतार

रूस हमेशा बदलता गया है। अंग्रेजीमें एक कहावत है कि 'नथिंग सक्सीड्स लाइक सक्सेस।' इसका भावार्थ यह हुआ कि जिसमें सफलता मिली वह अच्छा और जिसमें विफलता हाथ आयी वह बुरा। रूसी नेता भी बदलते गये हैं और जिस परिवर्तनमें वे सफल हुए उसे उन्होंने 'नयी नयी ऐतिहासिक परिस्थितियोंके अनुसार मार्क्सवादके उपदेशोंका सृजनात्मक विकास' नाम दिया और इसके विपरीत मार्क्सवादकी व्याख्या जिसने की उसे पथभ्रष्ट, क्रान्ति-विरोधी, प्रतिक्रियावादी आदि विशेषण लगाये।

कम्युनिज्मकी सफलता और विस्तारके चढ़ाव-उतारका तिथिक्रम यह है—

२२ अप्रैल १८७०—व्लाडिमीर इल्यिच लेनिनका जन्म।

३० जुलाई १९०३—रशियन सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टीकी दूसरी कांग्रेस, सुसंघटित बोलशेविक पार्टीकी लेनिन द्वारा स्थापना, इसीसे क्रांतिके बाद सोवियट संघकी कम्युनिस्ट पार्टी बनी। सेकेण्ड इण्टरनेशनलसे अलग होकर दुनियामें सुसंघटित रूपसे बोलशेविक आन्दोलनका इसी दिनसे सूत्रपात हुआ। लेनिनने मार्क्सवादी 'सर्वहारा का अधिनायक तन्त्र'के सिद्धान्तोंके प्रचारके लिए 'इस्क्रा' (चिनगारी) नामका अखबार निकाला। १९१२ तक लेनिनका दल अल्पमतमें था। उस साल मेनशेविक अलग हो गये। सेण्ट पीटर्सबर्ग (लेनिनग्राड) के मजदूरोंने अप्रैलमें 'प्रावदा' अखबार निकाला, पर वह बहुत दिनतक ट्राटस्की आदिके हाथमें रहा। बादमें रूसमें क्रान्ति सफल होते देखकर सृजनात्मक मार्क्सवादका आश्रय लेकर लेनिनने साम्राज्यवादके सम्बन्धमें नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये और बताया कि एक या दो पूँजीवादी देशोंमें भी कम्युनिस्ट क्रान्ति सम्भव है।

१९१७

७ नवम्बर—रूसमें अक्तूबर (पुराने कैलेण्डरके अनुसार २४ अक्तूबर) क्रान्तिका आरम्भ (१९०५ के बाद क्रान्तिका यह दूसरा प्रयत्न था।) जारतन्त्रकी समाप्ति। 'बूर्ज्वा-डेमोक्रेटिक क्रांन्ति' सफल। श्रमिकों-सैनिकोंकी सोवियटोंका शासन। लेनिन द्वारा इसका सोशलिस्ट क्रांतिमें बदल देनेका सफल प्रयत्न। लेनिन द्वारा मार्क्सवादका नया सृजनात्मक विकास—पार्लमेंटरी डिमोक्रेटिक रिपब्लिकसे अच्छा रिपब्लिक आफ सोवियेट्स होता है।

अल्पसंख्यामें होते हुए भी बोल्शेविकोंने अस्थायी शासनको शक्तिके बलपर पलटकर साम्यवादी शासन शुरू किया।

८ नवम्बर—नये स्थापित बोल्शेविक शासनने बड़ी-बड़ी जमींदारियोंकी जब्तीका आदेश जारी किया, जिससे कि भूमि किसानोंमें बांटी जा सके। (बादके वर्षोंमें समस्त भूमि सरकारी कब्जेमें कर ली गयी तथा लोगोंको सामूहिक कृषिके लिए मजबूर किया गया। दुर्भिक्षके फलस्वरूप १९३० के बादके कुछ वर्षोंमें कई लाख व्यक्ति मर गये।)

९ नवम्बर—बोल्शेविकोंने नियन्त्रणको कड़ा करने तथा आलोचनाओंकी समाप्तिकी दृष्टिसे पत्रोंकी स्वतन्त्रता समाप्त कर दी। (इसके कुछ दिन बाद समस्त गैरसरकारी मुद्रण सामग्री जब्त कर ली गयी तथा गैर-बोल्शेविक समाचारपत्रोंका दमन किया गया।)

२० दिसम्बर—लेनिनने साम्यवादी खुफिया पुलिस 'चेका' संघटित की। बादमें यह साम्यवादियोंका सबसे अधिक भीषण और निर्मम साधन सिद्ध हुई। खुफिया पुलिस, विभिन्न नामोंके अन्तर्गत, रूसी सोवियट शासनका एक नियमित अंग बन चुकी है।

३१ दिसम्बर—बोल्शेविकोंने वाईलोरशियन कांग्रेसको भंग कर दिया। यह कांग्रेस उन ७० लाख रूसियोंका प्रतिनिधित्व करती थी, जो अपने भविष्यका स्वयं निर्णय करना चाहते थे। (इससे पूर्व १५ नवम्बरको बोल्शेविक शासनने यह बात स्वीकार कर ली थी कि विभिन्न राष्ट्रीय इकाइयोंको सोवियट संघसे पृथक् हो जानेका अधिकार प्राप्त है।)

नया विवाह-तलाक कानून लागू कर विवाह रजिस्टरी कराना जरूरी कर दिया गया।

१९१८

१८-१९ जनवरी—अस्थायी सरकार द्वारा निर्मित संविधान सभाकी समाप्तिके लिए बोल्शेविकोंने सेनाका उपयोग किया। संविधान सभामें जब बोल्शेविकोंको केवल २५ प्रतिशत मत मिले, तब उन्होंने इस सभाको भंग कर देनेका आदेश दे दिया।

८ फरवरी—साम्यवादी सेनाओंने यूक्रेनियन संसद (राडा) को भंग करनेके लिए किएवपर कब्जा कर लिया।

१० फरवरी—पूर्ववर्ती रूसी सरकारोंके समस्त आर्थिक उत्तरदायित्वोंको साम्यवादी शासकोंने अस्वीकार कर दिया।

१२ मार्च—साम्यवादी शासनने पेट्रोग्राड (वर्त्तमान लेनिनग्राड) से राजधानी हटाकर मास्कोको राजधानी बना लिया, क्योंकि विरोधी तत्वोंसे पहली राजधानीको खतरा था तथा वह पूर्णतया अरक्षित थी।

२५ मार्च—वाइलोरशियाने अपनी स्वतन्त्रताकी घोषणा कर दी। साम्यवादी सेनाने कुछ ही मासमें इस आन्दोलनका अन्त कर दिया।

२२ अप्रैल—सोवियट यूनियनके समस्त वयस्क व्यक्तियोंके लिए सैनिक तथा श्रमिक सेवा अनिवार्य घोषित की गयी।

२९ मई—सार्वजनिक अशान्ति तथा प्रत्यक्ष विरोधके चालू रहनेके कारण शासनने मास्कोमें मार्शल ला घोषित कर दिया।

३० जून—मास्को द्वारा यह घोषणा की गयी कि हड़ताल या किसी भी रूपमें कामको बन्द कर देना देशद्रोह है।

६ जुलाई—मास्को, पेट्रोग्राड, यारोस्लाव तथा २३ अन्य मध्यवर्ती रूसी नगरोंमें शासनके विरुद्ध विद्रोह हो गया।

१२ जुलाई—साम्यवादी आदेशसे सोवियट स्कूलोंमें धार्मिक शिक्षापर पाबन्दी लगा दी गयी।

१६ जुलाई—जार निकोलस द्वितीय, अपने परिवार और बच्चोंके साथ इकेटेरिनबर्ग (वर्त्तमान स्वेर्डलोवस्क) के मकानके उस तहखानेमें कत्ल कर दिये गये, जहां वे कैद थे।

२१ जुलाई—श्रमिकोंके प्रतिनिधियोंके सम्मेलनमें शासनकी आर्थिक नीतियोंकी आलोचना की गयी। समस्त प्रतिनिधि गिरफ्तार कर लिये गये।

७ अगस्त—साम्यवादी शासनके विरुद्ध ईजहयस्क तथा वोटकिन्स्कके श्रमिकोंने विद्रोह किया।

३०-३१ अगस्त—लेनिनकी हत्याकी चेष्टा की गयी, जिसमें वे घायल हो गये पेट्रोग्राडमें खुफिया पुलिस चेकाका एक अधिकारी कत्ल कर दिया गया। लेनिनने भीषण दमनकी आज्ञा दी।

२१ नवम्बर—साम्यवादी शासनने सोवियट रूसमें गैर-सरकारी व्यापारपर रोक लगा दी।

१९१९

२ मार्च—साम्यवादी क्रान्तिकारी सिद्धान्तको संसार भरमें फैलानेके लिए लेनिन द्वारा तृतीय (साम्यवादी) अन्तरराष्ट्रीय संस्थाकी स्थापना की गयी।

१९२०

७ मई—स्वतन्त्र जार्जियन गणतन्त्रके साथ मास्कोने सन्धि की, जिसमें जार्जियाके आंतरिक मामलोंमें हस्तक्षेप न करनेका उसने वायदा किया।

अगस्त—टमबोफ प्रान्तमें किसानोंने विद्रोह किया। यह जून १९२१ तक चालू रहा। अन्तमें फौजोंने इसका दमन कर दिया।

२९ नवम्बर—रूसी यूनियनने आर्थिक 'राष्ट्रीयकरण' को पूर्ण कर लेनेके बाद ऐसे व्यवसायोंको साम्यवादी नियन्त्रणमें ले लेनेका आदेश दिया, जिनमें १० से अधिक व्यक्ति (शक्ति-चालित कारखानोंमें ५ व्यक्ति) कार्य करते हों।

१९२१

११-१२ फरवरी—रूसी फौजोंने जार्जियापर आक्रमण कर दिया।

८-१६ मार्च—साम्यवादी दलकी १० वीं कांग्रेसने केन्द्रीय समितिको पूर्ण अधिकार दे दिया कि वह दलीय नीतियोंके समस्त विरोधको समाप्त कर सकती है। १९२४ तक यह आदेश सार्वजनिक रूपमें प्रकाशित नहीं किया गया। इस आदेशसे बादकी रूसी 'शुद्धियों' का संकेत मिलता है।

१७ मार्च—क्रानस्टैटमें मल्लाहोंका आम विद्रोह शुरू हो गया। सेनाओंने १० दिन तक मोर्चा लेनेके बाद भीषण कत्लेआमके उपरान्त विद्रोहियोंको नष्ट किया।

११ अगस्त—बढ़ रहे असन्तोषको दूर करनेकी अपनी चेष्टाके फलस्वरूप सोवियट शासनने अपनी नयी आर्थिक नीति चालू की। अपेक्षाकृत उदार आर्थिक अनुशासन चालू रहा।

१९२२

६ फरवरी—खुफिया पुलिसका नाम चेकासे बदलकर ओ जी पी यू (ओगपू) रख दिया गया।

८ जून—साम्यवादी शासनने समाजवादी क्रान्तिकारी दलके नेताओंकी समाप्तिके लिए कदम उठाया। उक्त दल द्वारा लेनिनकी बहुत-सी नीतियों, विशेषकर खुफिया पुलिसको सौंपे गये कार्योंका विरोध किया गया था।

३० दिसम्बर—सोवियट कांग्रेसने सोवियट समाजवादी गणतन्त्रकी स्थापनाकी घोषणा की।

१९२३

१७-२५ अप्रैल—लेनिनकी गम्भीर बीमारीके कारण १२ वीं पार्टी कांग्रेस उनकी अनुपस्थितिमें हुई। इसमें स्टालिनने अपने आपको लेनिनका वास्तविक उत्तराधिकारी साबित कर दिया।

२३ अक्तूबर—ट्राटस्कीने दलीय मामलोंकी चर्चामें अधिक स्वाधीनतापर बल दिया। स्टालिन और जिनोवीएवने दलीय एकताको भंग करनेकी चेष्टाकी दृष्टिसे इसकी कड़ी आलोचना की।

५ दिसम्बर—ट्राटस्कीने स्टालिन और उनके अनुयायियोंकी खुली आलोचना की तथा साम्यवादी दलमें अधिक लोकतन्त्री भावना तथा दमनकारी कार्यवाइयोंकी समाप्ति की मांग की।

१९२४

१६-१८ जनवरी—पार्टीकी १३वीं कांग्रेसमें स्टालिनने ट्राटस्की और उनके अनुयायियोंपर यह दोषारोपण किया कि वे दलीय एकताकी लेनिनकी भावनासे दूर चले जा रहे हैं। साम्यवादी दलके आन्तरिक क्षेत्रोंने लोकतन्त्रात्मक ढंगसे चर्चा करनेके सिद्धान्त की निन्दा की।

२१ जनवरी—२६ मई १९२२ से चालू बीमारीसे अन्तमें लेनिनकी मृत्यु हो गयी। उनका उत्तराधिकारी बननेके लिए संघर्ष पूरे जोरशोरसे शुरू हो गया। (लेनिनकी मृत्युके समय जिनोवीएव और कामेनेवको अपने साथ मिलाकर स्टालिनने तीन व्यक्तियोंकी एक टुकड़ी शासन चलानेके लिए बना ली। अन्तमें ये दोनों व्यक्ति भी ट्राटस्कीके साथ 'शुद्धि' के शिकार बन गये।

(उसके कुछ सप्ताह बाद पार्टीने ट्राटस्कीके समर्थकोंकी इस बातके लिए निन्दा की कि वे दलीय अखण्डताकी बोल्शविक भावनाको ऐसी भावनामें परिणत करना चाहते हैं जिसमें विविध प्रकारके झुकाव और मतभेद हों।

१९२६

२१-२३ अक्तूबर—स्टलिनने जिनोवीएव और कामेनेवसे अपना सम्बन्ध समाप्त कर लिया। जिनोवीएव 'कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल' की कार्यसमितिकी अध्यक्षतासे हटा दिये गये तथा कामेनेव 'पोलिटब्यूरो' से पृथक् कर दिये गये। ट्राटस्की भी 'पोलिटब्यूरो

से हटा दिये गये। ट्राटस्की और जिनोवीएव साम्यवादी दलकी केन्द्रीय समितिसे भी पृथक् कर दिये गये।

१९२७

७ नवम्बर—१९१७ की क्रान्तिकी १० वीं वर्षगांठके अवसरपर मास्को और लेनिनग्राडके विरोधी तत्त्वोंकी ओरसे दमनकारी साम्यवादी नीतियोंका विरोध किया गया।

२-१९ दिसम्बर—साम्यवादी दलकी १० वीं कांग्रेसमें स्टालिनने पार्टीपर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया। पूरे तौरपर दलकी नीतियोंपर विश्वास न करनेवालोंकी निन्दा की गयी। ट्राटस्कीका दल समाप्त हो गया। वे कुछ दिन बाद निर्वासित कर दिये गये। इसके बाद उनका पीछा कर अन्तमें मेक्सिकोमें वे कत्ल कर दिये गये।

१९२८

१ अक्तूबर—प्रथम पंचवर्षीय योजनाकी घोषणाके साथ औद्योगीकरणके कार्यक्रमोंपर प्रकाश डाला गया। इसके साथ ही आवश्यक उपभोग्य वस्तुओंके उत्पादनके स्थानपर बुनियादी उद्योगोंको महत्त्व देनेकी नीतिकी शुरुआत हुई, जो निरन्तर चली आ रही है। *कृषिके समूहीकरणके आदेशके साथ स्टालिनने निर्मम तानाशाहीकी शुरुआत की।*

(इसका अन्तिम परिणाम १९३० के बादके वर्षोंमें व्यापक दुर्भिक्षके रूपमें निकला। इस दुर्भिक्षमें लाखों रूसियोंकी जानें गयीं यद्यपि शासनने उस बातकी पूरी कोशिश की कि जो कुछ रूसमें हो रहा है उसकी खबर दुनियाको न लगे, तथापि बादमें स्टालिनने विंस्टन चर्चिलके सम्मुख यह बात स्वीकार की कि उनकी समूहीकरणकी नीतिके फलस्वरूप १ करोड़ रूसी मारे गये।)

१९२९

१०-१७ नवम्बर—प्रमुख साम्यवादी नेता बुखारिन अन्य अनेक सहानुभूति रखनेवाले व्यक्तियोंके साथ केन्द्रीय समितिसे इस बातपर हटा दिये गये कि इन लोगोंने रूसी किसानोंके साथ अधिक उदार नीति बरतनेका सुझाव रखा था।

१९३२

२१ जनवरी—साम्यवादी रूसी शासनने फिनलैण्डसे अनाक्रमण-सन्धि की। (३० नवम्बर, १९३९ को रूसी फौजोंने फिनलैण्डपर आक्रमण किया।)

५ फरवरी—रूसने लाटवियासे अनाक्रमण-सन्धि की। (१९४०में रूसी फौजोंने लाटवियापर आक्रमण कर इसे अपने संघमें सम्मिलित कर लिया।)

४ मई—एस्टोनियाके साथ समझौता कर रूसने उसे आक्रमण न करनेका वचन दिया। (एस्टोनिया और लिथुआनियापर १९४० में रूसी आक्रमण हुआ तथा उन्हें सोवियट संघमें सम्मिलित कर लिया गया। लिथुआनियाके साथ भी १९२६ में रूसने अनाक्रमण-सन्धि की थी।)

२५ जुलाई—मास्कोने पोलैण्डसे अनाक्रमण-सन्धि की। (१९३९ में रूसी सेनाओंने पोलैण्डपर आक्रमण किया तथा नाजी जर्मनीसे मिलकर पोलैण्डके विभाजनका फैसला कर लिया।

१९३४

९ जून—रूसने रूमानियाको प्रभुसत्ता की गारण्टी देते हुए उसे मान्यता प्रदान की। (१९४० में रूसी सेनाओंने रूमानियाके बेसारेबिया तथा बुकोविना प्रान्तोंपर आक्रमण किया तथा १९४४ में अन्य क्षेत्रोंमें भी रूसी सेनाएं प्रविष्ट हो गयीं।

१ दिसम्बर—प्रमुख साम्यवादी अधिकारी सर्गी किरोवकी हत्या हुई। किरोव स्टालिनके मित्र भी और प्रमुख प्रतिद्वन्दी भी समझे जाते थे। किरोवकी मृत्यु साम्यवादी खुफिया पुलिस द्वारा की गयी बताते हैं।

(किरोवकी मृत्युसे आतंककी एक नयी लहरके लिए अवसर उपस्थित हो गया। यह लहर १९३६-३८ की 'व्यापक शुद्धि'के रूपमें अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी। शासनने इस बीच किसानों, अर्थ-व्यवस्था तथा अन्य नीतियोंके फलस्वरूप उत्पन्न असन्तोष का दमन किया और अपनी स्थिति मजबूत बना ली। इस कालमें 'मुकदमों' और 'अपराध स्वीकार करनेकी प्रवृत्ति' सामान्य हो गयी थी। यह बात 'औद्योगिक दल'के नेता लिओनिड रमजीनपर दिसम्बर १९३० में शासनको उलट देनेकी योजना बनानेके सम्बन्ध में लगाये गये आरोपसे स्पष्ट है। इसी कालमें रूसी श्रमिकोंने सामूहिक सौदेबाजी करनेका अपना अन्तिम अवशिष्ट अधिकार भी खो दिया।)

१९३६

१९-२४ अगस्त—भूतपूर्व पार्टी नेताओंकी पूर्ण शुद्धि शुरू हो गयी तथा १६ प्रमुख व्यक्तियोंको मृत्यु दण्ड दिया गया। इनमें जार्जी जिनोवीएव, कामेनेव तथा अन्य पुराने साम्यवादी सम्मिलित थे।

५ दिसम्बर—नया 'लोकतन्त्री' संविधान स्वीकृत किया गया। इससे मास्कोके प्रत्यक्ष नियन्त्रणमें रूस, यूक्रेन, बाइलोरशिया, अजरबैजान, जार्जिया, आर्मीनिया, तुर्कमीनिया, उजबेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कजाकस्तान और किरगीजस्तान आ गये।

१९३७

२३-३० जनवरी—'प्रमुख शुद्धि' सम्बन्धी दूसरे मुकदमेमें १३ अन्य पुराने साम्यवादियोंको मृत्युदण्ड दिया गया। इनमें प्रसिद्ध अर्थशास्त्री यूरी प्याटाकोव तथा साम्यवादी दलकी केन्द्रीय समितिके भूतपूर्व मन्त्री सिरेब्रायाकोव भी सम्मिलित थे जो १९०९ से सक्रिय क्रान्तिकारी चले आ रहे थे। चार अन्य व्यक्तियोंको कैद कर लिया तथा उनके राजनीतिक अधिकार छीन लिये गये। इनमें कोमिण्टर्नके भूतपूर्व मन्त्री कार्ल रेडेक भी सम्मिलित थे।

१९३७

१२ जून—रूसी सेनाको यान्त्रिक स्वरूप प्रदान करनेवाले प्रमुख सैनिक नेता मार्शल तुखाचेवस्की ७ अन्य उच्च जनरलोंके साथ देश-द्रोहके अपराधमें फांसीपर लटका दिये गये। खुफिया पुलिसके फन्देसे बचनेके लिए जनरल गमरनिकने स्वयं आत्महत्या कर ली।

१९ दिसम्बर—मास्कोने साम्यवादी दलके ८ अन्य नेताओंको मृत्युदण्ड देनेकी घोषणा की।

१९३८

२–१३ मार्च—'प्रमुख शुद्धि' सम्बन्धी तीसरे मुकदमेमें अन्य १८ प्रमुख साम्यवादी गोलीसे उड़ा दिये गये। इनमें एलेक्सी राकोव, निकोलाई बुखारिन, एच० जी० यागोडा तथा निकोलाई क्रेस्टिन्स्की जैसे व्यक्ति सम्मिलित थे। तीन व्यक्तियोंको कैद कर उनके राजनीतिक अधिकार छीन लिये गये। इनमें सी० जी० राकोवस्की भी शामिल थे। आप थर्ड इण्टरनेशनलके संस्थापक तथा लेनिनके घनिष्ठ सहयोगी थे।

१९३९

३ मई—१८ वर्षकी सेवाके बाद मैक्सिम लिटविनाफ विदेशी मामलोंके 'कमिसार' के पदसे हटा दिये गये तथा इस स्थानपर वी० एम० मोलोटोव नियुक्त हुए।

२३ अगस्त—रूसने नाजी जर्मनीसे मैत्री समझौता कर लिया। इस समझौतेमें पोलैण्डके बंटवारेकी गुप्त धारा भी सम्मिलित थी।

१ सितम्बर—द्वितीय विश्वयुद्धकी शुरुआत। रूसने 'तटस्थता'की नीति अपना ली।

१७–२९ सितम्बर—नाजियोंका पक्ष ले कर रूस युद्धमें शामिल हो गया। रूसी फौजोंने पूर्वकी ओरसे पोलैण्डपर आक्रमण कर दिया। नाजियोंके साथ किये गये बंटवारेके अनुसार उन्होंने पूर्वी पोलैण्डपर अधिकार कर लिया।

३० नवम्बर—रूसी फौजोंने तीन ओरसे फिनलैण्डपर आक्रमण कर दिया। इससे पूर्व फिनलैण्डने रूसकी राजनीतिक मांगें ठुकरा दी थीं।

१४ दिसम्बर—फिनलैण्डपर आक्रमण करनेके कारण रूस राष्ट्र-संघसे निकाल दिया गया। (१५ सितम्बर, १९३४ को रूस राष्ट्र-संघमें सम्मिलित हुआ था तथा उसने यह वचन दिया था कि वह न्यायकी स्थापना करेगा तथा समस्त सन्धिगत उत्तरदायित्वोंको पूर्ण सम्मानकी दृष्टिसे देखेगा।)

१९४०

११–१२ मार्च—सैन्य बल कम होनेके कारण फिनलैण्डकी फौजें पराजित हो गयीं तथा रूसने ४॥ लाख व्यक्तियों द्वारा आबाद क्षेत्र अपने कब्जेमें ले लिया।

२० अगस्त—भूतपूर्व रूसी साम्यवादी नेता ट्राटस्की, जो १९१९में रूससे निर्वासित कर दिये गये थे, मैक्सिकोमें कत्ल कर दिये गये।

१९४१

२२ जून—नाजी फौजोंने रूसपर आक्रमण कर दिया।

२३ जून—अमेरिका और ब्रिटेनने नाजी आक्रमणके विरुद्ध रूसकी सहायता करने की घोषणा की। अत्यधिक आवश्यक सामग्री प्राप्त करानेकी दृष्टिसे अमेरिकाने १ अरब डालरकी रकम उधार-पट्टेके रूपमें देना स्वीकार कर लिया।

११ दिसंबर—अमेरिका रूसका मित्र राष्ट्र बन गया तथा इटली और जर्मनी द्वारा अमेरिकाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा करनेके उपरान्त वह द्वितीय विश्व-युद्धमें सम्मिलित हो गया।

१९४२

जून—अमेरिकाने उधार-पट्टेके रूपमें रूसको दी जानेवाली रकम तिगुनी अर्थात् ३ अरब डालर कर दी।

१९४३

२५ अप्रैल—पोलैण्डके काटिन जंगलमें रूसियों द्वारा पोल लोगोंका कत्ले-आम किये जानेके सम्बन्धमें पोलैण्डने रेड क्रासके जरिये छानबीन करवानेका आग्रह किया, जिसके कारण सोवियट रूसने पोलैण्डकी निर्वासित सरकारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। (३० जून, १९४१ के समझौतेके अनुसार रूसियोंने पोलैण्डकी निर्वासित सरकारको पारस्परिक सहायता और सहयोग देनेका वचन दिया था।)

जुलाई—अमेरिका और ब्रिटेनसे बड़े पैमानेपर युद्ध-सामग्री रूस पहुंची। ६५०० हवाई जहाज, १३८,००० मोटर गाड़ियां और इस्पात तथा औद्योगिक मशीनोंसे भरे कई जहाज रूस पहुंचे।

१९४४

१९-३० जुलाई—मास्को रेडियोने वारसाके लोगोंसे पोलिश भाषामें अपील की कि वे नाजियोंपर हमला करके सोवियट सेनाकी मदद करें।

१ अगस्त—पोलैण्डकी गृह-सेनाने वारसाका ऐतिहासिक विद्रोह शुरू कर दिया। किन्तु सोवियट सेनाएं शहरके बाहर ही रहीं और उन्होंने मास्को द्वारा निर्दिष्ट प्रतिरोध में पोल लोगोंको मदद नहीं दी। (पोल लोगोंका वीरतापूर्ण संघर्ष ३ अक्तूबर १९४४ को खतम हो गया और वारसाके २५०,००० नागरिक मारे गये तथा नगर खण्डहरोंका ढेर बन गया)

९ सितम्बर—बल्गेरियामें सोवियट रूस द्वारा समर्थित सरकार कायम की गयी।

१९४५

२७ फरवरी—रूमानियाके शाह माइकेलको मुहलत दी गयी कि वे रूसी मांगें मंजूर कर लें। इसका फल बादमें यह हुआ कि वहां रूसकी छत्रछायामें सरकार कायम की गयी।

७ मई—नाजी जर्मनीने दूसरे विश्व-युद्धके मित्र देशोंके आगे बिना शर्त आत्म-समर्पण करनेके कागजपर हस्ताक्षर कर दिये।

१७ जुलाई-२ अगस्त—पाट्सडम-सम्मेलनमें रूसने यह स्वीकार किया कि समस्त जर्मनीमें जर्मन लोगोंके साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिये।

८ अगस्त—युद्ध समाप्त होनेसे कुछ ही दिन पहले रूस जापानके खिलाफ लड़ाईमें शामिल हो गया और उसके बाद रूसियोंने मंचूरिया, काराफूतो, क्युराइल टापुओं और उत्तरी कोरियापर कब्जा कर लिया।

१९४७

२६ मई—सोवियट रूसने शान्तिकालमें प्राणदण्ड देनेकी व्यवस्थाका 'खात्मा' कर दिया (पर १२ जनवरी १९५० को प्राणदण्ड देनेका फिरसे विधान कर दिया।)

६ अक्तूबर—मास्कोने सूचित किया कि विभिन्न देशोंकी साम्यवादी पार्टियोंकी हल-चलोंमें सामंजस्य लानेके लिए 'कोमिन्फार्म (कम्युनिस्ट इन्फार्मेशन ब्यूरो) कायम किया गया है।

३० दिसम्बर—रूमानियामें कम्युनिस्ट शासन हो गया। शाह माइकेलने गद्दी छोड़ दी।

१९४८

२५ फरवरी—रूस द्वारा समर्थित साम्यवादी दलने चेकोस्लोवाकियामें शासन-सत्ता पर अधिकार किया।

२० मार्च—रूसके प्रतिनिधि मार्शल सोकोलोवस्की बर्लिनमें ४ देशोंके अधिकार-मण्डलकी बैठकसे बाहर निकल आये और इस प्रकार नगर-शासनकी संयुक्त बैठकें खत्म हो गयीं।

२४ जून—रूसियोंने पश्चिमी बर्लिनसे स्थलीय और जलीय यातायातके सब मार्ग बन्द कर दिये। (इसके फलस्वरूप बर्लिनमें हवाई जहाजोंसे माल आदि पहुंचानेका काम शुरू हुआ और मित्र-देशोंने ४६२ दिनोंतक इसे जारी रखा। ३० सितम्बर, १९४९ को जब बर्लिनकी घेराबन्दी खत्म होनेके साथ हवाई जहाजोंसे माल ढोना बन्द हुआ तो उस समयतक २,७७,२६४ हवाई उड़ानें करके २३,४३,३०,२०५ टन माल वहां पहुंचाया गया था।)

२८ जून—टीटो द्वारा मास्कोकी प्रभुता अस्वीकार की जानेके कारण यूगोस्लाविया 'कोमिन्फार्म' से निकाल दिया गया।

१९४९

२७ अप्रैल—सोवियट श्रम-संघटनोंकी कांग्रेसका अधिवेशन १७ साल बाद हुआ।

२९ सितंबर—'राष्ट्रीय साम्यवाद' की नयी व्याख्या करते हुए रूसने यूगोस्लाविया के साथ १९४५ में की गयी मित्रता और पारस्परिक सहायता-सन्धिकी निन्दा की।

१ अक्तूबर—साम्यवादियोंने चीनमें शासन-सत्ता पर अधिकार जमानेकी घोषणा की। सोवियट रूसने तुरन्त उसे कूटनीतिक मान्यता दे दी।

१९५०

२५–२९ जून—साम्यवादी सेनाओंने दक्षिण कोरियापर चढ़ाई कर दी। सोवियट रूसने यह शिकायत की कि संयुक्तराष्ट्र-संघने आक्रमणके शिकार बने दक्षिणी कोरियाको सैनिक सहायता देनेका निश्चय करके गैरकानूनी कार्यवाही की है।

१९५२

५–१५ अक्तूबर—सोवियट साम्यवादी दलकी कांग्रेसका १९ वां अधिवेशन १३ साल बाद हुआ, जिसमें मूल उद्योगोंपर जोर कायम रहनेकी बात कही गयी। संसार भरमें साम्यवादी दलोंसे अनुरोध किया गया कि वे रूस-समर्थित क्रान्तिकारी विचारधाराकी गति को तेज करनेके लिए 'राष्ट्रीय' आन्दोलनोंके साथ मिलजुल कर काम करें।

१९५३

५ मार्च—सोवियट रूसके सर्वेसर्वा स्टालिनका अन्त हो गया।

१७ जून—पूर्वी बर्लिनमें मजदूरों द्वारा साम्यवादी व्यवस्थाके विरुद्ध किये गये विद्रोहको कुचलनेके लिए रूसी सेनाएं पूर्वी जर्मनीमें भेजी गयीं। २५,००० रूसी सैनिकोंने टैंकोंकी मददसे दो दिनमें इस विद्रोहका दमन किया। सरकारी आंकड़ोंके अनुसार पूर्वी जर्मनीके २७४ गांवों और कस्बोंमें दण्डात्मक कार्यवाहियोंके सिलसिलेमें ५६९ व्यक्ति मारे गये, १७४४ घायल हुए और ५०,००० गिरफ्तार किये गये।

१९५४

२५ मार्च—सोवियट रूसने पूर्वी जर्मनीको पूर्ण प्रभुसत्ता प्रदान कर दी, पर रूसी सेना और अधिकारी वहांसे नहीं हटाये।

१७ अगस्त—'समाजवादी यथार्थता'के मूलभूत साम्यवादी सिद्धान्तकी आलोचना करनेवाले लेख प्रकाशित करनेपर, रूसकी साहित्यिक पत्रिका 'नोवी मीर' (मासिक)के सम्पादक अलक्जेण्डर त्वारदोवस्की पदच्युत कर दिये गये।

१९५५

२७ मई—ख्रुश्चेव और बुलगानिन मार्शल टीटोको मनाने बेलग्रेड पहुंचे।

१९५६

१८ मार्च—कोमिनफार्म भंग कर दिया गया।

२८ जून—पोलैण्डके पोजनान शहरमें 'रोटी और आजादी'के नारेको लेकर बगावत हुई।

३ सितम्बर—मास्कोकी केन्द्रीय समितिने पूर्वी यूरोपके अन्य कम्युनिस्ट देशोंको 'गुप्त' हिदायतें भेजकर चेतावनी दी कि वे टीटोके 'राष्ट्रीय साम्यवाद'की नीतिके 'अनेक मार्गों'को न अपनायें।

१९-२१ अक्टूबर—राष्ट्रीयताकी प्रवृत्तिके जोर पकड़ते जानेके साथ, पोलैण्डके साम्य-वादी दलके ८ वें सम्मेलनने ब्लाडिस्लाव गोमुल्काको फिर नेता चुन लिया। कुछ ही समय पहले 'टीटोवादी' गोमुल्काको, 'राष्ट्रीयतावादी मार्गानुसरण'के कारण कैदकी सजा भुगतनेके बाद, दलका फिरसे सदस्य बना लिया गया था।

२३ अक्तूबर-४ नवम्बर—बुडापेस्टमें छात्रों और श्रमिकोंने शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किये, पर जब सोवियट-नियन्त्रित पुलिसने भीड़पर गोलियां चलायीं तो प्रदर्शनोंने साम्यवादी शासनके विरुद्ध खुले विद्रोहका रूप धारण कर लिया। घमासान लड़ाई और रक्तपातके बाद मास्कोने अपनी फौजें हटा लेनेका वचन दिया। तथापि, सोवियट सेनाएं हट कर राजधानीके उपनगरोंमें जमा हो गयीं और रूसकी अन्य फौज टुकड़ियोंने समूचे हंगरी में राष्ट्रवादियोंके ठिकानोंपर भारी हमले शुरु कर दिये।

५ नवम्बर—रूसी फौजोंने हंगरीके उपद्रवको पूरी तरह कुचल डालनेके लिए अपनी कार्यवाही अनवरत रूपसे जारी रखी। जानोस कादार प्रधानमन्त्रीके रूपमें नियुक्त किये गये। स्वाधीनता-संग्रामके हजारों सैनिक कैद कर लिये गये या निर्वासित कर दिये गये। मजदूरोंने मुकाबला जारी रखा और उत्पादन बहुत घट गया। हंगरीसे भाग कर हजारों शरणार्थियों ने लोकतन्त्री देशोंमें शरण ली। संसारमें रूसी कार्यवाहियोंकी खूब आलोचना की गयी और सोवियट साम्यवादकी प्रतिष्ठा बहुत गिर गयी। अनेक देशोंके साम्यवादी नेताओंने अपनी गलतफहमियां दूर होनेकी बात स्वीकार की।

१९५७

१२ मार्च—मास्कोने 'राष्ट्रीय साम्यवाद'के दृष्टिकोणकी निन्दा की। 'प्रावदा'ने पूर्वी यूरोपके कम्युनिस्ट देशोंको चेतावनी दी कि उन्हें सोवियट रूसके आदेशोंका पालन करने का रवैया जारी रखना होगा।

२७ मई—सोवियट रूस और हंगरीकी कादार-सरकारमें इस बातपर सहमति हो गयी कि हंगरीमें रूसी फौजें 'अस्थायी तौरपर' विद्यमान रहें। रूसकी सेनाएं दूसरे विश्व-युद्धके बादसे ही 'अस्थायी तौर पर' हंगरीमें विद्यमान हैं।

२३-२४ अगस्त—रूसने दूरमारक प्रक्षेपणास्त्र छोड़नेका एलान किया। अक्तूबरमें उसने पहला स्पुटनिक भी छोड़ा।

२८ अगस्त—'प्रावदा'ने ख्रुश्चेवकी यह चेतावनी प्रकाशित की कि सोवियट लेखकोंको साम्यवादी दलके साहित्यिक नियमोंकी अवहेलना बन्द कर देनी चाहिये।

१४ सितम्बर—संयुक्तराष्ट्र-संघने १०के विरुद्ध ६० मतोंसे अपनी विशेष जांच-समिति

की उस रिपोर्टको सम्पुष्ट किया जो हंगरीके स्वातन्त्र्य-विद्रोहके सम्बन्धमें २० जूनको प्रकाशित हुई थी और हंगरीमें सशस्त्र हस्तक्षेप किये जानेपर रूसकी निन्दा की।

१९५८

मार्च—संसारके कम्युनिस्ट आंदोलनके सांस्कृतिक पक्षको सामने रखनेके लिए एक मुख्य पत्र निकालनेका निश्चय मास्कोमें हुआ।

अक्तूबर—रूसी लेखक पैस्टरनाकको सोवियट लेखक संघ द्वारा हुई असहनशीलताके फलस्वरूप १९५८ का साहित्यका नोबुल पुरस्कार अस्वीकृत करना पड़ा।

——:o:——

(१५)

भारत और रूसके बदलते सम्बन्ध

पिछले ४-५ वर्षोंसे भारतीय जनताके प्रति रूसी जनतामें असाधारण सद्भाव और प्रेम जागृत हुआ है। इसका प्रधान कारण रूसी या सोवियट संघकी कम्युनिस्ट पार्टीके और सोवियट सरकारके नेताओंका बदला हुआ रुख ही है। स्टालिन-युगमें भारतीय स्वतंत्रताके बाद भी नेहरूजी जैसे लोकप्रिय भारतीय नेताको 'कोमिनफार्म'के अखबारमें साम्राज्यवादियोंका दलाल (हेन्चमैन)' कहा जाता रहा। १९५३ में स्टालिनकी मृत्युके बाद नये रूसी नेताओंको अपने देशकी भौतिक प्रगतिसे इतना आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ कि अपनी परराष्ट्रनीति बदलनेमें उन्हें कोई हिचक न हुई, उनका साहस खुला। दुनियामें होनेवाली वैज्ञानिक-प्राविधिक तीव्र प्रगतिसे यह भी स्पष्ट हो गया कि औद्योगिक दृष्टिसे अमेरिका जैसे जो बहुत उन्नत देश हैं वहां 'प्रोलातारियत' वर्ग रहा ही नहीं, सभी 'बुर्ज्वा' हो गये हैं। जबरदस्ती उलटफेर या सोवियट सेनाका डर दिखाकर भी उन देशोंमें कम्युनिस्ट क्रांति नहीं की जा सकती! बस एक केवल 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' और स्वस्थ स्पर्द्धासे ही कम्युनिस्ट वैचारिक क्रांति हो सकती है।

पर अफ्रीका और एशियाके बारेमें यह बात नहीं थी। यहां यूरोपीय साम्राज्यवादियोंका २-३ शताब्दियोंसे बोलबाला था, पर दो-दो महायुद्धोंके कारण यूरोपके देश आर्थिक दृष्टिसे विपन्न और एशिया-अफ्रीकामें बढ़ती हुई राष्ट्रीय जागृतिको दबानेमें असमर्थ हो गये थे। एकके बाद एक एशिया-अफ्रीकाके देश स्वतंत्र होते जाते थे। पर दुनियाकी सारी गरीबी यहीं बंटी थी। जनता अपनी भौतिक उन्नति करनेको बेसब्र हो गयी थी, उसमें अधिक दिन सहिष्णुता और धैर्यसे रहने और मेहनत कर धीरे-धीरे अपना जीवनस्तर ऊंचा करनेकी सहनशीलता रह नहीं गयी थी। एक तरहका 'नेतृत्वका वेकुअम' उत्पन्न हो गया था। यह पोलापन भरनेके लिए अमेरिकाके पास डालर थे और रूसके पास नये समाजवादी विचार थे। सम्पन्न अमेरिका रूससे वैसा ही डर रहा था जैसे कोई रईस

रातभर तस्करोंके भयसे जागता ही रहता है। कम्युनिज्मका हौवा उसे दिन रात डरा रहा था। जो भी पंचाक्षरी कहता कि हम इस भूतको भगा सकते हैं उसको वह अपने डालर मुक्त हस्तसे लुटाने लगा। पर एशिया-अफ्रिकाके गरीब देशोंकी तरफ डालर इस प्रकार फेंकने लगा जैसे कोई चिड़ियोंके झुंडके सामने दाना फेंकता हो। इससे इन देशों की जनताका मन दुखा और स्वाभिमान जगा और अमेरिकी डालर संदेहकी दृष्टिसे देखे जाने लगे। जो देश रूसकी समाजवादी और व्यक्ति-विरोधीवादी विचार प्रणालीसे डरते थे उन्हें भी अमेरिकाकी तुलनामें यह डर कम लगने लगा।

नीति बदली

ऐसे ही परिवर्तनशील समयमें स्टालिनकी मृत्यु हुई और रूस अपनी परराष्ट्रनीतिको नया मोड़ दे सका। उसने यह भी सोचा कि दुनियाके दो बड़े कैम्पोंके साथ जो देश नहीं हैं उन तटस्थ देशोंको भी अपनी तरफ खींचना इस समय अमेरिकाको कमजोर बनानेमें सहायक होगा। चीन कम्युनिस्ट हो ही चुका था। तटस्थ भारत यदि रूसका मित्र हो जाय तो दुनियाकी आधी जनसंख्या एक तरफ हो जाती थी। ये सब बातें सोचकर रूसने सन् १९५३ में भारतको मित्र बनानेका प्रयत्न करना शुरू किया। रूसी अखबारोंने, जिन्हें सरकार चलाती है, अपनी भारत-संबंधी नीति बदल दी। अखबारों और रेडियोमें भारतकी प्रशंसा होने लगी। जनताकी राय भी अखबार और रेडियो ही वहां 'कण्डीशन' करते हैं इससे जनतामें भी धीरे-धीरे भारतके प्रति प्रेम-भाव जाग्रत होने लगा।

८ फरवरी सन् १९५५ को मास्कोमें सुप्रीम सोवियटकी बैठकमें (इसीमें स्टालिनके उत्तराधिकारी मालेनकोवने प्रधान मंत्रित्वसे इस्तीफा दिया और क्रुश्चेवके प्रस्तावपर बुलगानिन नये प्रधान मन्त्री बनाये गये थे) परराष्ट्र मन्त्री मोलोटोवने विदेश-नीतिके संबंधमें जो रिपोर्ट दी उसमें अधिकारी रूपसे पहले-पहले रूसकी भारत विषयककी नयी नीति प्रकट हुई। मोलोटोवने अपने भाषणमें कम्युनिस्ट देशोंसे अपनी मैत्रीका विवरण देनेके बाद (जिसमें उन्होंने पहले-पहल कम्युनिस्ट देशोंके नेतृत्वमें रूसके साथ चीनको भी बराबरीका पद दिया) सबसे पहले भारतकी चर्चा की। कहा कि 'यह महान् ऐतिहासिक सत्य मानना पड़ेगा कि दुनियामें अब उपनिवेशके रूपमें भारतका अस्तित्व नहीं है, पर भारत अब गणतंत्र हो गया है। युद्धोत्तर एशियामें हुए परिवर्तनोंमें यह एक महान् घटना मानी जानी चाहिये।' श्री मोलोटोवने भारतकी शांति और मैत्रीकी नीतिकी भी प्रशंसा की।

मोलोटोवके भाषणके कुछ ही दिन पहले रूसने भारतकी आर्थिक सहायता करना भी शुरू किया था। दोनों देशोंमें एक समझौता हुआ था जिसके अनुसार रूसने कम ब्याज की दरपर लंबी मुद्दतका कर्ज देकर उस धनसे भारतमें प्रतिवर्ष १० लाख टन कच्चा लोहा और उतना ही इस्पात तैयार करनेका बड़ा कारखाना खड़ा कर देना स्वीकार किया।

बुल्गानिन-ख्रुश्चेवकी भारत-यात्रा

सन् १९५५ के जून महीनेमें भारतके प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू रूस गये और उनका वहाँ बड़ी धूम-धामसे स्वागत हुआ। इसके जवाबमें कुछ महीनों बाद दिसंबरमें उसी साल उस समयके रूसी प्रधान मंत्री बुल्गानिन और कम्युनिस्ट पार्टीके सेक्रेटरी निकिता ख्रुश्चेव भारत आये। इन लोगोंने दिसंबरमें सुप्रीम सोवियटको अपनी भारत-बर्मा-अफगानिस्तानकी यात्राके बारेमें जो रिपोर्ट दी उसमें कहा गया था—'इतिहासमें सन् १९५५, हालके युगमें उत्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय तनावकी परिस्थितिमें कुछ परिवर्तन लानेवाला वर्ष माना जायगा। विभिन्न राज्योंमें विश्वासकी भावना मजबूत करने तथा उनकी सामाजिक और राजनीतिक प्रणालियोंका विचार किये बिना विभिन्न देशोंके बीच व्यापक राजनीतिक, आर्थिक-सांस्कृतिक संबंध बढ़ानेकी दिशामें सोवियट संघने जो प्रयास किया अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिमें यह परिवर्तन लानेमें उसका महत्त्व मामूली नहीं है। हम भारतमें तीन सप्ताह रहे। पूरे समय हम भारतीय जनताके प्रेम और मैत्रीके वातावरणमें घिरे रहे, वहाँ हमने जो देखा और जो सुना वह हमारी आशाओंसे कहीं ज्यादा था। हमें लगा कि हम सोवियट जनताके सच्चे मित्रों और अपने भाइयोंके बीचमें आ गये हैं। 'हिन्दी-रूसी भाई-भाई' आदि शब्द भारतीय जनताकी सच्ची और हार्दिक भावनाओंको व्यक्त कर रहे थे। कलकत्तेमें ३० लाखसे अधिक व्यक्ति हमसे मिलने वहाँकी सड़कोंपर एकत्र थे। भारतके प्रधान मंत्री श्री नेहरूने, जो हमारे युगके अग्रगण्य राजनीतिज्ञ हैं, हमारी भेंट अत्यंत मैत्रीपूर्ण ढंग की थी। भाखरा-नंगल योजनाने हमें आपकी पंचवर्षीय योजनाकी याद दिला दी जब हम अपने विशाल कल कारखानोंको जन्म दे रहे थे। हम सरकार द्वारा संचालित फार्मोंको देखने गये। वे निस्संदेह प्रयोगात्मक फार्मोंकी भूमिका अदा कर रहे हैं। १३ दिसंबरको हम दोनों देशोंके प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षरित अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्वके दस्तावेजमें हमने पंचशीलके सिद्धान्तोंमें अपनी निष्ठा की पुनरावृत्ति की है। महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नोंपर सोवियट संघ और भारतका मन्तव्य अस्थायी कारणों अथवा किसी परिस्थिति विशेषकी बाध्यताके आधारपर नहीं समझा जा सकता। भारतकी शांतिप्रियताकी नीतिकी भी गहरी बुनियाद है जो भारतीय राष्ट्रके विकासकी प्रकृतिमें निहित है।···आर्थिक मामलोंमें हमने स्वीकार किया कि १९५६-५७-५८ इन तीन वर्षोंमें सोवियट संघ भारतको १० लाख टन बेल्लित लोह धातु देगा। विभिन्न औद्योगिक सज्जायें और दूसरे सामान भी दिये जायंगे। सोवियट संघ भारतीय मालकी अपनी खरीद बढ़ा देगा। दोनों देशोंके बंदरगाहोंके बीच नियमित जहाजरानीका विकास और नियमित विमान सेवा संघटित करनेका भी निश्चय हुआ। एक दूसरेके अनुभवोंसे लाभ उठानेका भी हमने निश्चय किया। आर्थिक निर्माणके अपने अनुभव हम भारतको बतायेंगे और हम भारतके अनुभवों से जिनकी संस्कृति सदियों पुरानी है, सीखनेको तैयार हैं और हमें उसके अनुभवोंका

मजबूत करना चाहिये । दोनों देशोंके बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाना दोनों चाहते हैं। हमें भारतीय जनताकी विराट रचनात्मक योग्यताओंका विश्वास हो गया। हमारी यात्राने दोनों देशोंको मित्रतामें बांधनेवाला सूत्र काफी मजबूत हुआ। हमारी यात्राने यह सिद्ध किया कि विभिन्न देशोंकी जनताके बीच पारस्परिक सद्भावनाको सुदृढ़ करने तथा अंतर-राष्ट्रीय तनातनीमें कमी करनेके साधनके रूपमें प्रमुख राजनेताओंके वैयक्तिक सम्पर्कका कितना महत्त्व है।'

३०० साल पहलेकी भारतीय बस्ती

बुल्गानिन और ख्रुश्चेवकी भारत यात्राके बाद तो रूस-भारतमें मैत्री-सम्बन्ध तेजीसे बढ़ने लगा। इसका विवरण मैं आगे चलकर दूँगा। यहाँ रूस-भारतके प्राचीन सम्पर्कका कुछ इतिहास दिया जा रहा है—

वैसे रूस गये और भारत गये ४००० वर्ष पहलेके आर्योंके बारेमें मैं इसी पुस्तकके पृष्ठ ८ पर कुछ बातें लिख चुका हूं और बतलाया है कि आर्य घुमक्कड़ टोलियां अपने मूलस्थानसे निकलकर यूरोपमें अतलान्तकसे लेकर एशियामें गंगातक फैलकर बस रही थीं और 'रूसी-हिन्दी भाई-भाई'का नारा ऐतिहासिक तथ्यपर भी खरा उतरा है। पर उन टोलियोंके बसनेके बाद १५वीं सदीतक भारत और रूसमें कोई सम्पर्क नहीं था। भारतके बारेमें उसके अपार वैभव आदिकी कहानियाँ रूस अवश्य पहुंचती रहीं पर एक तो रूससे भारत आनेका मार्ग बड़ा बीहड़ था और दूसरे रूस स्वतः इतना बड़ा देश और इतना सम्पन्न देश था कि उसे दूर-दूर बाहर जाकर व्यापार करनेकी आवश्यकता नहीं थी। फिर भी छिटपुट व्यापारियोंके काफिले एक देशसे दूसरे देशमें जाते रहे और ऐसे व्यापारियोंमेंसे एक अफनासी निकितिनकी सन् १४६९ में की गयी भारत-यात्राका लिखित वर्णन भारत-रूस सम्पर्कका पहला सबूत मिलता है। उसकी डायरीमें भारत-यात्रा-वर्णनका नाम 'वायेज बियाण्ड थ्री सीज' (तीन सागरोंके पारकी यात्रा) है। हाल में एक और अरबी हस्तलिखित मिला है जिसमें १५वीं सदीके अतुर्जाक समरकंदी नामका एक और यात्रीका भारत-यात्रा वर्णन लिखा हुआ है। यह हस्तलिपि ताशकंदकी विज्ञान अकादमीकी लाइब्रेरीमें रखी गयी है।

वोल्गा नदीके मुहानेके पास आस्त्राखान नामका एक बड़ा शहर है जिसके एक बड़े मुहल्लेका नाम 'इण्डिस्काया' (भारतीय) बहुत प्राचीन समयसे, ३०० वर्षोंसे, चला आ रहा है। यह शहर रूसके उस समयके विदेश व्यापारका प्रधान केन्द्र था और यहाँ विदेशी व्यापारियोंकी बस्तियाँ भी बस गयी थीं। सन् १६२० के बाद भारतीय व्यापारी भी रूसके साथ व्यापार करने अपना सामान लेकर उस शहरमें पहुंच गये थे। सन् १६४७ में जार बादशाहने आस्त्राखानके गवर्नरको चिट्ठी लिखकर कहा कि भारतीय व्यापारियोंके साथ अन्य सब व्यापारियोंसे अधिक नरमीका व्यवहार किया जाय। इससे

बहुतसे भारतीय व्यापारी आस्ट्राखानमें ही बस गये। १८वीं सदीमें भारतीय व्यापारियों का बड़ा मुहल्ला ही वहाँ बस गया और उसका नाम 'इण्डिस्काया' रखा गया। वहाँ हिंदुओंका एक मंदिर भी बना जहाँ एक ब्राह्मण पुजारी स्थायी रूपसे रहने लगा। सन् १७६० में भारतीयोंकी ७८ दूकानें और गोदाम-मकान आदि इस मुहल्लेमें थे। अधिकतर भारतीय राजपूताना और पंजाबके थे। ये भारतसे रेशमी-सूती वस्त्र, जवाहरात, ऊन, कालीनें और इत्र ले जाते थे और रूससे चमड़ा, फर, कैनवास और कपड़े लाते थे। १७३७ से ४४ तक ८ सालमें ही १ लाख रूबलसे ऊपरका व्यापार होने लगा। उस समयके रूस सरकारके कागजोंमें अमरदास, रामदास और अलीमचन्द इन तीन व्यापारियोंके नाम आते हैं जो करके रूपमें बहुत भारी रकम रूस सरकारको देते थे।

१८वीं सदीके अन्तमें ईरानमें भारी राजनीतिक उपद्रव हुआ जिसमें भारत-रूस व्यापार मार्ग एक तरहसे बन्द हो गया। छोटे-मोटे सभी व्यापारी वापस भारत आ गये। सज्जा मोंगनदास नामक एक धनी व्यापारी फिर भी वहां बना रहा। इसका व्यापार १८२९ में १ लाख रूबलसे अधिकका हुआ। इसने वहां अपनी पत्थरकी एक बड़ी हवेली भी बनवायी जो आजतक विद्यमान है। पर बूढ़ा होनेपर वह भी भारत वापस आ गया। आस्ट्राखानकी भारतीय व्यापारी बस्ती २०० सालतक खूब चहल-पहलवाली रही।

निजी व्यापारियोंके सहायतार्थ सरकारी रूपसे भी व्यापार संपर्क बढ़ानेके प्रयत्न रूस और भारतमें सत्रहवीं सदीसे ही होते रहे। सन् १६४९ में जार अलेक्सीने निकिता साइरोयेजिन नामके अपने एक दूतको भारत जानेके लिए रवाना किया, पर वह बुखाराके आगे नहीं आ सका और इसे रूस वापस लौट जाना पड़ा। सन् १६७३ में बोरिस पाजुखिन नामक एक और रूसी दूतसे पूछा गया कि भारत जानेके लिए सबसे नजदीक का मार्ग कौन होगा। पाजुखिन बुखारा, खीवा और बल्खकी यात्रा कर चुका था। उसने रिपोर्ट दी कि 'खीवा और बल्ख होते हुए जनाबतको रास्ता जाता है जहां भारतीय बादशाह उरनजेप (औरंगजेब) रहता है। ऊँटका कारवां ४॥ महीनेमें वहाँ पहुंच सकता है।' मास्कोमें भी उस समय कुछ भारतीय व्यापारी रहते थे। उन्होंने सलाह दी कि खीवा-बल्खवाला रास्ता अधिक दूरका और खतरनाक है। वह रेगिस्तान होकर जाता है जहाँ डाकुओंका भय हमेशा रहता है। उससे अच्छा रास्ता बुखारा होकर है।

इसपर सन् १६७५ में मामेट यूसुप कासिमोव नामक एक दूसरा राजदूत भारत जानेके लिए रवाना किया गया पर यह भी काबुलके आगे न आ सका।

दिल्लीके बादशाहके दरबारमें रूसी राजदूत भेजनेका तीसरा प्रयत्न सन् १६९५ में पीटर प्रथमके शासनकालमें किया गया। इस राजदूतका नाम सेमियन मालेन्की था और यह खुद व्यापारी भी था। मालेन्की बहुत दुर्गम रास्तेसे यात्रा कर भारत तो पहुंच गया, पर रूस लौटते समय रास्तेमें ही उसकी मृत्यु हो गयी। उसके साथ आये दलमेंसे उसका एक साथी एण्ड्री सेमेनोव सन् १७१६ में वापस मास्को पहुँचा और वहाँ अधिकारियोंको

अपनी यात्राकी विपदाएँ उसने सुनायीं। मालेन्की सन् १६९५ में आस्ट्राखानसे पालवाले जहाजसे रवाना हुआ और ईरानके निजोवाया बन्दरगाह (कैस्पियन सागर) पहुँचा। वहाँसे दूतका दल ऊंटका कारवां बनाकर शेमाहा पहुँचा। यहाँके खानने इनका सामान बहुत कम दाम देकर छीनना चाहा। झगड़ा हुआ और व्यापारियोंको अंतमें खानको खुश करना पड़ा और फिर खानने गाड़ियां और पहरेदार देकर उन्हें ईरानकी उस समय की राजधानी इस्पाहान पहुँचानेकी व्यवस्था कर दी। इस्पाहानमें भी इन्हें ५ महीने रुकना पड़ा। फिर ये बंदर अब्बास चले। वहाँसे वे एक भारतीय जहाजमें बैठकर ३० दिनमें सूरत पहुँचे। सूरत उस समय बड़ा शहर था। ५ महीने वार्तालापके बाद शाह औरंगजेबसे ब्रह्मणपुरमें पड़ावपर मिलनेकी उन्हें अनुमति मिल गयी। औरंगजेब इनसे मिलकर बड़ा खुश हुआ। इनके दलको भारतकी यात्रा बिना किसी प्रकारका कर दिये करनेकी अनुमति मिल गयी और जार बादशाहको भेंट करनेके लिए औरंगजेबने मालेन्को को एक हाथी भी भेंट किया।

रूसी दल एक सालतक औरंगजेबके पड़ावमें रहा। उसने वहां अपने रहनेके लिए एक मकान भी बना लिया क्योंकि बाकी सब लोग तंबुओंमें ही रहते थे। ब्रह्मणपुरसे मालेन्की आगरा गया। यहाँ मलमल और छपे कपड़े खरीदकर दल हर्पी गाँवमें रंग खरीदने गया। उस समय १८ से २० रूबलमें ३० सेर रंग मिलता था। सामान लेकर मालेन्कीका दल सूरत वापस गया। सरकारी छूट मिलनेपर भी उन्हें १ रूबलके मालपर ३ कोपेक कर देना पड़ा। सूरतमें इन्होंने २ जहाज किरायेपर लिये और स्वदेशकी ओर प्रस्थान किया, पर मेशेदके पास जलदस्युओंने इनके एक जहाजको लूट लिया जिसमें इनका १८॥ हजार रूबलका नुकसान हुआ। बंदर अब्बाससे ये पुराने रास्तेसे चले। शेमाहा पहुंचनेके लिए उन्हें ३ साल लगे। शेमाहामें मालेन्को और उनका भतीजा बीमार पड़ा और दोनोंकी मृत्यु वहीं हो गयी। बाकी व्यापारी मास्को लौट गये।

इसके बाद ४ अगस्त सन् १८०८ को रूसी विदेश विभागने आगा मेबजटी राफाइ-लोव नामके एक दूतको उत्तर भारतमें भेजा। यह मध्य एशिया, काशगर और तिब्बत होता हुआ कश्मीर पहुंचा। कश्मीर उस समय अफगान राज्यमें था, पर अफगानिस्तान में गृह युद्ध होनेके कारण कश्मीरका राजा स्वतंत्र राजाकी तरह रहता था। उस समय उत्तर भारतकी प्रजा सुखी और स्वस्थ थी। कश्मीरमें टर्की, ईरान, भारत, यारकंद, बुखारा आदिके लोग भी रहते थे। शहरमें १ लाख मकान थे और २० हजार करघे चलते थे। राफाइलोवने रूस वापस जाकर अपनी सरकारको सलाह दी कि राजा रण-जीत सिंहको सहायता करनी चाहिये। १८२० में राफाइलोव फिर रणजीत सिंहके दरबार में आनेके लिए चला। इसके पास रूसी विदेश विभागका पत्र भी था जिसमें मैत्री और व्यापार सम्बन्ध बढ़ानेका अनुरोध किया गया था। पर राफाइलोव कश्मीर पहुंचनेके पहले ही चीनी शहर यारकंदमें बीमार पड़ा और वहीं उसकी मृत्यु भी हो गयी।

अफनासी निकितिनके बाद येफ़ेमोव नामक एक और यात्रीने भारतकी यात्रा की थी। इसकी यात्रा वर्णनका नाम 'जाइन ऐथर्स ट्रैवेल्स' (भारतकी यात्रा) है और इसमें कश्मीर और भारतका बहुत विस्तारके साथ वर्णन है।

सन् १७८५ में गेरासिम लेबेदेव नामका रूसी यात्री भी भारत आया था। इसने भारतमें पहला यूरोपीय नाट्यशाला स्थापित किया। लेबेदेव यहाँ १० सालतक रहा और यहाँकी भाषाओं, संस्कृति आदिका इसने अध्ययन किया। भारतसे लौटनेके बाद सन् १८०१ में इसने बोल-चालकी हिन्दी (कलकतिया हिन्दी) का पहला व्याकरण लिखा और प्रकाशित किया। १८०५ में इसने एक और पुस्तक लिखी जिसका नाम था—'पूर्वी भारतके ब्राह्मणोंके रीति-रिवाज, धर्म-कर्म और जनताकी रहन-सहन।'

उन्नीसवीं सदीके मध्यकालमें रूसमें भारतके संबंधमें बहुत-सी बातोंका अध्ययन किया जाता रहा। संस्कृत जाननेवाला पहला रूसी पावेल पेत्रोव (१८१४-७५) था। उसने और कैयतान कोसोविच (१८१५-१८८०) ने मिलकर रूसमें इण्डोलॉजीका या भारत विषयक अध्ययन शुरू किया।

पेत्रोवने रूसमें संस्कृत भाषाध्ययन खोला और स्वयं रूसियोंको संस्कृत पढ़ाने लगा। कोसोविचने भी बहुतसे संस्कृत पुस्तकोंके अनुवाद किये और सन् १८५४ में संस्कृत-रूसी शब्दकोश प्रकाशित करना शुरू किया।

इवान मिनायेव नामक एक और संस्कृत, पाली प्राकृतके पण्डितने रूसमें सर्वप्रथम एक इण्डोलॉजी स्कूलकी स्थापना की। उन्नीसवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें रूसी अकादमीने दो संस्कृत शब्दकोश प्रकाशित किये। एक बड़ा कोश (१८५२-१८७५) ओ बोथलिंक और राथने मिलकर तैयार किया और एक संक्षिप्त (१८७९-१८८९) कोश बोथलिंकने अकेले ही तैयार किया। ये कोश पीटर्सबर्ग कोश नामसे मशहूर हुए। उन्नीसवीं सदीमें पेत्रोव, डी कुद्रियावस्की और आई मिनायेवके संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओंके संबंधमें कई ग्रन्थ निकले। हिल्फर्डिंग नामके एक लेखकने उर्दूके संबंधमें एक तथा स्लाव और संस्कृत भाषाओंके निकट संबंधके बारेमें एक ग्रन्थ लिखा। पहलेके ग्रन्थ यूरोपीय भाषाओंसे अनूदित किये गये थे। पर पेत्रोवने अध्यात्म रामायणका सीता हरणका अंश सीधे संस्कृतसे ही रूसी भाषामें अनुवादित किया।

अलबरूनी उजबेक लेखक था। इसने भारतके बारेमें 'तारीख-अल-हिन्द' नामक इतिहास पुस्तक लिखी है। अब्दुर्रज्जाक समरकन्दीकी पुस्तकका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। अब्दुर्रज्जाक तिमुराइद राज्यके शासक शाहरुखका नेता था। शाहरुखने सन् १४४१-४२ में अब्दुर्रज्जाकको अपना दूत बनाकर भारत भेजा था जहाँ वह तीन सालतक रहा। उजबेक भाषामें लिखे बाबरके 'बाबरनामे' और गयासुद्दीन अलीके 'तैमूरके भारतपर हमलेकी डायरी'के रूसी अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। उन्नीसवीं सदीके अन्तिम २०-२५ वर्षोंमें ताशकन्दमें भारतके संबंधमें बहुत-सी पुस्तकें निकलीं।

रिपोर्ट दी वह बहुत उपयोगी सिद्ध हुई । हालमें रूसी सहायतासे सौराष्ट्रके खम्बेज गांवके पास जमीनके अन्दर तेलके सोते मिले हैं । इस सम्बन्धमें भारत-रूस करार २९ नवंबर सन् १९५६ को दिल्लीमें हुआ था । भिलाईके कारखानेके लिए लगनेवाले कोयलेकी खोज पासके ही कोरबा इलाकेमें रूसी सहायतासे की गयी । वहां ४० लाख टन कोयला प्रतिवर्ष मिल सकता है । सामान मशीनें निर्माण करनेके कारखानेकी और औषधि तैयार बनानेके कारखानेकी योजनाएं भी रूसके वैज्ञानिकोंने बना दी है । अलौह धातुओं और उद्योगमें काम आनेवाले हीरोंका उत्पादन बढ़ानेके सम्बन्धमें भी रूसने अपनी रिपोर्ट दी है । भिलाईमें रूसी सहायतासे इस्पातका बड़ा कारखाना बनानेके करारपर फरवरी १९५५ में हस्ताक्षर हुआ । रूसने २॥ प्रतिशत ब्याजपर लंबी मीयादका कर्ज भी भारतको दिया । इतने कम ब्याजपर भारतको बाहरसे और कहींसे कर्ज नहीं मिला था । व्यापार सम्बन्ध बढ़ानेमें रूस केवल रुपये-पैसेका ही हिसाब नहीं लगाता इसलिए उसे सब कुछ करना सम्भव है ।

८ मार्च १९५६ को भारत सरकारने भिलाई योजना स्वीकार कर ली । विज्ञान और इंजीनियरोंकी हालकी प्रगतिका उपयोग इसके डिजाइन बनानेमें पूरी तरह किया गया है । इस कारखानेमें ३ लाख टन लोहा, १० लाख टन इस्पात और ७ लाख ७० हजार टन बिक्री धातु प्रति वर्ष तैयार होगा । इस्पातका उत्पादन प्रतिवर्ष १३ लाख टनतक बढ़ाया जा सकता है । कारखाना बादमें और भी बढ़ाया जा सकता है जिससे इस्पातका उत्पादन प्रति वर्ष २५ लाख टनतक बढ़ाया जा सकेगा । दिसम्बर १९५९ में कारखाना पूरी तरह काम करने लग जायगा । इसके लिए खनिज लोहा दल्लीराजहारा खानोंसे आयगा ।

इसके अलावा बिहारमें रूसी प्राविधिज्ञोंकी मददसे एक भारी मशीनें बनानेका कारखाना भी बन रहा है । इसमें प्रतिवर्ष ८० हजार टन वजनकी मशीनें बनेंगी ।

दवाओंके निर्माणके बारेमें भी रूसी तज्ञोंने भारत सरकारको रिपोर्ट दी है । नवम्बर १९५७ में रूसने भारतको ६० करोड़ रुपया और कर्ज देना स्वीकार किया है । भारतके कारखाने चलानेके लिए रूस भारतीय युवकोंको अपने देशमें और भारतमें भी ट्रेनिंग दे रहा है । सितम्बर १९५५ में एक करारपर हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार रूस बम्बईके पास एक टेक्नालाजीकल इन्स्टीट्यूट खोलेगा जिसमें ईंधन, सेरामिक्स, पल्प-कागज, लोहा-इस्पात, अलौह धातुएं और मशीन निर्माण उद्योगोंके लिए भारतीय विशेषज्ञ तैयार किये जायंगे । २० भारतीय युवकोंको रूसमें इसके लिए ट्रेनिंग दी जा रही है । १९५७-५८ में कुल ७०० भारतीय युवकोंको ट्रेनिंग देना रूस सरकारने स्वीकार कर लिया था । भारत और रूसके बीच १९५५ में ५ करोड़ रूबलका और १९५६ में २४-२५ करोड़का व्यापार हुआ । अप्रैल १९५६ में भारत और रूसके बीच सीधी माल जहाजरानी शुरू करनेका एक करार हुआ । दोनों देशोंने इसके लिए अपने-अपने ६-७ जहाज (५१ हजार

टन) देना स्वीकार किया । इसी १४ अगस्तसे भारत-रूसके बीच सीधी विमान सेवा भी शुरू हुई ।

सांस्कृतिक क्षेत्रमें

आर्थिक सहायता और सहयोगके साथ-साथ रूसने भारतके सांस्कृतिक क्षेत्रमें भी विशेष दिलचस्पी लेना शुरू किया है ।

मास्को और लेनिनग्राडमें इन्स्टीट्यूट फार ओरियण्टल स्टडीज खुले हैं जहां भारतीय विषयोंका भी अध्ययन होता है ।

इधर हालमें श्चेरबात्स्कीसे शिष्य अकादेमिशन ए० पी० बारान्निकोवने भारतके बारेमें बहुत साहित्यिक काम किया है । उन्होंने भारतीय भाषाओंके बहुतसे कोश और पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं । नये भारतीय साहित्यके वैज्ञानिक अध्ययनके कार्यका श्रीगणेश करनेका श्रेय उन्हें दिया जाता है ।

रविबाबू , बंकिमचन्द्र चटर्जी, प्रेमचन्द्र, जवाहरलाल नेहरू, राधाकृष्णन् , एन० के० सिंह, ए० सी० बनर्जी, चंद्रशेखर पटेल, नटराजन, मोहिंदर सिंह, सुमोव, आर० कृष्णन् , मुल्कराज आनन्द, कृष्णचन्द्र, ख्वाजा अहमद अब्बास, बल्लाथोल, चट्टोपाध्याय आदि लेखकोंकी राजनीतिक, आर्थिक और साहित्यिक कृतियां रूसी भाषामें अनुवादित हुई हैं ।

लेनिनग्राडके इन्स्टीट्यूट आफ ओरियण्टल स्टडीजकी भारतीय शाखामें भारतके अर्थतन्त्र, इतिहास, साहित्य और भाषाओंपर खूब काम किया जा रहा है । इधर हालमें ये पुस्तकें तैयार हुईं या छप रही हैं—महाभारत और अर्थशास्त्रपर टीका, अकबरके शासनकालका भारत, वैदिककालकी संस्कृत भाषाका व्याकरण, स्वतन्त्र भारतके उद्योग-धन्धोंमें सरकारी भाग, उर्दू-रशियन कोश, हिन्दी-रूसी और रूसी-हिंदी कोश, स्वतन्त्रता युद्धका इतिहास और बालगंगाधर तिलकका कार्य, १८५७-५८ का भारतीय राष्ट्रीय संग्राम, भारतकी आर्थिक समस्याएं, आधुनिक भारतका इतिहास, १७ वीं सदीमें भारत-रूसका सम्बन्ध, सिख राज्य, भारतपर ब्रिटिश अधिकार, भारतीय साहित्य, भारतीय भाषाएं, १७ वीं-१८ वीं सदीमें भारतमें जनताके आन्दोलन, १२वीं-१५वीं सदीमें भारतकी सामाजिक अवस्था, पंचतन्त्र, बंगला-रूसी कोश, आदि आदि ।

सन् १९६० में लेनिनग्राडमें ही २५ वीं अन्तरराष्ट्रीय ओरियण्टल कांग्रेस हो रही है जिसके लिए अभीसे तेजीसे तैयारी की जा रही है । अगले साल वर्तमान हिंदी कविता, हिन्दी नाटक, हिन्दी साहित्य, जातकमाला, तुलसीदासका रामायण आदि पुस्तकें छपने वाली हैं । इन्स्टीट्यूटमें तमिल-तेलगू और मलयालम भाषाओंका भी अध्ययन होता है । इन भाषाओंके व्याकरण भी अगले साल प्रकाशित होनेवाले हैं । बंगाली कवितापर भी एक पुस्तक वहां काम करनेवाले प्रोफेसर निरेन्द्रनाथ राय तैयार कर रहे हैं । १८५८ के स्वातन्त्र्य

मुद्रके कोकणील नामक आर० जोशीकी एक पुस्तक भी छापी जानेवाली है। इस इन्स्टीट्यूटके बहुतसे कार्यकर्ता १९५६-५७ में भारत आये थे और यहां विश्व-विद्यालयों और पुस्तकालयोंमें जाकर उन्होंने बहुत काम किया था।

पिछले जनवरी मासमें सोवियत इण्डियन-सांस्कृतिक सोसाइटी नामक एक संस्था रूसमें दोनों देशोंमें मैत्री बढ़ानेके उद्देश्यसे स्थापित की गयी है।

मास्को और लेनिनग्राडके कुछ स्कूलोंके पाठ्यक्रममें पिछले कुछ वर्षोंसे हिन्दी और उर्दू भाषाएं शामिल की गयी हैं। ताशकंद, समरकंद, बुखारा तथा अन्य मध्य एशियाई शहरोंमें भी अब ये भाषाएं पढ़ायी जा रही हैं। श्री कामताप्रसाद गुरुके 'हिन्दी व्याकरण'का रूसी अनुवाद भारतीय भाषाओंका अध्ययन करनेमें अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। व्याकरणका रूसी-संस्करण दो भागोंमें विभाजित है।

निकट भविष्यमें मास्कोमें न केवल भारतकी भाषाओंका अध्ययन करनेवाले सोवियत नागरिकोंके लिए वरन् ऐसे भारतवासियोंके लिए भी रूसी भाषाएं नहीं जानते पुस्तकें मुद्रित होंगी। विदेशी साहित्य-प्रकाशनगृह शीघ्र ही हिन्दी-रूसी और बंगाली-रूसी मुहावरोंकी छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित करेगा।

भारतीय लेखकों, कवियों, पत्रकारों और वैज्ञानिकोंकी कृतियोंकी सोवियत पाठकोंमें अच्छी मांग है। के० पी० एस० मेनन (सोवियत संघमें भारतीय राजदूत) की 'प्राचीन मार्ग', चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यकी 'मानव जाति कोस रही है', 'पंजाबी कवियोंके गीत' 'भारतीय परी कहानियां'—मास्कोमें कुछ मास पूर्व ही प्रकाशित हुई थीं, किन्तु अब ये दुर्लभ बन चुकी हैं। इस वर्षके अन्ततक भारतीय लेखकोंकी लगभग २० और पुस्तकें प्रकाशित होनेवाली हैं। वृन्दावनलाल वर्माका प्रसिद्ध उपन्यास 'झांसीकी रानी' कृष्णचन्द्र का उपन्यास 'गदर' (उर्दूसे अनूदित) तथा मलयाली कवि वल्लाथोल का कविता-संग्रह 'सेम्पल आफ सिविक लीरिक्स' प्रकाशित होनेवाले हैं। के० मार्कण्डेयका उपन्यास 'नेक्टर इन ए सीव', एस० बंगोपाध्यायकी कहानियोंकी किताब 'मून ग्लाइड' और [illegible] उपन्यास 'दिव्या' हालमें प्रकाशित हुए हैं।

मास्कोका विदेशी भाषा प्रकाशनगृह बहुत सी पुस्तकें भारतीय भाषाओंमें अनुवाद कराके प्रकाशित करेगा। इसमें निम्नलिखित पुस्तकें शामिल हैं।...लियो टाल्स्टायकी 'कज़ाक', गोगोलकी 'तारास बुल्बा' पुश्किनकी 'डुब्रोवस्की', गोर्कीकी 'माई एप्रेण्टिसशिप', वाजेयवकी 'सिल्वर ट्रम्प' केमीनस्टीयवकी 'हीरो आफ आवर टाइम', प्रिशिवकी 'फाक्स स्टोरहाउस', तुर्गनेवकी 'ओर्ल्यास केस्ट' और 'मुमु', पौस्तोवस्कीकी 'पलाइट आफ टाइम', बेदरकी 'लुक एण्ड सेक' तथा अन्य राजनीतिक साहित्य।

निकट भविष्यमें ही यह प्रकाशनगृह हिन्दी जाननेवाले लोगोंके लिए रूसी भाषाकी एक पाठ्य-पुस्तक (प्रथम भाग) प्रकाशित करेगा। इसी प्रकार रूसी न जाननेवालोंके लिए हिन्दी-रूसी तथा बंगला-रूसी कहावतोंकी दो और किताबें प्रकाशित की जायेंगी।

अगले वर्ष यह प्रकाशनगृह भारतीय भाषाएं पढ़नेकी इच्छुक सोवियट जनताके लिए उर्दू (हिन्दुस्तानी) में बातचीतके अभ्यासके लिए एक पुस्तक, 'मराठी व्याकरणपर निबन्ध' तथा 'आधुनिक बंगलाका उच्चारण तथा व्याकरण', जिसे सोवियट संघमें निवास करनेवाले एक भारतीय लेखक लिख रहे हैं, प्रकाशित करनेका इरादा रखता है।

रूसके आजतकके सारे इतिहासमें पश्चिमी अर्थमें वह कभी साम्राज्यवादी नहीं रहा। अपनी सुरक्षाके लिए अपनी सीमासे सटे देशोंपर उसने जबर्दस्ती बार-बार अधिकार अवश्य किया है। पर रूस अबतक गरीब और पिछड़ा देश था। पिछले ८-१० सालमें वह औद्योगिक दृष्टिसे दुनियाका दूसरा बड़ा राष्ट्र हो गया है। यूरोपकी औद्योगिक क्रांतिने जिस प्रकार यूरोपके देशोंमें साम्राज्यवादको प्रोत्साहन दिया उसी प्रकार रूसी औद्योगिक क्रांति किस नये विस्तारवादको जन्म देगी कहा नहीं जा सकता। साइबेरियाकी तरफ रूसका बढ़ना और उधर चीनमें तेजीसे बढ़ती जनसंख्या और तेजीसे बढ़नेवाली औद्योगिक गति पूर्वी एशियामें किस प्रकारके सम्पर्क या संघर्षको जन्म देगी यह भी कहना कठिन है। अफ्रीका और दक्षिण एशियाके देशोंमें रूसका आर्थिक और सांस्कृतिक मित्रता का हाथ भी आगे चलकर कोमल रहेगा या कठोर हो जायगा, यह भी भविष्यके गर्भमें ही है।

—:o:—

(१६)

स्टालिनकी मृत्यु—रूसमें नये युगका आरम्भ

१ मार्च सन् १९५३ की रातमें स्तालिनके मस्तिष्ककी नसोंसे रक्तस्राव होने लगा। दाहिने अंगमें लकवेका आक्रमण हुआ और वे बेहोश हो गये। इसके डेढ़ ही महीने पहले १३ जनवरीको मास्कोके ८ प्रमुख डाक्टर बेरियाके फंसानेसे गिरफ्तार किये गये थे। उनपर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होंने पोलिटब्यूरोके दो सदस्योंकी हत्या की और अन्य साम्यवादी नेताओंकी हत्याका षड्यन्त्र किया। डाक्टरोंमें इससे आतंक छाया था और किसीने भी स्तालिनकी चिकित्सा मन लगाकर नहीं की। स्तालिनका ब्लड प्रेशर बढ़ा था इसलिए उसे कम करनेको उनके शरीरमें 'जोंकें' लगायी गयी !!

अन्ततः ५ मार्चकी रातमें ९·५० पर स्तालिनकी मृत्यु हो गयी। ४ दिन रूसभरमें सरकारी शोक मनाया गया। ९ मार्च दोपहरको ठीक १२ बजे स्तालिनके शवकी अन्त्येष्टि की गयी और शव मसाला लगाकर लेनिनकी समाधिमें ही लेनिनके शवके पास रखा गया। (दोनों शव तथा अन्य मृत रूसी नेताओंकी अस्थियां रखनेके लिए मास्कोमें ही एक विशाल और भव्य स्मृतिभवन बनानेका निश्चय हुआ पर वह अभी-

तक ५ साल हो जानेपर भी नहीं बना है ।)

(डाक्टरोंके इस कांडसे रूसी नेता सावधान हो गये और ४ अप्रैलको 'प्रावदा'में छपा कि डाक्टरोंपर षड्यन्त्रके आरोप मिथ्या थे और खुफिया पुलिसके एजेण्टों द्वारा जोर-जबरदस्तीसे हासिल किये गये इकबाली बयानोंके आधारपर ये लगाये गये थे । 'प्रावदा'के इस लेखसे यह भी स्पष्ट हो गया कि बेरियाका सितारा अब डूबनेको है । २ही मार्चके बाद १० जुलाईको बेरिया देशद्रोहके अभियोगमें गिरफ्तार किये गये और मुकदमा चलनेके बाद दिसंबरमें उन्हें मौतकी सजा दी गयी । मरणोत्तर स्तालिनके शवकी भी परीक्षा कर डाक्टरोंके रोग-निदानकी पुष्टि की गयी ताकि बादमें उन डाक्टरोंपर षड्यंत्रका कोई आरोप न लगा सके ।)

स्तालिनकी मृत्युसे उत्पन्न कठिन परिस्थितिमें सब रूसी नेताओंको अपने मतभेद भुलाकर एक झण्डेके नीचे आना जरूरी था । दूसरे ही दिन कम्युनिस्ट पार्टीकी सेण्ट्रल कमेटी, मन्त्रिपरिषद् और सुप्रीम सोवियटकी प्रेसिडियमकी संयुक्त बैठक हुई और नेतृत्वमें इस प्रकार परिवर्तन किये गये ।

मालेनकोव प्रधान मन्त्री, बेरिया-मोलोटोव-बुल्गानिन-कागानोविच ये चार उप-प्रधान मन्त्री । मन्त्रिपरिषद्की ब्यूरो और प्रेसिडियम ये दो संस्थाएं तोड़कर केवल एक ही सभा प्रेसिडियम रखी गयी जिसमें केवल ५ सदस्य—प्रधान मन्त्री और ४ उपप्रधान मन्त्री—रखे गये । वोरोशिलोव सुप्रीम सोवियटके प्रेसिडियमके अध्यक्ष । पेगोव सुप्रीम सोवियटके प्रेसिडियमके सचिव । गृहमन्त्रालय और आन्तरिक सुरक्षा मन्त्रालय एकमें मिलाकर केवल एक गृहमन्त्रालय रखा गया और बेरिया उसके मन्त्री बनाये गये । मोलोटोव परराष्ट्रमन्त्री, विशिस्की प्रथम डिप्टी परराष्ट्र मन्त्री और संयुक्त राष्ट्रसंघमें स्थायी प्रतिनिधि, मलिक प्रथम डिप्टी परराष्ट्र मन्त्री और कुजनेत्सोव डिप्टी परराष्ट्र मन्त्री । बुल्गानिन सुरक्षा मन्त्री और वासिलेवस्की तथा झुकोव प्रथम डिप्टी सुरक्षा मन्त्री । आंतरिक और विदेशी व्यापारके मन्त्रालय एक कर मिकोयान उसके मन्त्री और काबानोव प्रथम डिप्टी मन्त्री, कुमिकिन और आवोरोनकोव डिप्टी मन्त्री । आटोमोबाइल-ट्रैक्टर, मशीन-पुर्जे, कृषि मशीनें-उपकरण ये सब मन्त्रालय एक कर मशीन-निर्माण मन्त्रालय बनाया गया और साबुरोव उसके मन्त्री बनाये गये । कई निर्माण मन्त्रालय एक कर मालिशेव उसके मन्त्री बनाये गये । कई विद्युत् मन्त्रालय एक कर पेर्वुखिन उसके मन्त्री बनाये गये । साबुरोवकी जगह कोसियागिनको प्लानिंग कमेटीके अध्यक्ष । श्वेर्निक सुप्रीम सोवियटके अध्यक्ष पदसे हटाकर ट्रेड यूनियन कौंसिलके अध्यक्ष बनाये गये ।

इसी प्रकार कम्युनिस्ट पार्टीकी प्रेसिडियम और ब्यूरो ये दो मण्डल तोड़कर एक ही मण्डल प्रेसिडियम बनाया गया । इसकी सदस्य संख्या घटाकर १० पूर्ण सदस्य और ४ विकल्प सदस्य कर दी गयी । मालेनकोव, बेरिया, मोलोटोव, वोरोशिलोव, ख्रुश्चेव,

बुलगानिन, कागानोविच, मिकोयान, साबुरोव, पेर्वुखिन ये पूर्ण सदस्य और श्वेर्निक, पोनोमारेन्को, मेलनिकाव और बागिरोव ये विकल्प सदस्य।

पूर्ण सदस्योंमें केवल एक क्रुश्चेव ऐसे थे जो किसी सरकारी मन्त्री पदपर नहीं थे। इनके जिम्मे पार्टीका पूरा काम दिया गया जिसकी सीढ़ीपर चढ़कर ५ सालमें ही ये रूसके सर्वेसर्वा बन गये। स्टालिनके वास्तविक उत्तराधिकारी क्रुश्चेव ही हैं यह ६ मार्चको ही स्पष्ट हो गया था। स्टालिनकी अन्त्येष्टिकी व्यवस्थाके लिए जो कमीशन बनाया गया था उसके अध्यक्ष श्री क्रुश्चेव बनाये गये थे। (३ साल बाद स्टालिनके अलौकिकत्वकी अन्त्येष्टि भी क्रुश्चेवने अपने २४ फरवरी १९५६ के सुप्रसिद्ध भाषणमें की। स्टालिनके भौतिक शरीर और यशः शरीर दोनोंकी अन्त्येष्टिके अधिकारी क्रुश्चेव ही बने।)

श्री क्रुश्चेव

सोवियट संघमें श्री क्रुश्चेव एक नयी पीढ़ीके प्रतीक हैं। जन्म १७ अप्रैल सन् १८९४को हुआ। उनका पार्टीके पोलिटब्यूरोमें प्रवेश सन् १९३९ में हुआ। इनके पहले जितने व्यक्ति पोलिटब्यूरोमें लिये गये थे वे सब सन् १९१७ की सोवियट क्रांतिके समयसे ही पार्टीके सदस्य रहे, पर क्रुश्चेव ऐसे पहले नेता थे जिन्होंने पार्टीमें क्रांतिके बाद प्रवेश किया था। कोयलेकी खानमें काम करनेवाले एक खनिकके वे एक अपढ़ पुत्र थे जो स्वयं खनिक बन गये थे। १९१८ में पार्टीके सदस्य बने और वयस्क श्रमिकोंकी पाठशालामें पढ़ने भी लगे। शिक्षा समाप्त होनेके बाद 'प्रमोटेड सदस्य'की हैसियतसे उन्हें स्टालिनो और किएवमें पार्टीका काम दिया गया। सन् १९२९ में वे औद्योगिक अकादमीमें उद्योगोंके संचालनकी शिक्षाके लिए भेजे गये, साथ ही अकादमीमें वे पार्टी संघटनके प्रमुखका भी काम करते रहे। ट्रेनिंगके बाद भी वे वही पार्टीका काम करते रहे।

१९३४ में मास्को पार्टीके प्रधान श्री कागानोविचने उन्हें अपना द्वितीय सचिव चुनकर बुला लिया। अगले साल वे कागानोविचकी जगहपर मास्को पार्टीके सेक्रेटरी चुने गये। सन् १९३८ में क्रुश्चेव यूक्रेनकी पार्टीके प्रथम सचिव बनाकर भेजे गये और अगले साल पोलिटब्यूरोके सदस्य बना लिये गये।

१९२४ में लेनिनकी मृत्युके बाद पोलिटब्यूरोके अपने सभी दक्षिण पक्षीय और वामपक्षीय प्रतिस्पर्धियोंको समाप्त करनेमें स्टालिनको १०-१२ वर्ष लगे थे, पर १९५३ में स्टालिनकी मृत्युके बाद ५ वर्षके अन्दर ही क्रुश्चेव सोवियट संघके सर्वोच्च नेता बन गये। लेकिन स्टालिन और क्रुश्चेवमें बड़ा अन्तर है। स्टालिन दयाहीन, महत्त्वाकांक्षी थे। उन्होंने अपने सब विरोधियोंको झूठे-झूठे षड्यन्त्रोंमें फंसाकर मौतके घाट उतार दिया था, पर क्रुश्चेवको ऐसा केवल श्री बेरियाके मामलेमें करना पड़ा। उनके राहके बाकी सब रोड़े बहुत आसानीसे बदलते रूसके बदलते वातावरणके अनुरूप हटाये जा सके।

श्री क्रुश्चेवका सर्वोच्च नेता पदपर पहुंचनेका कार्यक्रम इस प्रकार रहा।

१९५३

६ मार्च—स्टालिनकी मृत्यु।

(१) जार्जी मालेनकोव उत्तराधिकारी—मन्त्रिपरिषद्के अध्यक्ष (प्रधान मन्त्री) और कम्युनिस्ट पार्टीके प्रधान सचिव।

(२) लैवरेण्टी बेरिया—खुफिया पुलिसके प्रधान और डिप्टी प्रीमियर

(३) व्यानेस्लाव एम० मोलोटोव—परराष्ट्रमन्त्री और डिप्टी प्रीमियर।

१४ मार्च—मालेनकोवकी पुरानी जगहपर क्रुश्चेव पार्टीके सीनियर सचिव हुए।

२६ जून—मालेनकोव और जुकोवकी सहायतासे बेरियाकी गिरफ्तारी और बादमें मृत्युदण्ड।

१२ सितंबर—क्रुश्चेव कम्युनिस्ट पार्टीके प्रधान सचिव हुए।

१९५४

१ अक्तूबर—बुलगानिन और मिकोयानके साथ पीकिंगकी यात्रा।

१९५५

८ फरवरी—मालेनकोवका प्रधान मन्त्रिपदसे इस्तीफा, कृषि विकासमें अयोग्यताकी स्वीकृति। क्रुश्चेवके प्रस्तावपर बुलगानिन नये प्रधान मन्त्री बने।

२४ फरवरी—२० वीं पार्टी कांग्रेसमें क्रुश्चेवका सुप्रसिद्ध स्टालिन-विरोधी भाषण—व्यक्तिपूजाकी निन्दा।

१ जून—मोलोटोव परराष्ट्र मन्त्रिपदसे हटे।

२८ जून—पोलैण्डमें उपद्रव।

२३ अक्तूबर—हंगरीमें उपद्रव।

२६ दिसंबर—सोवियट प्रेसिडियमका फिर भारी उद्योगोंपर जोर। क्रुश्चेवका कृषि कार्यक्रम पीछे पड़ा।

१९५७

१ जनवरी—हंगरीमें क्रुश्चेव।

१७ जनवरी—क्रुश्चेव द्वारा स्टालिनकी फिर प्रशंसा।

२७ फरवरी—भारी उद्योगवाला कार्यक्रम फिर पीछे पड़ गया।

१७ जून—प्रेसिडियम क्रुश्चेवको हटानेके पक्षमें, बुलगानिन भी सहमत, पर क्रुश्चेवका सेण्ट्रल कमेटीकी बैठक बुलानेपर जोर।

२९ जून—सेण्ट्रल कमेटी द्वारा क्रुश्चेवका समर्थन। मालेनकोव, मोलोटोव और कागानोविच, शेपिलोव आदि हटाये गये। जुकोवकी प्रेसिडियममें नियुक्ति। रक्षामन्त्री बने।

२६ अक्तूबर—जुकोव प्रेसिडियमसे रक्षामन्त्रिपदसे हटाये गये। क्रुश्चेवका रास्ता साफ। मालिनोस्की नये सुरक्षामन्त्री।

१९५८

२७ मार्च—बुलगानिन प्रधान मन्त्रीके पदसे हटे। क्रुश्चेव प्रधान मन्त्री बने। पार्टीके सर्वोत्तम पहलेसे ही थे।

क्रुश्चेवका नया मन्त्रिमण्डल ३१-३-५८

(१) क्रुश्चेव—प्रधान मन्त्री
(२) कोजलोव—प्रथम उपप्रधान मन्त्री
(३) मिकोयान ,,
(४) कोसिगिन—उपप्रधान मन्त्री
(५) जासियाड्को ,,
(६) कुजमिन ,, और प्लानिंग कमेटीके अध्यक्ष
(७) उस्टिनोव—उपप्रधान मन्त्री
(८) ग्रोमिको—परराष्ट्र मन्त्री
(९) मालिनोस्की—रक्षामन्त्री
(१०) ज्वेरेव—अर्थमन्त्री
(११) डुडोरोव—गृहमन्त्री
(१२) कावानोव—विदेश व्यापारमन्त्री
(१३) मिखाइलोव—संस्कृतिमन्त्री
(१४) मेरिया कोवरीगिना—स्वास्थ्य मंत्रिणी
(१५) मात्स्केविच—कृषिमन्त्री
(१६) बुलगानिन—स्टेट बंक बोर्डके अध्यक्ष

क्रुश्चेवकी विदेश-यात्राएँ

स्टालिन कभी अपने देशसे बाहर नहीं गये थे, पर क्रुश्चेव देश-विदेश घूमनेके बड़े शौकीन हैं। उन्होंने अबतक इतने देशोंकी यात्रा की है—

(१) यूगोस्लाविया	२६ मई—३ जून १९५५	बुलगानिनके साथ
(२) जेनेवा (स्विटजरलैण्ड)	१८-२५ जुलाई १९५५	शीर्ष सम्मेलन
(३) भारत-बर्मा-अफगानिस्तान	१८ नवंबर—१४ दिसंबर १९५५	बुलगानिनके साथ
(४) ब्रिटेन	अप्रैल १९५६	,,
(५) यूगोस्लाविया	सितंबर १९५६	
(६) पोलैण्ड	२० अक्तूबर १९५६	
(७) हंगरी	जनवरी १९५७	
(८) फिनलैण्ड	जून १९५७	बुलगानिनके साथ
(९) चेकोस्लोवाकिया	जुलाई १९५७	,,
(१०) रूमानिया	अगस्त १९५७	
(११) पूर्वी जर्मनी	१३ अगस्त १९५७	
(१२) चीन	अगस्त १९५८	

व्यक्तिपूजाकी घोर निन्दा

सोवियट संघकी कम्युनिस्ट पार्टीकी बीसवीं कांग्रेस, जो फरवरी १९५६ में हुई, दुनियाके राजनीतिक इतिहासमें अश्रुतपूर्व-अभूतपूर्व थी, क्योंकि इसमें रूसके महान् नेता स्टालिनके उत्तराधिकारी क्रुश्चेवने स्टालिनका तीसरा वर्ष-श्राद्ध उनकी गौरव-गरिमा-मूर्तिको भूलुंठित कर किया था। स्टालिनने अपने हाथसे दुनियाके सारे कम्युनिस्टोंसे अपनी जो व्यक्ति पूजा करायी थी उसे मार्क्सवाद-लेनिनवादके सर्वथा विरुद्ध बताकर क्रुश्चेवने लगातार दो दिन, २४-२५ फरवरीको, भाषण कर स्टालिनके अधिनायक तन्त्रपर ऐसे-ऐसे वार किये जैसे दुनियामें आजतक किसी भी उत्तराधिकारीने अपने पूर्वजपर उसके मरनेके केवल ३ सालके अन्दर ही नहीं किये थे।

पर इसके लिए हमें क्रुश्चेवकी निंदा करनेके बजाय उनके सत्साहसकी प्रशंसा ही करनी पड़ेगी। कम्युनिस्ट पार्टीका यह पुराना सिद्धांत रहा है कि अपने दोषोंका दर्शन करनेके लिए पार्टीके अन्दर खुली टीका, आत्मटीका और आत्मचिंतन आवश्यक है। स्टालिनने अपने अधिनायक तन्त्रसे रूसी राज्यका ढांचा इतना जड़ कर दिया था कि सामाजिक प्रगति रुक-सी गयी थी। सामूहिक नेतृत्व समाप्त हो गया था और व्यक्तियोंकी प्रतिभा भी कुंठित हो गयी थी। अमेरिकासे स्पर्द्धा करनेमें ऐसी कुंठा विघ्नका काम कर रही थी। रूसी जनताको एक ऐसा जोरका झकझोरा आवश्यक था कि वह मूलसे हिल उठती। क्रुश्चेवने यही काम किया।

इस विषयमें क्रुश्चेवकी तारीफ और तरफदारी करते हुए चीनकी कम्युनिस्ट पार्टीके पोलिटब्यूरोने जो वक्तव्य निकाला था उसमें कहा गया था कि दुनियामें ऐसा कोई प्रमुख मार्क्सवादी नहीं है जिसने कहीं यह लिखा हो कि हम कभी गलती नहीं करते (पर कोई भी कम्युनिस्ट यह कभी स्वीकार नहीं करेगा कि मार्क्सवादके प्रतिपादनमें मार्क्ससे भी गलती होना संभव है। यह ऐसा ही है जैसा हर एक आस्तिक ईश्वरके अस्तित्वको सिद्ध करनेके लिए यह तर्क देता है कि हर एक चीजका कोई न कोई जन्मदाता अवश्य होता है, इसलिए इस सृष्टिका रचनाकार भी कोई अवश्य होना ही चाहिये, पर वह यह कभी स्वीकार नहीं करता कि फिर ईश्वरको बनानेवाला भी कोई होना ही चाहिये—लेखक)

कुछ भी हो। क्रुश्चेवके इस झकझोरेसे रूस न केवल संभल गया, पर पहलेसे अधिक ताकतवर हो गया, इसमें कोई संदेह नहीं।

क्रुश्चेवने स्टालिनके जो दोष दिखाये उनका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है—

"मार्क्सवाद और लेनिनवादके सिद्धांतोंके यह सर्वथा विरुद्ध है कि कोई भी व्यक्ति ईश्वरकी तरह अलौकिक गुणवाला और अतिमानुष, सर्वज्ञाता, सर्वव्यापु, सबके लिए सोचनेवाला, सब कुछ कर सकनेवाला और कभी स्खलित न होनेवाला हो सकता है। कुछ वर्षोंतक हम लोगोंमें स्टालिनके बारेमें यही धारणा दृढ़ की गयी थी।

स्टालिनकी व्यक्तिपूजाका तत्त्व धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि पार्टीके सिद्धांत, पार्टी डिमोक्रेसी और क्रांतिकारी कर्त्तव्य विकृत रूप धारण कर गये।

दिसम्बर १९२२ में लेनिनने लिखा कि सेक्रेटरी जनरल होनेके बाद स्टालिनने अपने हाथमें अमाप सत्ता हड़प ली है। स्टालिन बहुत अधिक रुखाईसे पेश आते हैं, झक्की हैं और सत्ताका दुरुपयोग करते हैं। सेक्रेटरी जनरलके जैसे महत्त्वके पदपर उनका बना रहना ठीक नहीं है।

लेनिनकी पत्नी नाजेज्दा कान्स्टाण्टिनोव्ना क्रुपस्कायाने २३ दिसम्बर १९२२ को पोलिट ब्यूरोके अध्यक्ष कामेनेवको लिखा कि स्टालिनने कल मेरे साथ जैसा कठोर व्यवहार किया वैसा ३० सालमें मेरे साथ किसीने नहीं किया था।

५ मार्च १९२३ को लेनिनने खुद स्टालिनको लिखा कि मेरी पत्नीके साथ आपने जो व्यवहार किया उसके लिए माफी मांगनी होगी या फिर आपका हमारा कोई सम्बन्ध न रहेगा।

हमें स्टालिनके इस व्यवहारपर गंभीरताके साथ विचार करना चाहिये ताकि स्टालिन के जीवनकालमें पार्टीको जैसी गहरी हानि पहुंची वैसी फिर कभी भविष्यमें न पहुंचे। स्टालिन केवल विरोधियोंके साथ ही राक्षसी व्यवहार नहीं करते थे, पर उनकी झक्कों और तानाशाहीसे सहमत न होनेवालोंके साथ भी वैसा ही बर्ताव करते थे।

स्टालिन अपनी ही बात सबसे जबरदस्ती मनवाते थे। जो नहीं मानता था वह नेतृत्वसे हाथ धोता था और अन्तमें उसका यश और उसके बाद शरीर भी समाप्त कर दिया जाता था। १७वीं पार्टी कांग्रेसके बाद तो पार्टीके बहुतसे कार्यकर्ताओंके साथ ऐसा ही हुआ।

स्टालिनने ट्राटस्कीवादी, जिनोविएववादी और बुखारिनवादी लोगोंको नष्ट किया यह तो ठीक बात हुई, पर जबतक बाहर हमारे शत्रु मौजूद थे तबतक तो इनके साथ सिद्धांत की और नरमीसे लड़ाई की गयी, पर जब देशमें समाजवादी तन्त्रकी दृढ़तासे स्थापना हो गयी और कठोरताकी कोई आवश्यकता नहीं थी तब इन लोगोंके साथ जल्लाद-सा व्यवहार किया गया।

१९३५-३७-३८ में यह राक्षसी बर्ताव शुरू हुआ जब बहुतसे ईमानदार और सच्चे क्रांतिकारियोंको भी इसे भुगतना पड़ा।

स्टालिनने 'जनताके शत्रु' नामकी नयी गालीका इजाद किया। इसको कह देनेके बाद किसीका अपराध सिद्ध करनेकी वे आवश्यकता नहीं समझते थे। इससे सैद्धांतिक मतभेद प्रकट करनेसे भी पार्टीके अन्य नेता डरने लगे। लोगोंसे उन्हें तंग कर करके 'कबूलायतें'—अपना 'अपराध' स्वीकार कराया जाने लगा। बहुतसे निरपराध भी इसीमें

मिटा डाले गये। लेनिन विगतवालोंको भी समझा-बुझाकर ठीक रास्तेपर लाते थे, पर स्टालिन हिंसा, सामूहिक दमन और आतंकका आश्रय लेते थे। एक आदमीकी निरंकुशता की प्रतिक्रिया दूसरेकी निरंकुशतामें ही होती थी। सामूहिक गिरफ्तारियां, निर्वासन और हजारों लोगोंको बिना जांच किये फांसीपर लटका देना इन सब बातोंसे अरक्षा, डर और निराशाका वातावरण सब ओर छा गया।

हालके बेरियाके मामलेमें यह प्रकट हुआ कि स्टालिन सेण्ट्रल कमेटी और पोलिट ब्यूरोके नामपर बिना इन कमेटियोंसे पूछे ही मनमानी काम करते थे। १९१८ के कठिन समयमें भी लेनिनने सातवां पार्टी कांग्रेस बुलायी थी। गृहयुद्धके होते हुए भी १९१९ में आठवीं कांग्रेस बुलायी गयी थी। १९२० में आठवीं और १९२१ में लेनिनकी 'नयी आर्थिक नीति' मंजूर करानेको पार्टीकी नौवीं कांग्रेस हुई थी। लेनिनके बाद स्टालिन भी पहले-पहले पार्टी कांग्रेस और सेण्ट्रल कमेटीकी बैठकें नियमित बुलाते थे, पर अपने जीवन के आखिरी १५ वर्षोंमें वे निरंकुश हो गये। १८ वीं कांग्रेसके बाद १९ वीं कांग्रेस १३ सालके बाद बुलायी गयी जब कि इस बीच द्वितीय पेट्रियाटिक युद्ध और युद्धोत्तर पुन-र्निर्माण जैसे महत्वके कार्य हुए। युद्ध समाप्त होनेके बाद भी ७ सालतक पार्टी कांग्रेस नहीं बुलायी गयी। महायुद्धकालमें सेण्ट्रल कमेटीकी एक भी बैठक नहीं हुई। यह सच है कि १९४१ के अक्तूबरमें सेण्ट्रल कमेटीकी बैठक बुलायी गयी थी। प्रतिनिधि मास्कोमें एकत्र होकर दो दिनतक राह भी देखते रहे, पर स्टालिनने उनसे बात करना भी ठीक नहीं समझा। स्टालिन इतने निराश थे कि सदस्योंसे बात करनेकी उनमें हिम्मत नहीं थी। १९३४ में पार्टीकी १७ वीं कांग्रेसके बाद स्टालिन पूरी तरह निरंकुश हो गये। स्टालिनने कांग्रेसके प्रतिनिधियोंका सामूहिक दमन किया। हमने अब इस सारे कांडकी जांच करायी है।

उस कांग्रेसके १३९ सदस्योंमेंसे ९८ सदस्य गिरफ्तार किये गये और अधिकतर १९३७-३८ में गोलीसे उड़ा दिये गये। इस कांग्रेसके ८० फी सदी सदस्य १९२१ से पहलेसे पार्टीमें थे। ये क्या शत्रु थे? सदस्योंमें ६० प्रतिशत श्रमिक थे। ये क्या 'बूर्ज्वा' थे? स्पष्ट है कि वे जाल फरेबसे फँसाये गये थे। १७वीं कांग्रेसमें १९६६ प्रतिनिधि शामिल हुए थे जिनमेंसे ११०८ पर 'क्रान्ति-विरोधी' होनेका अभियोग लगाकर वे पकड़े गये।

ऐसा क्यों हुआ। कारण यह था कि स्टालिन उस समयतक अपनेको पार्टीसे भी और देशसे भी और अधिक ऊंचा समझने लगे थे। सेण्ट्रल कमेटी या पार्टीकी वे परवाह नहीं करते थे। वे चाहने लगे थे कि सब लोग केवल मेरी ही सुनें और तारीफ करें।

१९३४ में किरोवकी हत्याके बाद तो सामूहिक दमनका स्टालिनका काम और भी तीव्र हो गया। आदेश दिया गया कि क्षमादानकी कोई प्रार्थना स्वीकार न की जाय।

१९२० में राजनीतिक स्थिति सुधरते ही लेनिनने मृत्युदण्ड रद्द करवा दिया था, पर स्टालिन इससे उलटा काम करते थे। ट्राटस्कीवादियोंका जोर १९२७ से ही खतम हो गया था। १४ वीं कांग्रेसमें उनके पक्षको केवल ४००० वोट मिले थे जब कि विपक्षमें ७ लाख २४ हजार वोट थे, फिर भी स्टालिनने कठोर दमनका सहारा लिया। ईमानदार कार्यकर्ता सताये गये। उनसे उनके कथित अपराधोंकी झूठी-झूठी स्वीकारोक्तियाँ लेनेके लिए उनको तरह-तरहसे यन्त्रणाएँ दी गयीं, यातनाएँ दी गयीं, बेहोश किये गये, उनकी विवेकबुद्धि नष्ट की गयी, मनुष्यत्वके विपरीत उनके साथ व्यवहार किया गया और इस तरह उनसे अपने अपराध मनवाये गये। इन सब मामलोंकी अब पुनः जांचकर सुप्रीम कोर्टने ७६७९ आदमियोंको रिहा कर उनका पुनर्वास करनेका आदेश दिया है, पर इनमेंसे बहुतसे मर चुके हैं।

एक व्यक्तिके हाथमें सत्ता केन्द्रित हो जानेके कारण द्वितीय महायुद्धमें बड़ी कठिन स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। हमारे उपन्यास, फिल्में और इतिहास यह बताता है कि जर्मन सेनाको मास्को और लेनिनग्राडतक आगे बढ़ने देनेकी योजना स्टालिनने पहले ही बना ली थी, पर युद्धके पहले हमारे अखबार आदि यह डींग हांकते थे कि हम शत्रुके १ बारका जवाब ३ बार कर देंगे, उसे उसीकी भूमिपर परास्त करेंगे, अपनी सीमामें घुसने न देंगे। बादमें स्टालिनने यह कहना शुरू किया कि जर्मनोंने अचानक हमला किया इसीलिए शुरू-शुरूमें हमको हार खानी पड़ी। पर यह बिलकुल असत्य है। २ अप्रैल, १९४१ को चर्चिलने अपने राजदूत क्रिप्सकी मार्फत स्टालिनको चेता दिया था कि हिटलर रूसपर हमला करनेकी तैयारी कर रहे हैं। १८ अप्रैलको और उसके बाद भी कई बार चर्चिलने यही चेतावनी दी पर स्टालिनने इसपर न केवल कोई ध्यान ही नहीं दिया, पर यह भी कहा कि ऐसी बातोंपर विश्वास कर जर्मनोंको नाराज करनेवाली कोई बात नहीं करनी चाहिये। हमारे अपने सूत्रोंने भी ऐसी ही खबरें दीं, पर स्टालिन ने अपने आदमियोंपर भी विश्वास नहीं किया। १८ जूनको लंदनके दूतावाससे यह खबर आयी कि हिटलरने सोवियट सीमापर १९७ डिवीजन जर्मन सेना एकत्र की है। पर स्टालिनने कुछ नहीं किया। हम पहलेसे तैयार रहते तो हमारा युद्धमें नुकसान अधिक न होता। युद्ध शुरू होनेपर हमारे पास आवश्यक शस्त्रास्त्र भी नहीं थे। मैंने क्रिएवसे मास्कोमें मालेनकोवको टेलिफोन कर कहा कि राइफलें भेजिये, पर उन्होंने उत्तर दिया कि आपके यहां भेजनेके लिए हमारे पास राइफलें ही नहीं हैं। जर्मन आक्रमण शुरू होनेपर भी स्टालिनको यह विश्वास नहीं था कि जर्मनोंने सचमुच ही हमला किया है। १९३७-४१ में स्टालिनने सैनिक अफसरोंपर शंका कर-करके उनमेंसे बहुतोंको खतम कर दिया था। स्पेनकी लड़ाईमें अनुभव प्राप्त करीब-करीब सभी अफसरोंको स्टालिनने मरवा डाला था। नतीजा यह हुआ कि सेनामें भी अनुशासन नहीं रहा। रोकोसोस्की, गोर्बाटोव, मेरेत्स्कोव, पोडलास जैसे बड़े-बड़े सेनाधिकारी या तो जेल

में ठूस दिये गये थे या खतम कर दिये गये थे। पहली हारके बाद स्टालिनकी हिम्मत पस्त हो गयी। एक जगह भाषणमें उन्होंने कहा था कि जो कुछ लेनिनने बनाया था वह सब नष्ट हो गया। इसके बाद स्टालिन निराश हो बैठ गये। पोलिटब्यूरोके कुछ सदस्य उनके पास गये और उन्हें समझाया। स्टालिन लड़ाईकी कोई बात समझते ही नहीं थे। एक बार मोजाइस्क सड़कपर मोटरमें जानेके अलावा वे न तो कभी किसी रणक्षेत्रपर गये थे और न किसी जीते हुए शहरका उन्होंने दौरा किया। स्टालिनके आदेशोंसे उलटे नुकसान ही पहुँचता रहा। स्टालिन अपनेको इतना युद्धपारंगत समझते थे कि कमरेमें रखे ग्लोबपर निशान बना-बनाकर युद्ध क्षेत्र देखते थे। टेबलपर बड़ा नकशा फैलाकर देखनेकी आवश्यकता ही नहीं समझते थे। खारकोवसे सेना हटाना जरूरी था। मैंने वासिलेव्स्कीको मास्को टेलिफोन किया पर इन्होंने कहा कि मैं स्टालिनसे नहीं कहूँगा क्योंकि वे नहीं मानेंगे। मैंने स्टालिनको टेलिफोन किया तो टेलिफोनपर मालेनकोव बोले। स्टालिन दो कदमपर थे पर वे न बोले और न अपनी जिद छोड़नेको तैयार हुए। नतीजा यह हुआ कि हमारा करारा नुकसान हुआ। हमारे लाखों सैनिक मरे। यही स्टालिनकी 'प्रतिभा' थी। स्टालिनका गुस्सा बड़ा तेज था। यह भी समझते थे कि वे कभी गलती कर ही नहीं सकते। खैर हमारे सेनापतियोंने किसी तरह हमारी लाज बचायी, पर विजयका सेहरा स्टालिन खुद अपने सिरपर बांधना चाहते थे। मार्शल जुकोवको बदनाम करनेके लिए उन्होंने यह कहानी गढ़ी कि लड़ाई शुरू करनेके पहले वे जमीन सूंघकर यह तै करते थे कि लड़ना चाहिये या नहीं।

१९४३ के अन्तमें स्टालिनने काराचाई और कोलमिक प्रदेशोंकी पूरी प्रजाको ही निर्वासित कर दिया। मार्च १९४२ में चेच्चेन और इंगुश गणतन्त्रके लोग भी इसी प्रकार निर्वासित किये गये और गणतन्त्र ही खतम कर दिया गया। अप्रैलमें बालकार प्रदेशके लोग भी निर्वासित किये गये और गणतन्त्रके नाममेंसे उनका नाम ही हटा दिया गया। स्टालिनकी चलती तो यूक्रेनका भी यही हाल करते। लगभग इसी समय लेनिनग्राड काण्ड भी रचा गया। इसी जालमें कामरेड वोज्नेसेन्स्की, कुज्नेत्सोव, रोदिनोव, पोपकोव आदि खतम कर दिये गये।

महायुद्धके बाद तो स्टालिन और भी अधिक झक्की, बिगड़ैल और क्रूर हो गये। बेरियाने इसका खूब फायदा उठाया। उन्होंने हजारों रूसियोंकी हत्या की थी। वोज्नेसेन्स्की और कुज्नेत्सोवको अपनेसे बढ़ते देखकर उन्होंने जाल-फरेब, जाली चिट्ठियां, झूठे बयान, अफवाह और नकली संवाद रच कर उन्हें फंसाया। हमने अब निरपराधोंको बसा दिया है। आवाकुमोव जैसे जालियोंको सजा दी है। इसी प्रकार १९५१-५२ में जार्जियामें मिग्रोलियन राष्ट्रवादी संस्थाका जाल रचाकर बहुतसे सच्चे कम्युनिस्टोंको फंसाया गया। सड़े हुए दिमागमें ही यह बात आ सकती है कि जार्जिया जो सोवियट शासनमें इतना सम्पन्न हुआ है; पिछड़े हुए टर्कोंके साथ मिलना चाहता है।

केवल अन्दरूनी ही नहीं, बाहरके मामले भी स्टालिन इसी तरह बिगाड़ते रहे। यूगोस्लावियाका मामला फजूल ही इतना बिगाड़ा गया। एक बार मैं कियवसे मास्को आया तो स्टालिनने मुझे टीटोको भेजी एक चिट्ठी दिखायी और कहा कि 'वह समझता क्या है। मैं अपनी कानी उंगली इस तरह हिलाऊंगा और टीटो गिर जायेंगे।' इस उंगली हिलानेकी हमें बहुत कीमत चुकानी पड़ी। स्टालिनने अपनी कानी उंगली बहुत हिलायी, और भी जो कुछ हिला सकते हैं, सब हिलाया, पर टीटो गिरे नहीं। अब हम यूगोस्लावियासे अपने सम्बन्ध सुधार रहे हैं।

डाक्टरोंके षड्यन्त्रका मामला भी ऐसा ही था। स्टालिनने फरमाया—विनोग्राडोवको हथकड़ी पहनाओ। फलानेको पीटो, इग्नातिएवसे कहो कि इनसे कबूली नहीं लिखायी तो तुम्हारे धड़परसे सिर गायब हो जायगा। जजसे कहा कि मारो, मारो और मारो और सबसे कबुलवाओ। अब हमने इस काण्डकी जांच करायी तो सारा जाल निकला। वे सब डाक्टर छोड़ दिये गये हैं। वे पहलेकी ही तरह हम लोगोंका इलाज कर रहे हैं। इन सब कुचक्रोंके पीछे बेरिया था जो एक विदेशी गुप्तचर सर्विसका एजेण्ट होते हुए भी स्टालिनके पासतक हजारों लोगोंकी लाशोंकी सीढ़ीपर चढ़कर पहुँच गया था। स्टालिनकी कमजोरियोंका वह लाभ उठाता था।

१९४८ में स्टालिनका जो संक्षिप्त जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ था उसकी हस्तलिपि में स्टालिनने खुद अपने हाथ अपनी तारीफ लिखकर घुसेड़ दी थी। अपनेको सबसे बड़ा युद्धनीति शास्त्री लिखा था।

कम्युनिस्ट पार्टीका इतिहास एक कमीशनने लिखा था। फिर भी स्टालिनने यह छपवा दिया कि स्टालिनने उसे लिखा है। यह भी लिखा कि आजके लेनिन स्टालिन ही हैं।

जार बादशाह भी अपने नामसे पुरस्कार नहीं चलाते थे। स्टालिनने खुद स्टालिन-पुरस्कार देना शुरू किया।

स्टालिनने ऐसा राष्ट्रीय गान चलवा दिया जिसमें पार्टीका नाम भी नहीं है पर खुद स्टालिनकी खूब तारीफ है। अब प्रेसेडियमने नया राष्ट्रगान बनानेका आदेश दिया है। स्टालिनकी जानकारीमें ही बहुतसे कारखानों, शहरोंको उनका नाम दिया गया और जीते जी उनके पुतले खड़े किये गये। २ जुलाई १९५१ को स्टालिनने खुद अपने हस्ताक्षर से एक आदेश निकाला कि वोल्गा-डान नहरपर स्टालिनका एक बड़ा भारी स्मारक खड़ा किया जाय। ४ सितम्बरको स्टालिनने इसके लिए खुद ३३ टन तांबा दिलवाया। निर्जन स्थानमें हजारों रूबल खर्चकर स्टालिनका खूब ऊंचा पुतला वहां खड़ा किया गया है। लेनिनके यशको दबानेकी स्टालिन हमेशा कोशिश करते रहे। ३० साल हो गये कि लेनिनका स्मारक बनानेका निश्चय हुआ था, पर स्टालिनने उसे नहीं बनाया।

१४ अगस्त १९२५ को शिक्षा क्षेत्रमें लेनिन पुरस्कार देनेकी घोषणा की गयी थी, पर आज तक वे नहीं शुरू किये गये। इसे भी हम ठीक करेंगे। बहुत सी किताबों और फिल्मोंमें लेनिनको पूरा श्रेय नहीं दिया गया। स्तालिनको '१९१९ का अविस्मरणीय साल' फिल्म देखनेका बड़ा शौक था क्योंकि उसमें स्तालिन तलवार हाथमें लिये लड़ते हुए एक बख्तरबंद ट्रेनकी सीढ़ीपर दिखाये गये हैं, पर वोरोशिलोवसे पूछिये तो वे बता देंगे कि स्तालिन कितना लड़ना जानते थे। हर जगह यह दिखाया गया है कि १९१७ की अक्टूबर क्रांतिमें भी सारा काम लेनिन स्तालिनसे पूछकर ही किया करते थे। पर वस्तुतः १९२४ तक स्तालिनको बहुत कम लोग जानते थे। यह सब ठीक करना होगा ताकि इतिहास, साहित्य और कलाकृतियोंमें लेनिनको उनका उचित श्रेय मिल सके।

व्यक्तिपूजाने हमारे देशमें बहुतसे चापलूस, गलत आशावादके विशेषज्ञ और धोखेबाज पैदा किये। सच्चे कार्यकर्ताओंने आतंक और डरके मारे काममें दिलचस्पी लेना छोड़ दिया।

देशमें दूर-दूर क्या हो रहा है इसकी स्तालिनको कभी कोई जानकारी नहीं रहती थी। इसका सबूत कृषिके बारेमें उनके आदेश हैं। कृषिकी खराब हालतके बारेमें हमने उनको कई बार बताया, पर वे मानते ही नहीं थे। न कुछ जानते थे क्योंकि वे कभी गांव-गांव जाकर लोगोंसे मिलते ही नहीं थे। वे केवल फिल्में देखकर देशकी हालत के बारेमें अपनी राय बनाते थे और ये फिल्में उनकी चापलूसी करनेके लिए बनायी जाती थीं। बहुत सी फिल्मोंमें दिखाया गया था कि सामूहिक खेतोंपर मुर्गे-मुर्गियां इतनी अधिक संख्यामें पैदा की जा रही हैं कि टेबुल भी उनके बोझसे झुक जा रहे हैं और स्तालिन इसीपर विश्वास कर लेते थे। जनवरी १९२८ के बाद स्तालिन कभी बाहर ही नहीं गये। जनताके साथ उन्होंने सीधा कोई संबंध नहीं रखा। कृषि फार्म सुधारनेके लिए हमने एक रिपोर्ट तैयार कर दी, पर वह फरवरी १९५३ में दाखिल दफ्तर कर दी गयी। उलटे स्तालिनने सुझाया कि फार्मोंपर ४० अरब रूबल और टैक्स बढ़ा दिया जाय, पर फार्म सरकारके हाथ जितना सामान बेचते थे उसका कुल दाम भी ४० अरब रूबल नहीं होता था। पर स्तालिनको आंकड़ोंसे क्या मतलब था। वे अपनेको सर्वज्ञ समझते थे और उन्होंने जो कहा वह ब्रह्मवाक्य समझकर सब उनकी बुद्धिकी तारीफ करने लग जाते थे।

स्तालिनके समय अन्य राष्ट्रोंसे हमारे शांतिपूर्ण संबंध खतरेमें पड़ जाते थे क्योंकि जो कुछ निर्णय करना रहता स्तालिन अकेले ही करते।

स्तालिनने कोसियार, रुद्जुटाक, आइके, पोस्तिशेव आदि पार्टी और सरकारके बड़े-बड़े नेताओंसे बहुत दुर्व्यवहार किया। पोस्तिशेवसे एक दिन स्तालिनने पूछा कि तुम अपनेको क्या समझते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि मैं बोलशेविक हूं, कामरेड स्तालिन,

बोलशेविक हूँ। स्टालिनने इसको अनादर सूचना माना और कुछ दिनोंके बाद पोस्टिशेव समाप्त कर दिये गये।

एक बार बुलगानिन और मैं मोटरमें कहींसे आ रहे थे। उन्होंने कहा कि हालत यह हो गयी है कि आप स्टालिनके बुलानेपर उनके साथ मित्रकी तरह बात करने जाइये, पर यह विश्वास नहीं होगा कि आप सही-सलामत घर लौटेंगे या जेल भेज दिये जायंगे। वोजनेसेन्स्की, कुजनेस्टोव और रोडियोनोव स्टालिनके दमनके शिकार हुए। स्टालिनने सेण्ट्रल कमेटीके पोलिटब्यूरोके अन्दर भी छोटे-छोटे ब्यूरो बनाकर सत्ता केन्द्रित कर दी थी। पांच सदस्योंका पंजा, छका छक्का, सातका सत्ता—इस प्रकार स्टालिन ताशका खेल खेलते थे। वोरोशिलोवको कुछ दिनोंतक पोलिटब्यूरोकी बैठकोंमें आनेके लिए मनाही कर दी गयी थी। सदस्य होनेपर भी वे बुलाये नहीं जाते थे। स्टालिन शक करते थे कि वे अंग्रेजोंके एजेण्ट हैं। उनके घरमें वे क्या बोलते हैं यह जाननेके लिए एक गुप्त माइक्रोफोन लगा दिया गया था। आण्ड्रेयेवको भी इसी प्रकार बैठकोंमें शामिल होनेकी मनाही की गयी थी। १९ वीं पार्टी कांग्रेसके बाद सेण्ट्रल कमेटीकी जो पहली बैठक हुई उसमें स्टालिनने यह संकेत किया कि मोलोटोव और मिकोयानपर कुछ निराधार अभियोग लगाये गये हैं। स्टालिन यदि कुछ दिन और जीवित रहते तो ये दोनों सज्जन आज यहां भाषण करनेके लिए उपस्थित न होते। स्टालिन पोलिटब्यूरोके सभी पुराने सदस्यों को समाप्त कर देना चाहते थे। (क्रुश्चेवके नये पोलिटब्यूरोका करीब-करीब यही हाल है—लेखक) पोलिटब्यूरोकी सदस्य संख्या उन्होंने कम कर २५ कर दी उसका उद्देश्य भी यही था। जो नये लोग आते वे स्टालिनकी हांमें हां पूरी तरह मिलाते। उनके सारे पापोंपर परदा भी पड़ जाता।

लेनिन नम्रता, शालीनता और विनयकी मूर्ति थे। हम लोग इस रास्तेसे भटक रहे हैं। बहुतसे कारखानों, खेतों आदिको हमने अपने तथा अन्य जीवित नेताओंके नाम दे दिये हैं। इसे ठीक करना होगा। अपना नाम हरएक व्यक्तिकी निजी सम्पत्ति है। उसका उपयोग इस तरह नहीं करने देना चाहिये। कियव रेडियोका नाम कोसियार रेडियो रखा गया था। रोज कार्यक्रम शुरू होता था तो कहा जाता था कि यह कोसियार रेडियो है। जिस दिन कोसियार पकड़े गये उस दिन उनका नाम नहीं लिया गया तो लोग समझ गये कि उनका कुछ बुरा-भला हो गया है।

मैं यह भाषण पार्टीकी गुप्त बैठकमें कर रहा हूं ताकि ये बातें अखबारोंमें या बाहरके हमारे शत्रुओंतक न पहुँच सकें। हमें व्यक्तिपूजाको हमेशाके लिए दफन कर देना है।”

——:०:——

(१७)

परिवर्तनशील अर्थ-व्यवस्था

मार्क्स-दर्शन और कम्युनिस्ट-दर्शनका मूल मन्त्र या ध्रुव-लक्ष्य यह है कि मनुष्यकी भौतिक उन्नतिमें ही और सब उन्नतियाँ—सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, निःश्रेयस (?)—निहित रहती हैं। आजके विज्ञान और यंत्रशिल्पके युगमें भौतिक उन्नतिका मूलाधार भारी उद्योग ही हो सकते हैं और भारी उद्योगोंको विशाल परिमाणमें स्थापित करने, चलाने और उनमें उत्तरोत्तर उन्नति करनेका काम कोई व्यक्ति नहीं, कई व्यक्तियोंकी बड़ी कम्पनियाँ भी नहीं, पर सारे समाजकी प्रतिनिधि देशकी सरकार ही कर सकती है। सरकार यह काम कर सके इसलिए पुरानी पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था और उसके आधारपर बनी शासन व्यवस्थाएं उखाड़ फेंकना जरूरी है। यह काम अगर शान्तिसे और रक्तपातके बिना हो तो अच्छा ही है, पर ऐसा होता नहीं इसलिए सर्वहारा वर्गोंको हथियार बनाकर हिंसक क्रान्ति करनी पड़ती है और रूसमें, जहां दुनियाकी सबसे पहली कम्युनिस्ट क्रान्ति हुई, कई वर्षोंतक सर्वहारा अधिनायकतन्त्र (डिक्टेटरशिप आफ दि प्रोलेतारियत) स्थापित करना पड़ा। (द्वितीय महायुद्धके बाद पूर्वी यूरोपके देशोंमें कम्युनिस्ट क्रान्तियाँ केवल रूसी सेनाकी उपस्थितिके कारण ही सम्भव हो गयी और बादमें सर्वहारा अधिनायक तन्त्रोंकी भी स्थापना नहीं करनी पड़ी।)

भगवान् रामका राज्य भी अधिनायक तन्त्र था, पर राम लोकहितकारी, लोकप्रिय अधिनायक थे इसलिए रामराज्य आदर्श राज्य माना जाता है, पर अधिनायक तन्त्रमें इस बातकी कोई गारण्टी नहीं रहती कि राजा-अधिनायकका लड़का या प्रजा-अधिनायकका उत्तराधिकारी लोकप्रिय ही होगा। उसके स्वेच्छाचारी होनेकी ही अधिक संभावनाएं होती हैं, और इतिहासने भी इसको बार-बार साबित किया है, इसलिए विचारवान् दार्शनिक अधिनायकवादसे अधिक अच्छा प्रजातन्त्र वादको समझते हैं यद्यपि अधिनायक तन्त्रमें प्रगति तेजीसे और प्रजातन्त्रमें देरसे होती है।

सोवियट संघमें भी करीब-करीब यही हुआ। लेनिनके नेतृत्वमें वहाँ सर्वहाराका अधिनायक तन्त्र स्थापित हुआ और इसके लक्ष्यकी प्राप्तिमें जो भी बाधाएं विघ्न होकर आयीं उनको लेनिनने कभी कूटनीतिसे और कभी शल्यक्रिया कर दूर किया, पर लेनिन खूंखार राक्षस अधिनायक नहीं थे। लेनिनके उत्तराधिकारी स्टालिनने इतिहासको फिर दोहराया और अधिनायकवादको खूंखारी, व्यक्तिपूजा और राक्षसत्वमें बदल दिया। १९२४ से १९५३ तक २९ वर्षके स्टालिन राज्यके अन्तिम कई वर्षोंतक रूसको इस राक्षसराजमें रहनेका पाप भोगना पड़ा। यह उसका सौभाग्य ही समझना चाहिये कि

इस रावणराज्यके होते हुए भी परिस्थिति और इतिहासने उसका ऐसा साथ दिया तथा रूसी जनताकी देशभक्ति और शौर्य ऐसा उभड़ा कि दूसरे महायुद्ध जैसे भीषण संकटमें भी वह उबर गया।

व्यक्तिगत रूपसे शंकालु, खूंखार, प्रशंसा और चापलूसी प्रिय होते हुए भी स्टालिन ने कम्युनिस्ट दर्शनका भौतिक ध्रुव-लक्ष्य छोड़ा नहीं था और सोवियट अर्थ-व्यवस्थाका आधार भारी उद्योगोंकी तेजीसे उन्नति बनाये रखा था। स्टालिनके आजके उत्तराधिकारी क्रुश्चेवने भी वही लक्ष्य सामने रखा है और इस लक्ष्यमें अपनेसे आगे निकल गये ब्रिटेन, फ्रांस और पश्चिमी जर्मनीको पछाड़कर वे अब अमेरिकाको १५ सालके अन्दर पछाड़नेकी योजनाएं बना चुके हैं।

कम्युनिज्मका भौतिक आधार भारी उद्योगोंका तीव्र विस्तार कायम रखकर भी परिस्थितिके अनुसार और पिछले अनुभवोंके आधारपर सोवियट अर्थ-व्यवस्थामें परिवर्तन होते आये हैं। स्टालिनके जड़ युगमें परिवर्तन धीरे-धीरे हुए, पर स्टालिनके बाद ये अधिक तेजीसे और साहसपूर्वक हुए।

इस अध्यायमें सोवियट अर्थ-तन्त्रके इसी परिवर्तनशील इतिहासका थोड़ेमें विवरण दिया जा रहा है—

सोवियट अर्थतन्त्रके मूल आधार

सोवियट अर्थतन्त्रकी स्थापनाका पहला कदम उत्पादनके साधनों और औजारोंपर व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त करना और मनुष्य द्वारा मनुष्यका शोषण समाप्त करना यानी सामुदायिक श्रमकी स्थापना रहा है। इनकी जगह उत्पादनके साधनों-औजारोंका स्वामित्व समाजका यानी सरकारका हो गया। भूमि, बंक, कारखाने और मिलें समाजवादी सरकारकी हो गयी और उनसे सारे समाजके हितमें उत्पादन किया जाने लगा। व्यक्तिगत हित समाप्त हो गया। इसका मतलब यह नहीं कि व्यक्तिगत सारी सम्पत्ति ही समाप्त हो गयी, केवल सम्पत्तिका दुरुपयोग दूसरे मनुष्यके श्रम या बुद्धिके शोषणके लिए किया जाना समाप्त हो गया। सोवियट सरकारने क्रांतिके पहले ही दिन सारी भूमिका राष्ट्रीयकरण करनेका आदेश निकाला, पर कुलाक यानी धनी किसानोंको अंतिम रूपसे धीरे-धीरे समाप्त करनेमें उसे पूरे १२ साल लगे। कारखानोंके उत्पादनके शत-प्रतिशत समाजीकरणमें भी कई साल लगे।

सोवियट संघमें समाजवादी सम्पत्तिके दो रूप हैं—एक तो वह जिसपर राज्यका पूरा अधिकार है और दूसरा वह जिसमें सम्पत्तिपर सहकारी संस्थाओं और सामुदायिक कृषि-फार्मोंका अधिकार है। पहले प्रकारमें सारी भूमि, खनिज सम्पत्ति, जल, वन, कारखाने, यातायात, मशीन और ट्रैक्टर स्टेशन, बंक आदि वित्तीय संस्थाएं, म्युनिसिपल संस्थाएं और अधिकतर व्यापार-प्रतिष्ठान आते हैं। भूमि और कृषि यन्त्रोंको मिलाकर

खेतीकी तीन चौथाई सम्पत्ति राज्यके अधिकारमें आ जाती है। उत्पादनके सभी साधनोंकी ९१ प्रतिशत सम्पत्ति राज्यकी सम्पत्ति हो गयी है। सहकारी संस्थाओं और सामुदायिक फार्मोंकी सम्पत्ति सारे राष्ट्रकी नहीं समझी जाती। इसमें जो छोटे-छोटे कारखाने होते हैं वे सभी, मशीनें, यन्त्र और खेतीके औजार, चौपाये-मुर्गी बत्तख और सामुदायिक फार्मोंपर तथा सहकारी संस्थाओं द्वारा होनेवाला उत्पादन आता है। ये संस्थाएँ अधिकतर उपभोग्य सामान बनाती हैं। १९५३ के अन्तमें सोवियट संघमें ऐसी १६ हजार सोसाइटियां थीं। व्यापार आदि उपभोक्ता सहकारी सोसाइटियोंके जिम्मे रहता है। ऐसी २३ हजार सोसाइटियां रूसमें इस समय हैं। दूकानों, स्टोरों और गोदामोंकी व्यवस्था ये सोसाइटियां करती हैं।

राज्य द्वारा संचालित जो प्रतिष्ठान होते हैं उनमें तैयार होनेवाले मालका दाम सरकार निश्चित करती है और किस प्रकार बेचा जाय इसका निश्चय भी सरकार ही करती है। उत्पादन-व्यय और कीमतोंमें कोई सम्बन्ध नहीं रहता। सहकारी संस्थाओं और सामुदायिक कृषिके उत्पादनपर स्वामित्व उन संस्थाओंका रहता है। कृषिके उत्पादनका एक निश्चित हिस्सा सरकार लेती है और बाकीमेंसे कुछ संस्थाके सुरक्षित कोशमें जाता है और शेष काम करनेवालोंमें उनके श्रमके अनुपातमें वितरित कर दिया जाता है।

राष्ट्रीय सम्पत्तिकी रक्षा और संवर्धन संविधानतः हर एक नागरिकका कर्तव्य माना जाता है।

निजी सम्पत्तिका अस्तित्व

समाजवादी अर्थतन्त्रके अतिरिक्त शिल्पोद्योगवालों और किसानोंका व्यक्तिगत निजी सम्पत्तिका अस्तित्व भी रूसमें है, पर वह नगण्य, १९५५ में कुल कृषि उत्पादनका ‘१३ प्रतिशत रहा है। इस निजी सम्पत्तिका उपयोग उसका स्वामी और परिवारके लोग अपने लिए ही कर सकते हैं। इस सम्पत्तिसे दूसरे मनुष्यके श्रमको किरायेपर लेकर और अधिक सम्पत्ति पैदा करना रूसमें गैरकानूनी है। श्रमिकोंकी आय और आयमेंसे बचायी गयी रकम निजी सम्पत्ति मानी गयी है। इससे अपने लिए मकान, घरेलू उपयोगकी चीजें, मोटरकार, मोटरबोट आदि व्यक्तिगत सम्पत्तिके तौरपर खरीदे और रखे जा सकते हैं।

सामुदायिक खेतोंमें काम करनेवाला हर एक किसान भी अपनी अलग घरेलू जमीन के टुकड़ेपर अतिरिक्त निजी चौपायें-मुर्गी बत्तख, रहनेका मकान और छोटे-छोटे खेतीके औजार निजी सम्पत्तिकी तरह रख सकता है। वसीयत, उपहार और होड़में जीती सम्पत्ति भी निजी सम्पत्तिकी तरह रखी जा सकती है।

राष्ट्रव्यापी पूर्व-नियोजन

सोवियट अर्थतन्त्र पूर्व-नियोजित रहता है, अपने आप विकसित नहीं होता।

नियोजनसे देशभरके भौतिक, श्रमिक और वित्तीय साधनोंका अधिकसे अधिक उपयोग होता है और उत्पादनके वितरणपर भी राज्यका अधिकार होनेसे आर्थिक उथल-पुथल कभी भी नहीं हो सकती। लेनिनने समाजवादी उत्पादनकी सुनियोजित और तेजीसे उन्नति, देशके विद्युतीकरण और भारी उद्योगोंका विकास इन तीनोंको समाजवादी अर्थतंत्रका भौतिक आधार शिलाएं माना था। भारी उद्योगोंमें मशीनोंके बनानेपर अधिक जोर दिया जाता है ताकि अन्य उद्योगोंकी आवश्यकताकी पूर्ति हो सके।

पूर्वनियोजनसे उद्योग और कृषिका परस्पर अनुपात भी निश्चित किया जा सकता है। कृषिके लिए उद्योग कितनी मशीनें दे सकते हैं इसपर कृषिकी उन्नति निर्भर करती है। नियोजनसे उद्योगोंकी अवस्थिति, कच्चे मालकी उपलब्धि, उत्पादनकी खपत आदिपर भी समुचित नियन्त्रण रहता है। केन्द्रीय नियोजन होनेपर भी स्थानीय आवश्यकताओं पर ध्यान देना ही पड़ता है और एक-एक नियोजन अवधिमें प्राप्त अनुभवोंके आधार-पर नये नियोजनमें परिवर्तन किया जा सकता है।

विद्युतीकरणकी योजना

१९१७ की क्रान्तिके बाद प्रथम महायुद्धोत्पन्न आर्थिक मन्दी, १८ बाहरी देशोंके आक्रमण, गृहयुद्ध आदिके होते हुए भी नये क्रांतिकारी रूसी नेताओंने सुप्रीम इकानामिक कौंसिलकी स्थापना की। सबसे पहले सारे देशके विद्युतीकरणके उद्देश्यसे अप्रैल १९१८ में स्टेट कमीशन फार इलेक्ट्रिफिकेशन आफ रशिया (गोएलरो GOELRO) की स्थापना की गयी। फरवरी १९२० में हुई सोवियटोंकी आठवीं कांग्रेसने गोएलरो योजनापर अपनी स्वीकृति दे दी। इस योजनाका उद्देश्य ५० करोड़ किलोवैट घण्टे विद्युत्शक्तिको बढ़ाकर १०-१५ वर्षमें ८ अरब ८० करोड़ किलोवैट घण्टा प्रति वर्ष करना था। किसी एक बड़े देशके लिए इतनी बड़ी आर्थिक योजना पहलेसे बनानेका दुनियाके इतिहासमें यह पहला उपक्रम था। विद्युतीकरणसे उद्योग तो तेजीसे बढ़ते ही हैं, पर जल विद्युत्घरोंके कारण कार्यशक्तिकी प्राप्तिके अतिरिक्त, सिन्चाई, यातायात आदिका भी लाभ होता है। जल विद्युत्गृहोंके अतिरिक्त वाष्प विद्युत्गृहोंको बढ़ानेका जो कार्यक्रम था उसमें ईंधनके रूपमें पीट, कोयला और अन्थ्रासाइटका चूर जलानेकी योजना भी थी। अन्थ्रासाइटका चूर पहले-पहले बिजलीघरोंमें इस्तेमाल किया जाने लगा था।

गोएलरो योजनाको उस समय पूंजीवादी देशोंने कल्पनाकी उड़ान बताया था, पर १०-१५ वर्षोंमें आयोजनमें निश्चित लक्ष्यसे तीन गुना बिजली पैदा की जाने लगी और १९३५ में ८ अरब ८० करोड़की जगह २६ अरब ३० करोड़ किलोवैट घण्टा बिजली प्रति वर्ष बनने लगी। १९३७ में उत्पादन और बढ़ा और रूस १५ वें नम्बरसे २४ सालमें एकदम दुनियाके विद्युत् उत्पादनमें तीसरे नम्बरका देश हो गया। अमेरिका और जर्मनी अब भी रूससे आगे थे। पनबिजलीघरोंकी संख्या बढ़ने लगी और वाष्प बिजलीघरोंमें

बढ़िया मेलका पीट और कोयला जलने लगा जिससे अच्छे मेलका कोयला, डीजेल और मूल तेल दूसरे महत्त्वके उद्योगोंमें लगाया जा सका।

गोएलरो योजना १०-१५ वर्षोंकी लम्बी अवधिकी बनायी गयी थी, पर ६-७ सालमें ही यह महसूस किया गया कि पंचवर्षीय जैसी छोटी अवधिकी योजनाएं बनाना आवश्यक है। इसलिए सन् १९२७ में पहली पंचवर्षीय योजना बनायी गयी। उद्योग-धन्धे इतने पनप चुके थे कि १९२८ में अन्ततक देशके कुल उत्पादनका ४२ प्रतिशत कल-कारखानोंमें तैयार होने लगा जिसमें ८२ प्रतिशतसे अधिक उत्पादन समाजवादी अर्थतन्त्र के अन्तर्गत हुआ।

१९२१ में रूसमें भीषण अकाल पड़ा, पर इसके बाद समाजवादी अर्थतन्त्रने कृषि को भी संभाल लिया। उद्योगोंकी वृद्धिसे ही कृषिका भी पुनस्संघटन किया जा सका। फिर भी १९२७ तक रूस पुराने ढंगका कृषि प्रधान देश ही रहा।

पहली पंचवर्षीय योजना (१९२८-३२)

दिसम्बर १९२७ में कम्युनिस्ट पार्टीकी १५ वीं कांग्रेसने पहली पंचवर्षीय योजनापर बहस कर सोवियट अर्थतन्त्रको एक नयी दिशा दी। १६ वीं कांग्रेसने और सोवियटोंकी पांचवीं कांग्रेसने उक्त योजना स्वीकार की और यह (१९२८-३२) चालू हो गयी। इसमें भारी उद्योगों और मशीन-निर्माणपर सबसे अधिक जोर दिया गया था। ५ सालमें औद्योगिक उत्पादन १८ अरब ३० करोड़से बढ़ाकर ४३ करोड़ २० करोड़ रूबलका करने का लक्ष्य था। कृषिमें पहली योजनामें २३ प्रतिशत कृषक परिवारोंको सामुदायिक कृषि में लाकर १७·५ प्रतिशत कृषियोग्य भूमि और ४३ प्रतिशत विक्रय योग्य खाद्यान्न समाजवादी अर्थतन्त्रमें लानेका निश्चय किया गया था।

रूसी नेताओंका दावा है कि पहली पंचवर्षीय योजना ४ साल ३ महीनेमें ही पूरी हो गयी। श्रमिकोंकी संख्या १ करोड़ १६ लाखसे बढ़कर २ करोड़ २९ लाख हो गयी। बेकारीका रूससे नाम-निशान मिट गया और अन्तिम वर्षोंमें धनी किसानोंका पूरी तरह नाश कर दिया गया। ६१·५ प्रतिशत कृषक परिवार सामुदायिक कृषिमें आ गये। २ लाख सामुदायिक खेत, ५००० सरकारी खेत बने और ७८·१ प्रतिशत कृषि योग्य भूमि सोवियट अर्थतन्त्रके अन्तर्गत आ गयी। १९३३ तक खेतोंपर १५०००० ट्रैक्टर चलने लगे।

दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९३३-३७)

दूसरी पंचवर्षीय योजना १९३३-३७ के लिए थी, पर यह भी ४ साल ३ महीनेमें ही पूरी हो गयी। जनवरी-फरवरी १९३४ की १७ वीं पार्टी कांग्रेसने और नवम्बर १९३४ में मन्त्रि परिषद्ने इसे स्वीकार किया था। इसमें राष्ट्रीय आय १२० प्रतिशत, कुल औद्योगिक उत्पादन ४३ अरब २० करोड़से ९२ अरब ७० करोड़ रूबलका और औद्योगिक उत्पादनकी शक्ति १६·५ प्रतिशत बढ़ानेका निश्चय था। पूंजीवादके बचे-खुचे अवशेष

इस योजनाकालमें प्रयास किये गये। शत-प्रतिशत वाणिज्य व्यवसाय सरकारके हाथमें आ गया और जनताका मस्तिष्क कम्युनिज्मके लाभसे पूरा भरनेके लिए सांस्कृतिक और सामाजिक कार्योंपर १९३२ में ४ अरब ३० करोड़से १९३७ में ८ अरब २० करोड़ रूबल खर्च बढ़ाया गया। जनता उपभोग्य वस्तुओंके अभावसे त्रस्त थी इसलिए उपभोग्य वस्तुओंका उत्पादन १८५ प्रतिशत बढ़ानेका लक्ष्य निश्चित किया गया, पर कृषिके यन्त्रीकरणमें १ लाख कटाई यन्त्रों और १ लाख ७० हजार ढुलाई लारियोंकी भरती जहाँ की जा सकी वहाँ उपभोग्य वस्तुओंके उत्पादनका लक्ष्य पूरा नहीं हो सका। फिर भी औद्योगिक उत्पादनमें रूस दुनियामें तीसरे नम्बरपर हो गया।

तृतीय पंचवर्षीय योजना (१९३८-४२)

तृतीय योजना मार्च १९३९ में १८ वीं पार्टी कांग्रेसने मंजूर की। इसमें दावा किया गया था कि दो योजनाओंमें सोशलिज्मकी पूरी स्थापना हो गयी, अब तीसरी योजनामें वर्गविहीन कम्युनिस्ट समाज बनानेका लक्ष्य पूरा किया जायगा। मानसिक क्रान्तिका युग आ गया और उत्पादनमें अब यन्त्र कौशल विद्या अपनी चरम सीमातक पहुँचा दी जायगी। इस योजनामें उत्पादनके साधनोंकी वार्षिक वृद्धि १४ प्रतिशत, उत्पादनकी १५.७ प्रतिशत और उपभोग्य वस्तुओंकी ११.५ प्रतिशत निश्चित की गयी थी। सबसे अधिक और रासायनिक उद्योगोंपर दिया गया था। बढ़े हुए यन्त्र-शिल्प-कौशलके अनुरूप शिक्षा पद्धतिमें भी परिवर्तन करना पड़ा। बड़े शहरोंमें ७ सालके बजाय १० सालकी अनिवार्य शिक्षा कर दी गयी, क्योंकि यन्त्रोंके नवीकरणके कारण अब इतने अधिक श्रमिकोंकी आवश्यकता नहीं रह गयी थी। प्रगतिकी दौड़में उद्योग आगे बढ़ गये, पर कृषिकी उन्नति उतनी तेज नहीं हो सकी, इसलिए इस योजनामें कृषिपर विशेष ध्यान देनेका निश्चय हुआ।

पर जून १९४१ में हिटलरने रूसपर आक्रमण कर इस योजनाका कार्यान्वय अस्त-व्यस्त कर दिया और देशको आर्थिक दृष्टिसे फिर १०-११ साल पीछे ढकेल दिया। युद्ध समाप्त होनेके बाद सबसे पहला काम अस्त-व्यस्त अर्थतन्त्रको फिर पहले जैसी स्थिति में लाना था।

चौथी पंचवर्षीय योजना (१९४६–५०)

इसी दृष्टिसे चौथी पंचवर्षीय आर्थिक योजना बनायी गयी। साइबेरिया, उजबेकिस्तान और कजाकिस्तान जैसे पूर्वी प्रदेशोंमें नये-नये उद्योग खोलनेका निश्चय हुआ ताकि तृतीय महायुद्ध हो तो ये क्षेत्र यूरोपसे अधिकसे अधिक दूर रह सकें। यूरल तथा उसके पूर्वके प्रदेशमें कृषिकी उन्नतिपर विशेष जोर दिया जाने लगा। महायुद्धकी सारी क्षति घोर मेहनत कर पूरी की गयी और १९५० में औद्योगिक उत्पादन १९४० से ७३ प्रतिशत बढ़ा दिया गया।

पांचवीं योजना (१९५१–५५)

पहली चार योजनाओंमें उद्योगीकरण, उद्योगोंका नवीकरण, कृषिका समुदायीकरण और शोषक वर्गोंका पूरा नाश ये चारों समाजवादी लक्ष्य पूरे कर लिये गये थे। फिर भी कृषिकी उन्नति अब भी उद्योगोंसे पिछड़ती जा रही। १९५२ में उन्नीसवीं पार्टी कांग्रेसमें पांचवीं योजना स्वीकृत हुई और कम्युनिज्मकी स्थापना अब नयी योजनाका लक्ष्य निश्चित हुआ। जनताकी आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक—सर्वतोमुखी उन्नतिकी योजनाएं अब बनायी गयीं। इस योजनाकालके अन्तमें जो उन्नति हुई वह इस प्रकार थी—

		१९४० का उत्पादन	१९५५ का उत्पादन	१९४० से १९५५ में प्रतिशत वृद्धि
ढलुआ लोहा	हजार टनोंमें	१४९०२	३३३१०	२२३
इस्पात	,,	१८३१७	४५२७१	२४७
रोल्ड लोहा वगैरा	,,	१३११३	३५३३९	२७०
कोयला	,,	१६५९२३	३९१२५९	२३६
तेल	,,	३११२१	७०७९३	२२७
विद्युतशक्ति	दसलक्ष कि०वा०घं०	४८३०९	१७०२२५	३५२
मोटर-कारें	हजार	१४५	४४५	३०७
ट्रैक्टर	—	३१६४९	१६३४३७	५१६
सूती वस्त्र	दसलक्ष गज	४३४९	६४९६	१४९
ऊनी वस्त्र	हजार गज	१३१६४६	२७७५८२	२११
रेशमी वस्त्र	,,	८४२२६	५७८३४७	६८६
चमड़ेके जूते	हजार जोड़ा	२११०३३	२७४३२६	१३०

अधूरी छठी योजना (१९५६–६०)

१९५६ में २०वीं पार्टी कांग्रेसने छठी योजना स्वीकार की, पर इस वर्ष १९५८ में इसे समाप्त कर एक नयी सप्तवर्षीय योजना सन् १९५९-१९६५ के लिए तैयार की गयी है जो जनवरी १९५९ में २१वीं पार्टी कांग्रेसमें स्वीकार करायी जानेवाली है। इस योजनाकी विशेषता अन्यत्र दी गयी है।

× × ×

सोवियत अर्थतन्त्रके ४० सालके विकासका यह थोड़ेमें विवरण है। अब हम जरा और विस्तारमें जाते हैं।

संचालनमें आमूल परिवर्तन आवश्यक हो गया

१९५६ और १९५७ में रूसी नेताओंने यह महसूस किया कि औद्योगिक कारखानों

और निर्माण कार्योंकी व्यवस्थामें आमूल परिवर्तन करना आवश्यक है। दिसम्बर १९५६ में पार्टीकी सेण्ट्रल कमेटीमें श्री बुल्गानिनने तथा फरवरी १९५७ के अन्तमें सेण्ट्रल कमेटी में और मई १९५७ में सुप्रीम सोवियतमें श्री क्रुश्चेवने इस विषयपर बहस छेड़ी।

सोवियट क्रांतिके एक मास बाद दिसम्बर १९१७ में सर्वहाराके राजनीतिक अधिनायक तन्त्रके साथ-साथ सर्वहाराके आर्थिक अधिनायक तन्त्रकी स्थापनाके लिए एक सुप्रीम एकनामिक कौंसिल बनायी गयी थी। शुरू-शुरूमें बड़े उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणके बाद निजी उद्योगोंके कार्यकलापोंपर सरकारी नियन्त्रण बनाये रखनेकी व्यवस्थाका काम इस कौंसिल के जिम्मे था। बादमें सभी उद्योग राष्ट्रके अधिकारमें आनेपर इस कौंसिलने उद्योग, यातायात और कृषिके आयोजन तथा व्यवस्थाका पूरा जिम्मा ले लिया। अनन्तर अनुभवसे यह दिखाई दिया कि राष्ट्रीय अर्थतन्त्रकी सभी शाखाओंके संचालनका काम अकेली यह कौंसिल नहीं कर सकती, इसलिए इसके हाथसे यातायात, कृषि तथा अन्य छोटे-मोटे काम धीरे-धीरे छीन लिये गये। १९२३ में एक कानून बनाकर कारखानोंके दिन प्रतिदिन के कामोंमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार भी कौंसिलसे छीन लिया गया। स्थानीय महत्त्वके कारखानोंकी व्यवस्थाके लिए सुप्रीम एकानामिक कौंसिलके समकक्ष 'गुबेर्निया एकानामिक' नामकी प्रादेशिक कौंसिलें स्थापित की गयीं। १९२६-२७ में औसत ७२४ मजदूर काम करनेवाले देशके सबसे बड़े १९८० कारखानोंके संचालनका भार सुप्रीम कौंसिलके जिम्मे, औसतन ३०८ मजदूर काम करनेवाले ९४४ कारखानोंपर राज्योंका और औसतन १३७ मजदूर काम करनेवाले ४१०४ कारखानोंके संचालनका जिम्मा गुबेर्निया कौंसिलोंपर था। इस प्रकार अर्थतंत्रका संचालन ऊपरसे नीचेकी ओर लक्षित था।

जैसे-जैसे देशका औद्योगिक उत्पादन बढ़ता गया सुप्रीम कौंसिलके संघटनमें भी परिवर्तन अवश्यंभावी हो गया और सुप्रीम कौंसिल कई कमीसरियेटोंमें या बादमें कई मिनिस्ट्रियोंमें बंट गयी। १९२८ से उद्योग संचालनका काम ऊपरसे नीचेकी ओर होता था। लोहा इस्पात, अलौह धातुओं, कोयला, तैल, बिजलीघर, १४ तरहके इंजीनियरिंग उद्योग, गृह निर्माण सामग्री उद्योग, उपभोग्य वस्तुओंके हलके उद्योग, मांस, दुग्धपदार्थ और मछली उद्योग, बिजलीघर निर्माण, तैल कारखाने खड़े करना, कोयला उद्योग निर्माण तथा यातायात निर्माणकी अलग-अलग मिनिस्ट्रियां बन गयीं थी। संघीय मिनिस्ट्रियां अपने विभागके देश भरके उद्योगोंका संचालन सीधे करती थीं और उनके काममें राज्यों की मिनिस्ट्रियां दखल नहीं देती थीं। बिजलीघर मशीन निर्माण और रेलवे मंत्रालय इसी प्रकार काम करते थे। अन्य उद्योगोंका संचालन संघ मंत्रालय राज्य मंत्रालयोंकी सहायतासे करते थे। इस प्रकार उद्योग संचालनके दो प्रकार रूसमें जारी थे।

सन् १९५६ में संघ सरकारने देशके अंदरके जलयान, मोटर यातायात और सड़कोंकी व्यवस्था राज्योंके सुपुर्द कर दी और इन तीन विभागोंके संघीय मंत्रालय बंद कर दिये।

इसी प्रकार संघीय न्याय मंत्रालय भी तोड़ दिया गया और न्याय संचालनका सारा काम राज्योंको सुपुर्द कर विकेन्द्रीकरणकी प्रक्रिया आगे बढ़ायी गयी।

सोवियट अर्थतंत्रमें शिक्षा और संस्कृति भी आर्थिक व्यवस्थाकी आश्रित हो जाती है, क्योंकि सामाजिक उत्थानका मूलाधार औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना और उत्पादनका शिल्पयंत्र विज्ञान ऊँचे स्तरपर ले जाना रहता है। वस्तुतः कम्युनिस्ट समाज इन दो शब्दोंकी व्याख्या ही यह है कि जिस समाजमें बौद्धिक और शारीरिक श्रमके बीचकी सीमा रेखा अधिकसे अधिक मिट गयी हो, वह कम्युनिस्ट समाज कहाता है। यह सीमा रेखा तभी पूरी नष्ट होगी जब केवल १-२ आदमी सारे कारखानोंके यंत्रोंका संचालन दूर कहीं बैठकर केवल बटन दबाकर करेंगे।

रूसी नेता यह मानते हैं कि रूसमें अबतक केवल सोशलिज्मकी स्थापना हुई है, कम्युनिज्मकी स्थापना करना अभी बाकी है। जनताकी शिक्षाका स्तर इतना अधिक हो जायगा और टेकनिकल कुशलता इतनी अधिक बढ़ेगी कि बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ केवल यंत्र-बलसे चलेंगी, मनुष्यको शरीर-श्रम बिलकुल नहीं करना पड़ेगा। ऐसे कारखाने चलानेके लिए यंत्रकुशल बुद्धिवाले श्रमिकोंकी ही केवल आवश्यकता होगी। शिक्षाका स्तर इतना बढ़ेगा कि सारी श्रमिक प्रजा टेकनिकल ज्ञानयुक्त होगी।

ऐसी बुद्धिमान् प्रजा अधिनायक तंत्रमें जड़ और यंत्र होकर नहीं रह सकती। एक समय आयेगा जब रूसको अधिनायकतंत्र छोड़ना पड़ेगा।

लोकतंत्रात्मक केन्द्रीकरण

१९५७ में रूसी कारखानों और निर्माणकार्योंके संचालनकी व्यवस्थामें पुराने दोष दूर कर नया परिवर्तन किया गया, पर रूसी नेताओंका दावा है कि हमने ऐसा करते हुए भी अर्थतंत्रमें लेनिनके 'डेमोक्रेटिक सेण्ट्रलिज्म' (लोकतंत्रात्मक केन्द्रीकरण) को नहीं छोड़ा। इसका अर्थ यह है कि अर्थतंत्र तो आयोजित होता है केन्द्र और राज्यों द्वारा और इन्हीं का कड़ा नियंत्रण उसपर रहता है, पर उसे कार्यान्वित करती है स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टियाँ, ट्रेड यूनियनों और अन्य सार्वजनिक संस्थाओंकी मार्फत रूसकी लाखों श्रमिक जनता। यह श्रमिक जनता कारखानोंमें, सामुदायिक खेतोंपर, निर्माण स्थलोंपर, खोजकेन्द्रों, दफ्तरों, मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों, स्कूलों, कालेजों और सेनामें अपनी सभाओंमें सरकार द्वारा प्रकाशित योजनाओंपर विचार करती है और अपने सुझाव तथा संशोधन पेश करती है। अखबारोंमें चिट्ठियाँ लिखी जाती हैं। रूस सरकारका दावा है कि १९५७ में संचालन-व्यवस्था बदलनेसे पहले श्रमिकोंकी ऐसी ५ लाख १५ हजार सभाएं हुईं जिनमें ४ करोड़ श्रमिक शामिल हुए। उन्होंने ११ लाख सुझाव भेजे तथा ६८ हजार चिट्ठियां इस विषयपर अखबारोंमें छपीं। इसके बाद सुप्रीम सोवियटमें नयी व्यवस्था मंजूर हुई।

स्तालिनके लौह युगमें इस प्रकारका डिमोक्रेटिजेशन नहीं चलता था इसलिए श्रमिक मजदूर उत्पादनको अपना निजका काम नहीं समझता था। अब सरकार, उत्पादन और श्रमिक इन तीनोंमें घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। संचालनकी व्यवस्था ऊपरसे नीचेकी ओर 'वर्टिकल'से बदलकर 'हारिजाण्टल' यानी क्षेत्रीय दृष्टिसे विकेन्द्रित कर दी गयी है। पहले जहां क्षेत्रीय गुबेर्निया इकानामिक कौंसिलें होती थीं जो सुप्रीम कौंसिलकी संचालन दिशाके समकक्ष हो ऊपरसे नीचेकी ओर रहती थी, वे बदल दी गयीं और अपने क्षेत्रके लिए पूरी तरहसे जिम्मेदार क्षेत्रीय कौंसिलें स्थापित की गयीं। सबसे बड़े रशिया गणतंत्रमें ६८ कौंसिलें, यूक्रेन, कजाक और उजबेक इन तीन गणतन्त्रोंमें मिलाकर २४ और बाकी गणतन्त्रोंमें १-१ कौंसिल बनायी गयी है। उद्योगोंके न्यूनाधिक्यके अनुसार आर्थिक कौंसिलोंके अधिकार क्षेत्रोंमें राजनीतिक सीमाओंका ही पूरी तरह पालन नहीं किया गया है।

मास्को और लेनिनग्राड जैसे बड़े शहरोंकी आर्थिक कौंसिलोंमें विभिन्न उद्योगोंके लिए विभिन्न एडमिनिस्ट्रेशन बोर्ड बनाये गये हैं। इन कौंसिलोंको मिनिस्ट्रियों जैसे अधिकार दिये गये हैं और कारखानोंके डाइरेक्टरोंके अधिकारोंमें भी वृद्धि की गयी है। बोर्डोंमें कौंसिलोंके, कारखानोंके, पार्टीके, ट्रेड यूनियनोंके प्रतिनिधि रहते हैं।

अर्थतन्त्रके विकेन्द्रीकरणमें एक बहुत भारी खतरा भी निहित है। विकेन्द्रित इकाइयां कहीं आगे जाकर अपनेतक ही देखने न लग जायें इसलिए उनके ऊपर नजर रखनेका काम प्लानिंग कमेटीके जिम्मे सौंपा गया है। विकेन्द्रीकरणसे इस कमेटीको अब पहले जैसे छोटे-मोटे काम नहीं देखने पड़ते, यह सर्वराष्ट्रीय दृष्टिसे सारे सोवियट संघके लिए अर्थ-नियोजन करती है। आर्थिक योजनाओंपर लोगोंके रहन-सहनका स्तर बढ़ना, उनकी सांस्कृतिक, कला-विषयक और स्वास्थ्यविषयक उन्नति निर्भर रहती है ऐसा माना जाता है। इसलिए ये सारे विषय राष्ट्रीय और राज्यीय प्लानिंग कमेटियोंके अधिकार क्षेत्रमें रहते हैं। एक साइण्टिफिक और टेकनिकल कमेटी है जो इस विषयकी शिक्षाके लिए और नये-नये प्राविधिक खोजोंको उद्योगोंमें लगानेके लिए जिम्मेदार है। आज रूसमें उच्च शिक्षा प्राप्त ६० लाख प्राविधिक हैं। यंत्रशिल्पमें उन्नति तभी सम्भव है जब प्राविधिक जनशक्ति बराबर प्राप्त होती चले। जितने प्राविधिक हर साल ट्रेनिंग शिक्षा-संस्थाओंमें पढ़ते हैं या पास होकर बाहर निकलते हैं उनकी संख्या बहुत बड़ी रहती है। दुनियाके और किसी भी देशमें प्रतिवर्ष इतने प्राविधिक नहीं तैयार होते ऐसा रूसी नेताओंका दावा है। पहले 'स्टेट कमेटी आन न्यू टेकनिक्स' यह काम करती थी, पर वह कारखानोंके श्रमिकोंके अनुभवोंका लाभ नहीं उठाती थी। नयी कमेटी श्रमिकोंको खोज करनेको उत्साहित करती है और देश-विदेशकी वैज्ञानिक और इञ्जीनियरी प्रगतिका अध्ययन कर उसका उपयोग सोवियट उद्योगोंको आगे बढ़ानेमें करती है तथा इस सम्बन्ध का साहित्य भी प्रकाशित करती है।

देशभरके अधिकांश मिनिस्ट्री और इन्स्टीट्यूट और प्लानिंग ब्यूरो इकानामिक कौंसिलों के अधीन रखे गये हैं।

वैज्ञानिक-प्राविधिक कमेटीके अतिरिक्त पुरानी 'स्टेट कमेटी' आफ 'कन्स्ट्रक्शन'का अस्तित्व अब भी कायम रक्खा गया है। इसी प्रकार पुरानी 'स्टेट लेबर एण्ड वेजेज कमेटी' भी कायम है।

फरवरी १९५८ में सभी इकानामिक कौंसिलोंकी एक कान्फ्रेन्स हुई थी जिसमें इस नये परिवर्तनका लेखा-जोखा लिया गया। यह रिपोर्ट मिली कि इस परिवर्तनसे उत्पादनकी गति निश्चित रूपसे तेज हुई है और उत्पादनके नये-नये छिपे साधन उपलब्ध हुए; संचालन-व्यय कम हुआ तथा श्रमिकोंमें जो छिपी प्रतिभा थी वह जागृत हुई।

सोवियत संघकी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था १९५६ और १९५७ में योजनानुसार निश्चित अच्छ गतिसे आगे बढ़ी और बीसवीं कांग्रेसने जो लक्ष्य निश्चित किये थे वे पूरे हुए। मैं इसीलिए कहता हूं कि १९५९ में सोवियत संघ प्रगल्भ और वयस्क हुआ। अब उसमें यह दृढ़ विश्वास जागृत हुआ कि हम अब १९५९ से १९६५ तक सात सालकी दीर्घ अवधिकी आर्थिक योजना एक साथ बनायें। अभीतक रूसको अपनी आवश्यकताकी सारी और उद्योगोंकी सभी चीजें अपने यहां बनानी पड़ती थीं, जिससे कभी एक चीजकी कमी होती थी तो कभी दूसरी चीजका अभाव हो जाता था, पर द्वितीय महायुद्धके बाद दुनियाके छोटे-बड़े १२ देशोंमें समाजवादी शासनोंकी स्थापना हो चुकी थी और वाणिज्य व्यापार सब एक दूसरेके पूरक हो जा सकते थे।

पहलेकी पंचवर्षीय योजनाओं और नयी सप्तवर्षीय योजनाओं भी भारी उद्योगोंपर विशेष जोर दिया गया है, अन्तर केवल इतना ही है कि नयी सप्तवर्षीय योजनामें रासायनिक उद्योगोंपर पहलेसे अधिक जोर दिया गया है क्योंकि ज्ञान-विज्ञानकी अद्यतन प्रगतिके साथ रहनेवाला सोवियट संघ यह अच्छी तरह जानता है कि नया युग प्लास्टिक युग है। रासायनिक प्रयोगशालाएं (भूमिसे उत्पन्न प्राकृतिक नहीं, पर वैज्ञानिक प्रयोगशालाओंमें रासायनिक पदार्थोंसे कृत्रिम रूपसे मनुष्य-निर्मित) पदार्थोंके निर्माणसे कृषि-योग्य भूमिका भार घटता है। उससे बढ़ती हुई जनसंख्याकी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए अधिकाधिक खाद्यान्न पैदा किया जा सकता है तथा ऊसर-परती जमीन कृषि-योग्य बनायी जा सकती है। इसके सिवा, उद्योगोंकी व्यवस्थामें जो आमूल परिवर्तन किया गया वह नयी सप्तवर्षीय योजनामें भी कायम रखा गया है। पर योजनामें निश्चित आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति तभी सम्भव है यदि इस बीच रूस तृतीय महायुद्धमें न उलझ जाय। रूसके नये नेताओंको अब यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि सोवियट समाजवादी अर्थतंत्र पर चलकर और दुनियाके बारहों समाजवादी देशोंकी अर्थ व्यवस्थाओंको एक दूसरेकी पूरक बनाकर पूंजीवादके सिरमौर अमेरिकाको १५ सालके अन्दर पछाड़ा जा सकता है

और एशिया तथा अफ्रीकाके नये स्वाधीन हुए और होनेवाले स्वतंत्र गरीब देशोंको आर्थिक और सांस्कृतिक सहायता देकर अपना मित्र बनाया जा सकता है। रूसी नेता अब आकर्मी एकाधिक बार पुरानी आदतके कारण संसार-व्यापी कम्युनिस्ट क्रांतिकी बात करते हैं, अन्यथा अधिक जोर विभिन्न राजनीतिक पद्धतियोंके शांतिपूर्ण सहअस्तित्वकी बातपर और युद्धकी निन्दा तथा शांतिकी आवश्यकतापर, देते रहते हैं।

इस समय दुनियाके बारह देशोंमें समाजवादी (कम्युनिस्ट एकतन्त्रवादी) सरकारें स्थापित हैं। पहली कम्युनिस्ट क्रांति रूसमें हुई और सोवियट संघ इस समय कम्युनिस्ट देशोंमें सबसे अधिक शक्तिशाली है, दुनियामें अमेरिकाका मुकाबला वही कर सकता है, इसलिए इन बारहों कम्युनिस्ट देशोंका नेतृत्व सोवियट संघको प्राप्त हो जाता है। इन बारहके अलावा यूगोस्लाविया भी कम्युनिस्ट देश है, पर यूगोस्लावियाने रूसका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया है और चीन भी इतना बड़ा है कि रूसको उसे अपने तुल्यबल मानकर अपनी बराबरीका ही सम्मान देना पड़ रहा है।

दुनियाके साधनोंमें कम्युनिस्ट गुटका क्या हिस्सा है यह नीचे दिया जा रहा है—
१२ कम्युनिस्ट देश—(१) सोवियट संघ, (२) चीन, (३) अलबेनिया, (४) बल्गेरिया, (५) हंगरी, (६) डिमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियेटनाम, (७) जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक, (८) डिमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक आफ कोरिया, (९) मंगोलिया, (१०) पोलैण्ड, (११) रूमानिया और (१२) चेकोस्लोवाकिया हैं।

रूसी गुटके साधन

(प्रतिशत)

	अमेरिका	कम्युनिस्ट दल (केवल रूस)	दुनियाके अन्य देश
जनसंख्या	६ प्रतिशत	३५ प्रतिशत (७)	५९ प्रतिशत
क्षेत्रफल	७	२६ (१६.६)	६७
इस्पात	३७ (१० करोड़ ४५ लाख टन)	२४ (१७) (४ करोड़ ८७ लाख टन)	३९
कोयला	२६	३७.८ (१९.३)	३६.२
पेट्रोलियम	४२	१२ (१०)	४६
अलमुनियम	४५	१७	३८
विद्युत्शक्ति	४१	१८ (१२)	४१
व्यापारी जहाजरानी	२५	३	७२
लोहा	३४	२५.८ (१८.१)	
लारियां		१७ (१४.८)	
ट्रैक्टर		२७.६ (२३.६)	

सीमेंट	२४	२१.१ (१०.१)
सूती वस्त्र	२७	२७.६ (१२)
शक्कर		१८.६ (१०.६)
मई		३१.४ (१५.८)

रूसी बजट

१९५७ के सोवियत संघके बजटमें आय ६,१७,००,००,००,००० (६ खरब १७ अरब) रूबल कूती गयी थी। इसमें ८५ प्रतिशत आय समाजवादी अर्थव्यवस्थाके कारण होती है और बाकी १५ प्रतिशत जनतासे करके रूपमें वसूल की जाती है। कर अधिक रहता है या कम इसका महत्त्व इसलिए नहीं मानना चाहिये कि एककी घटबढ़ दूसरेसे पूरी की जा सकती है। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय यश कमानेकी दृष्टिसे सरकारकी नीति कर हमेशा कम करते जानेकी ओर रहती है। प्रजाको खुश करनेके लिए वह चीजोंके भाव भी गिराती जाती है, पर उद्योग व्यवसायको खूब बढ़ानेसे चीजें बनानेका खर्च कम होता जाता है और समाजवादी अर्थव्यवस्थासे होनेवाली आय घटनेके बजाय बढ़ती ही जाती है।

समाजवादी अर्थव्यवस्थाके अन्तर्गत आयकी सबसे बड़ी मद कारखानों और आर्थिक संस्थाओंसे जमा होनेवाला मुनाफा है। थोकभाव और खुदरा भावोंमें जो अन्तर होता है वह सारा 'टर्नओवर टैक्स', कहाता है और सरकारके पास जमा होता है। १९५७ के बजटमें इस मदमें सोवियत सरकारकी आमदनी २ खरब ७५ करोड़ रूबल थी। कारखानों और सहकारी संस्थाओंको सरकार कच्चा माल देती है। तैयार मालकी थोक और खुदरा दोनों कीमतें भी सरकार ही निश्चित करती है। इसलिए यह रकम वस्तुतः मुनाफा नहीं मानी जाती, पर सरकारी अर्थनीति और मूल्यनीतिके परिणामस्वरूप हुई आय समझी जाती है।

इसके अलावा सरकारी कारखानोंको मुनाफा भी होता है। कारखानोंका खर्च और निश्चित रिजर्व फंड निकाल देनेके बाद जो मुनाफा बचता है वह सरकारका होता है क्योंकि सारा सोवियत संघ ही एक बहुत बड़ी व्यापारी कंपनी है जिसे सोवियत सरकार चलाती है। १९५७ के बजटमें मुनाफेसे १ खरब १६ करोड़ रुपया आय रखी गयी थी।

सामुदायिक कृषि फार्म आदि सहकारी संस्थाएं सरकारको आय-कर देती हैं। बजटमें यह आय ९ अरब ६० करोड़ रूबल थी। अन्य सहकारी संस्थाओंसे ५ अरब ९० करोड़ आयकर मिलनेकी बात बजटमें थी।

आयके साधनोंमें अन्य कर, सरकारी कर्ज और सेविंग बैंकोंमें जमा रकमें भी मानी जाती हैं। जनतासे जो कर लिये जाते हैं उनका धन पूरे बजटका केवल ८.० प्रतिशत था।

सरकारने भविष्यमें अब सरकारी कर्ज कागज जनताके हाथ बेचनेकी नीति त्याग

देनेका निश्चय किया है क्योंकि १९५७ में जनताने पिछले सालमें ४७ प्रतिशत ही ऋण-पत्र खरीदे।

जनताको आयकर और अविवाहित तथा छोटे परिवारका कर देना पड़ता है। देहात की जनताको कृषि कर १ प्रतिशतकी दरमें देना पड़ता है। जनताको इसके बदले मुफ्त चिकित्सा, मुफ्त शिक्षा, वृद्धापकाल और अपंगताकी पेंशनें आदिका लाभ सरकारसे मिलता है।

१९५७ के बजटमें सरकारने अपनी आयमें २ खरब ४४ अरब ५० करोड़ और सरकारी कारखानों तथा अर्थ संस्थाओंसे १ खरब ३१ अरब ५० करोड़ रूबल राष्ट्रीय अर्थनीतिमें नयी पूंजीके रूपमें लगाया था।

———:०:———

(१८)

सोवियट संघकी आजकी विशेषताएँ

सोवियट संघ क्षेत्रफलमें दुनियामें सबसे बड़ा और जनसंख्याकी दृष्टिसे चीन और भारतके बाद तीसरे नम्बरका देश है। सारी दुनियाकी स्थल-भूमिके छठें भागपर यह फैला है। इसकी सीमापर नार्वे, फिनलैण्ड, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रूमेनिया, टर्की, ईरान, अफगानिस्तान, मंगोलिया, चीन और कोरिया देश हैं। साधारण धारणा है कि भारत और पाकिस्तानकी सीमाएं उत्तरमें सोवियट संघसे मिलती हैं, पर यह गलत है। सोवियट संघका क्षेत्रफल ८६ लाख ४६ हजार ४०० वर्गमील है। यानी यह अमेरिकासे तिगुना और भारतसे ७ गुना बड़ा है। इसकी सीमाकी कुल लंबाई ६७२६० मील है।

इस समय संघमें जो २० करोड़ प्रजा है उसकी तीन चौथाई क्रांतिके बाद सोवियट शासनकालमें पैदा हुई है। संघमें विभिन्न १०० जातियों और राष्ट्रीयताके लोग रहते हैं जिनमें सबसे अधिक रूसी हैं।

सोवियट संघके संविधानके अनुसार संघकी आर्थिक नींव समाजवादी अर्थ-व्यवस्था है तथा उत्पादनके साधनोंपर समाजका अधिकार है। मनुष्य द्वारा मनुष्यके शोषणका, उत्पादनके साधनोंके निजी हाथोंमें रहनेका और पूंजीवादी अर्थ-व्यवस्थाका उसमें सम्पूर्ण उच्चाटन किया गया है। सार्वभौम सत्ता श्रमिकों और कृषकोंकी समाजवादी सरकारमें मानी गयी है।

अर्थ-व्यवस्थाका मूलाधार भारी उद्योग-धन्धे माना गया जिसके कारण नगरों, कसबों और नयी-नयी शहरी बस्तियोंकी संख्या तेजीसे बढ़ी। शहरी आबादी तिगुनी

बढ़ीं। १९२६ और ५७ के बीच ६१८ नगर और कस्बे तथा ११७५ शहरी बस्तियां बसायी गयीं। १९२६ में १ लाखसे ऊपर आबादीवाले नगर ३१ थे, १९५६ में इनकी संख्या १३५ हो गयी। ५ लाखसे ऊपरकी आबादीवाले शहर १९२६ में ३ थे, १९५६ में २२ हो गये।

शोषक जमींदार और पूंजीदार वर्ग समाप्त हो गया है। केवल दो ही मित्र वर्ग श्रमिक और कृषक अस्तित्वमें हैं। बुद्धिजीवी वर्ग भी इन्हीं दो वर्गोंके अंगभूत माना जाता है। १९५६ में कारखानों, दफ्तरों तथा अन्यत्रके श्रमिकों और उनके परिवारके सदस्योंकी कुल जनसंख्या ११ करोड़ ७० लाख थी। सामुदायिक कृषक और सहकारी संस्थाओंसे सम्बद्ध दस्तकारीशिल्पवालोंकी ८ करोड़ २० लाख और व्यक्तिगत कृषकों तथा गैर-सहकारी दस्तकारीशिल्पवालोंकी जनसंख्या केवल १० लाख थी।

राजनीतिक सत्ताका मूलाधार श्रमिक जनताके प्रतिनिधियोंकी सोवियतें होती हैं। सोवियतोंका चुनाव सार्वजनिक, समान और प्रत्यक्ष पर गुप्त मतदानसे होता है। इसमें जाति, राष्ट्रीयता, स्त्री-पुरुष, धर्म, सामाजिक अवस्था, साम्पत्तिक अवस्था या पिछली कारगुजारियोंके कारण कोई भेदभाव नहीं किया जाता। १८ वर्षसे ऊपरके सभी नागरिकोंको स्थानीय सोवियत प्रतिनिधि चुननेका, २३ सालके ऊपरके नागरिकोंको सुप्रीम सोवियतके सदस्य चुननेका और २१ सालके ऊपरके सभी नागरिकोंको राज्योंकी सुप्रीम सोवियतोंके सदस्य चुननेका मताधिकार होता है। स्त्रियोंको पुरुषोंके समान ही अधिकार हैं। सोवियतोंमें उनकी संख्याएं इस प्रकार हैं।

	कुल सदस्य	स्त्री सदस्य	स्त्री-सदस्योंका प्रतिशत
सुप्रीम सोवियत (१९५४)	१३४७	३४८	२५·८
संघ राज्योंकी सुप्रीम सोवियतें (१९५५)	५३७१	१७००	३२·३
स्वतन्त्र गणराज्योंकी सुप्रीम सोवियतें (१९५५)	१९४४	६०७	३१·२
स्थानीय सोवियतें (१९५७)	१५,४९,७७७	५,७३,१६४	३७·०

सोवियत संघ १५ बराबरीके सोवियत समाजवादी गणतन्त्रोंका संघ है। विधानतः इनमेंसे कोई भी संघसे अलग हो सकता है और किसी विदेशी राष्ट्रके साथ सीधा सम्बन्ध भी स्थापित कर सकता है। विधानमें ये दो अधिकार होनेपर भी व्यवहारमें कोई इन अधिकारोंका उपयोग करनेकी बात स्वप्नमें भी नहीं सोच सकता—वैसे सोवियत संघके साथ उसके दो घटक यूक्रेन और बाइलोरशिया गणतन्त्र संयुक्त राष्ट्रसंघके संस्थापक सदस्य रहे हैं।

सोवियत संघकी सर्वोच्च शासकीय सत्ता सुप्रीम सोवियतमें रहती है। सुप्रीम सोवियतमें संघ सोवियत और राष्ट्र सोवियत ये दो बराबरीके अधिकारके दो सदन ४ साल

के लिए चुने जाते हैं। सुप्रीम सोवियट अपनी प्रेसिडियम सभा चुनता है जिसमें १ अध्यक्ष और १५ सदस्य राष्ट्रोंके १५ उपाध्यक्ष रहते हैं। संघकी सर्वोच्च सत्ता संघीय सुप्रीम सोवियटके पास रहती है। सर्वोच्च शासकीय सत्ता संघके कौंसिल आफ मिनिस्टर्स (मंत्रिपरिषद्) में और गणतन्त्रोंकी शासन सत्ता गणतन्त्रोंके कौंसिल आफ मिनिस्टर्समें रहती है। रूसी संघमें बारह स्वतन्त्र गणतन्त्र और जर्जिया गणतन्त्रमें दो गणतन्त्र सम्मिलित हैं। इनकी अलग-अलग सुप्रीम सोवियटें और मंत्रिपरिषदें हैं।

क्रान्त्युत्तर ४० वर्षोंमें १८ सालकी अवधि, गृहयुद्ध, द्वितीय महायुद्ध और युद्धोत्तर पुनर्निर्माणमें व्यर्थ जानेपर भी देशका औद्योगिक उत्पादन प्रति वर्ष औसत १० प्रतिशत— १९१३ और १९५७ के बीच ३३ गुना तथा १९२७ और १९५७ के बीच ४६ गुना बढ़ा है। १९५७ में आठ दिनमें जितना उत्पादन होता था उतना १९२७ में पूरे साल-भरमें होता था। स्टालिन युगमें भारी उद्योगोंपर यानी उत्पादनके साधनोंके उत्पादक उद्योगोंपर भोग्य पदार्थोंके उत्पादनसे अधिक जोर देनेके कारण प्रथम श्रेणीके उत्पादनकी बढ़ोत्तरीकी गति और भी अधिक तेज थी। भारी उद्योगोंकी वृद्धिसे, मार्क्सवादके अनुसार, प्राविधिक दक्षता, श्रमिकोंकी उत्पादनशक्ति, राष्ट्रकी सुरक्षा, कृषिकी उन्नति और भोग्य पदार्थोंके उत्पादनमें भी वृद्धि होती है।

द्वितीय महायुद्धकालमें अमेरिकाका औद्योगिक उत्पादन जहां प्रति वर्ष ९.८ प्रतिशत गतिसे बढ़ा वहां रूसकी कुल राष्ट्रीय हानि ६७९ अरब रूबलकी हुई। सबसे अधिक हानि रूसी राज्यमें २९५ अरब, यूक्रेनमें २८५ अरब और बाइलोरशियामें ७५ अरब रूबलकी हुई। सोवियट संघके १७१० कस्बे, ७० हजार ग्राम, ६० लाख मकान, ३१८५० कारखानें, ६५००० किलोमीटर लंबी रेल लाइनें, ४१०० रेलवे स्टेशन, ९८००० सामुदायिक खेत, १८७६ सरकारी खेत, २८९० मशीन ट्रैक्टर स्टेशन, ७० लाख घोड़े, १ करोड़ ७० लाख दुधारू चौपाये, २ करोड़ सूअर, २ करोड़ ७० लाख भेड़-बकरियाँ, ४० हजार अस्पताल, ८४००० स्कूल और ४३००० लाइब्रेरियाँ नष्ट हुईं। २॥ करोड़ लोग बेघरके और ४० लाख कारखानोंके अभावमें बेकार हो गये थे।

फिर भी कुल औद्योगिक उत्पादनमें १९५६ में यूरोपीय देशोंमें रूसका पहला और दुनिया भरमें दूसरा नम्बर था। पर प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादनमें वह अभी बहुतसे देशोंसे पीछे है। वृद्धिकी उसकी गति लेकिन इतनी तेज है कि बीचमें ही महायुद्ध न छिड़ा तो वह इन देशोंके आगे बहुत शीघ्र निकल जायगा।

श्रमिकोंकी उत्पादन क्षमता हर एक पंचवर्षीय योजनामें बढ़ती गयी है। पहली योजना (१९२८-३२) में ५१ प्रतिशत, दूसरी (१९३३-३७) में ७९ प्रतिशत, युद्धकाल पूर्वके तीन वर्षकी तीसरी और युद्धोत्तर चौथी योजना (१९३८-१९४०—१९४६-१९५०) में ३९ प्रतिशत और पांचवी योजना (१९५१-५५) में ६८ प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन बढ़ा है।

श्रम ही वस्तुनिर्माणका आय प्रधान होनेके कारण रूसमें श्रमिकोंको हीरोकी पदवियां, हीरोके सुवर्ण तमगे, आर्डर आफ लेनिन, रेड बैनर, बैज आफ आनर, श्रमवीर और उल्लेखनीय श्रमिक तमगे दिये जाते हैं। १९२८ से १ अप्रैल १९५७ तक इस प्रकार ३४ लाख ५ हजार १३८ श्रमिक सम्मानित किये जा चुके हैं। इनमेंसे ७८८१ को हीरोकी पदवी, २७ को हीरोके स्वर्णपदक, ८१२६९२ को अन्य सम्मान (आर्डर) और २५,८२,००९ को विभिन्न तमगे दिये गये।

८ नवंबर सन् १९१७ को सोवियटोंकी द्वितीय कांग्रेसमें कानून पास कर जमींदारों, राजाओं और मठोंके खेत बिना मुआवजेके ले लिये गये। सारी भूमिपर राष्ट्रका अधिकार स्थापित हो गया। धनिकवर्ग धनी किसानोंकी जमीन भी सरकारी हो गयी। इन्हें रूसमें कुलाक कहते हैं।

१९२८ तक रूसमें खुदरा वाणिज्य व्यवसाय और दूकानदारी निजी हाथोंमें ही थी। १९३१ में इसका भी सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण हो गया। सारा वाणिज्य व्यापार अब या तो सरकारके हाथमें या सहकारी संस्थाओंके हाथमें या सामुदायिक कृषिफार्मोंमें सामुदायिक कृषकोंके हाथमें है।

क्रांतिके बाद रूसमें प्राकृतिक गैसका बिलकुल नया उद्योग खुला। प्राकृतिक गैस कोयले और तेलसे सस्ती पड़ती है और इसके कारखाने बनानेमें भी कम खर्च लगता है। पाइप लाइनोंमें यह बहुत दूर-दूरतक ले जायी जा सकती है।

द्वितीय महायुद्धके शुरू होनेके समयतक रूस विदेशोंसे कोई व्यापार नहीं करता था। महायुद्धके बादसे विदेशी व्यापार बढ़ने लगा है।

रूसकी सबसे बड़ी सफलताओंमें एक यह है कि वहां बेकारी और दरिद्रताका नाम नहीं।

दूसरी बड़ी सफलता निरक्षरताका अन्त है।

तीसरी सफलता—स्त्री अब दास नहीं रही। आर्थिक, शासकीय, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा अन्य सार्वजनिक क्षेत्रोंमें वह पुरुषके बराबर हो गयी है। पुरुषमें और उसमें जो प्राकृतिक विषमता है उसकी भौतिक पूर्तियां सरकार करती है।

मकानोंकी व्यवस्था सरकार करती है। किराया मासिक वेतनका ४ या ५ प्रतिशत पड़ता है। कारखानों और निर्माण कार्योंमें श्रमिकोंकी आय १९१३ और १९५६ के बीच ५ गुना और किसानोंकी ३ गुना बढ़ी है।

स्वास्थ्य चिकित्सामें उन्नतिके कारण मृत्युसंख्या बहुत घटी है और मनुष्यकी औसत उम्र जारकालीन उम्रसे दूनी हो गयी है।

रूसमें जो नयी सप्तवर्षीय योजना (१९५९-६५) चल रही है उसमें सर्वाधिक जोर रासायनिक उद्योगोंपर दिया जानेवाला है। अमोनिया, रबड़, सोडा, रेजिन, शराब,

मिथेनाल, एसीटोन, फेनिलिक एसिड, कृत्रिम वस्त्र, प्लास्टिक, वार्निश, रंग, दवाएं और सुगन्धि द्रव रासायनिक उद्योगोंसे बनाये जा रहे हैं। इससे कृषिजन्य कच्चे मालकी बहुत बचत हो जाती है और भोज्य पदार्थोंके अधिक उत्पादनके लिए साधन मिल जाते हैं। रासायनिक स्पिरिट शराबोंसे जौ जैसे अन्नों और आलू जैसे पदार्थोंकी बचत होती है जो खाद्यके काम आती है।

सोवियट संघकी एक तिहाई भूमिपर जंगल होनेके कारण और लकड़ीका उपयोग अब जलानेके लिए ईंधनके रूपमें न होनेके कारण सारी लकड़ी निर्माण कार्यके लिए मिल जाती है। जंगलोंमें सेल्यूलोज और कागजके असंख्य कारखाने खोले गये हैं।

बाजारमें चीजोंके दाम और श्रमिकका वेतन इन दोनोंकी तुलना की जाय तो महंगाई अधिक मालूम होती है। पर सरकार सामाजिक सुरक्षाके लिए श्रमिकोंको बीमा, पेंशन, अधिक बच्चोंवाली माताओंको और अविवाहित माताओंको सहायता, निःशुल्क प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षाके छात्रोंको वजीफे, मुफ्त चिकित्सा, मुफ्त या कम खर्चपर सैनिटोरियमों और छुट्टीघरोंमें रहनेकी व्यवस्था तथा अन्य कई आर्थिक भत्ते और सहायता अपनी ओरसे करती है। जनताकी सहायताके ये साधन बढ़ाये ही जाते जा रहे हैं। वेतन बढ़ रहे हैं और चीजोंके दाम धीरे-धीरे घटाये जा रहे हैं। इससे खुशहाली बढ़ती ही जायगी। कामके घण्टे ८ से घटाकर ७ किये गये हैं। शनिवारको २ घण्टे कम काम करना पड़ता है। रविवारको पूरी छुट्टी रहती है। सालमें सवेतन छुट्टी केवल १२ दिन मिलती है। वेतन कामके घण्टे, गुण और मात्रापर निर्भर होनेके कारण रविवारकी छुट्टीका वेतन नहीं मिलता।

दूकानोंमें अब भोज्य-भोग्य सामग्री और घरेलू उपयोग तथा सांस्कृतिक उन्नति के साधनोंके सामानोंकी बिक्री बढ़ रही है। मांस, मछली, मक्खन, दुग्धपदार्थ, शक्कर, मिठाई, ऊनी, सूती, रेशमी, सिले-बुने वस्त्र, मोजे, जूते और साबुनकी बिक्री सन् १९३२ की तुलनामें तिगुनीसे लेकर बाईस गुनीतक बढ़ गयी है। सामानोंमें १९५६में ४४ हजार पियानो, १ लाख ६२ हजार वैकुअम क्लीनर, १ लाख ९३ हजार कपड़ा धोनेकी मशीनें, २ लाख १४ हजार रेफ्रिजरेटर, २ लाख ६२ हजार मोटर साइकिलें, ५ लाख ८३ हजार टेलिविजन सेट, १ करोड़ ११ लाख २० हजार कैमरे, २ करोड़ १ लाख २० हजार सिलाईकी मशीनें, ३ करोड़ ४ लाख ८० हजार बाइसिकलें, ३ करोड़ ६२ लाख ८० हजार रेडियो, और २१ करोड़ १३ लाख ८० हजार घड़ियां बिकीं।

१९५६में देश भरमें १ लाख ३७ हजार ५०० सरकारी स्टोर थे जिनमें २०० तो सब चीजें मिलनेवाले बड़े-बड़े डिपार्टमेण्ट स्टोर थे। सबसे अधिक दूकानें दवाओंकी १३,८००, बिसातखानेकी ६५०० और किताबोंकी ६४०० थीं।

१९५७में जनसंख्याके प्रति १००००के पीछे रूसमें १७ डाक्टर और ७० अस्पताली शय्याएं उपलब्ध थीं। चिकित्सा मुफ्त होती है।

१९५८में रूस भरमें २१०२ सैनिटोरियम थे जिनमें २८९०० शय्याएं थीं। रात्रि-सैनिटोरियम ८५७ थे जिनमें ३२००० शय्याएं थीं। छुट्टी घर ९०० थे जिनमें १९९०० शय्याएं थीं। श्रमिकोंको ३० प्रतिशत खर्च देना पड़ता है। १९५८में ५० लाख श्रमिकोंने और ६० लाख बालकोंने इनका उपयोग किया।

१९५७में वृद्धावस्था, अपंगता, लम्बी नौकरी तथा अन्य पेंशनें ७२ लाख लोगोंको, कर्ता मृत हुए २१ लाख परिवारोंको तथा अपंग सैनिकोंको और उनके ८७ लाख परिवारवालोंको पेंशनें दी गयीं।

१९५८में काम करनेवाली स्त्रियोंकी कुल संख्या रूसभरमें मिलाकर २ करोड़ ३६ लाख थी। १९२९ से १९५८ तक स्त्रियोंका प्रतिशत २७ से बढ़कर ४५ हो गया।

१९५७में रूसमें २७५६ विज्ञान शालाएं थीं। क्रांतिके पहलेकी संख्यासे यह ९गुना अधिक है। १९५८की १ अक्टूबरको रिसर्च करनेवालोंकी संख्या २ लाख ३९ हजार ९ सौ थी। हर एक राज्यमें १ और संघकी १ इस प्रकार देशभरमें १६ विज्ञान अकादमियां हैं जिनके सदस्योंकी कुल संख्या १४३३ है और सम्बद्ध अकादमियोंकी संख्या ६७७ है। इनके अतिरिक्त कला, चिकित्सा, शिक्षा, सार्वजनिक निर्माण और वास्तुविज्ञानकी भी अकादमियां हैं।

---:o:---

(१९)

सोवियट शासनकी पिछले ४० वर्षोंकी प्रगतियाँ

जनसंख्या और क्षेत्रफल

	(करोड़)			(करोड़ वर्ग कीलोमीटर)
	कुल	शहरी	ग्रामीण	
१९१३	१५·९२	२·८१	१३·११	२·१७
१९४०	१९·१७	६·०६	१३·११	२·२१
१९५६	२०·०२	८·७०	११·३२	२·२४

वर्गवार जनसंख्या

	१९२३	१९२८	१९३७	१९५६
कारखानों, पेशों और दफ्तरोंमें काम करनेवाले श्रमिक	१·७०	१·७६	३·६२	५·९५
सामुदायिक कृषक और सहकारी दस्त उद्योगवाले	—	·२८	५·७९	४·००
स्वतन्त्र कृषक और गैरसहकारी दस्तउद्योगवाले और कलाकार	६·६७	७·४९	·५९	·०५
जागीरदार, बड़े और छोटे ग्रामीण धनिक व्यापारी और धनी कृषक	१·६३	·४६	...	...

घटक गणतंत्रोंकी जनसंख्या और क्षेत्रफल

	(लाख)	(हजार वर्ग कीलोमीटर)	राजधानीका नाम
(१) रशिया	११२२	१७०७७	मास्को
(२) यूक्रेन	४०६	६०१	किएव
(३) बाइलोरशिया	८०	२०८	मिन्स्क
(४) उजबेक	७३	४०९	ताशकंद
(५) कजाक	८५	२७५६	अल्मा आटा
(६) जार्जिया	४०	७०	टिफ्लीसी
(७) अजरबैजान	३४	८७	बाकू
(८) लिथुआनिया	२७	६५	विलनियस
(९) मोल्डेविया	२७	३४	किशिनेव
(१०) लैटविया	२०	६४	रीगा
(११) किरगिज	१९	१९८	फ्रुन्झ
(१२) ताजिक	१८	१४२	स्टालिनाबाद
(१३) आर्मीनिया	१६	३०	येरेवान
(१४) टर्कमेन	१४	४८८	आश्काबाद
(१५) इस्टोनिया	११	४५	टालिन
सोलहवाँ करेलो-फिनिश गणतंत्र १९५६ में रशिया गणतंत्रमें सम्मिलित कर लिया गया			पेट्रोजावोस्क
कुल संघ	२०,०२	२२,४०,४	

आर्थिक विभागोंके अनुसार जनसंख्या

(प्रतिशत)

	१९१३	१९५६
उद्योग, निर्माण, यातायात और संवहन	११	३७
कृषि और जंगल	७५	४३
शिक्षा-स्वास्थ्य	१	९
व्यापार, वसूली, सामान और प्राविधिक सप्लाई करनेवाली एजेन्सियाँ, सरकारी कर्मचारी आदि	१३	११

समाजवादी अर्थव्यवस्था

(प्रतिशत)

	१९२४	१९२८	१९३७	१९५६
मूल उत्पादनोंके साधनोंमें	६०	६६	९९·६	९९·९९
राष्ट्रीय आयमें	३५	४४	९८·१	९९·९९
कुल औद्योगिक उत्पादनमें	७६·३	८२·४	९९·८	१००
कुल कृषि उत्पादनमें	१·५	३·३	९८·५	९९·८९
खुदरा व्यापारमें	४७·३	७६·४	१००	१००

श्रेणीवार औद्योगिक उत्पादन

(प्रतिशत)

	१९१३	१९२७	१९२८	१९४०	१९४६	१९५६
उत्पादनके साधनोंका उत्पादन	३३·३	३८·१	३९·५	६१·२	६५·९	७०·८
भोग्य पदार्थोंका उत्पादन	६६·७	६१·९	६०·५	३८·८	३४·१	२९·२

कृषियोग्य भूमिका विभाजन

(करोड़ हेक्टेर—१ हेक्टेर = २·२ एकड़)

जारोंके जमानेमें		सोवियट संघमें १-१-५७ को	
कृषक परिवार	१३·५	स्थायी सामुदायिक कृषि	३९·०
कुलाक (धनी किसान)	८·०	लंबी अवधिकी सामुदायिक कृषि	४·९
जमींदार, शाही परिवार और गिरजाघर	१५·२	सरकारी फार्म	१०·०
कुल	३६·७	कुल	५४·९

सोवियट संघ तथा कुछ प्रमुख पूँजीवादी देशोंके औद्योगिक उत्पादनकी वृद्धिकी औसत वार्षिक गति

(प्रतिशत)

	सोवियट संघ		पूंजीवादी देश		
	कुल उद्योग	भारी उद्योग	अमेरिका	ब्रिटेन	फ्रांस
४० वर्षोंमें (१९१८-१९५७)	+१०·०	+११·४	+३·२	+१·९	+३·०
१२ वर्षोंमें (१९१८-१९२९)	+६·९	+९·७	+३·०	+१·२	+७·९
११ वर्षोंमें (१९३०-१९४०)	+१६·५	+१८·०	+१·२	+२·१	—२·२
युद्धकालके ५ वर्षोंमें (१९४१-१९४५)	—१·७	—१·५	+९·८	...	...
युद्धोत्तर ११ वर्षोंमें (१९४७-१९५७)	+१५·९	+१६·५	+४·७	+४·५	+७·७
युद्धपूर्वके ११ (१९३०-१९४०) और युद्धोत्तर ११ (१९४७-१९५७) वर्षोंमें —२२ वर्षोंमें	+१६·२	+१७·२	+२·९	+३·३	+२·६

सोवियट संघ तथा कुछ प्रमुख पूँजीवादी देशोंकी राष्ट्रीय आयकी वृद्धिकी गति

कुल राष्ट्रीय आय

वर्ष	सोवियट संघ	अमेरिका	ब्रिटेन	फ्रांस
१९१३	१००	१००	१००	१००
१९२९	११८	१४६	११२	१३८
१९४०	६११	१६१	१४५	१०२
१९५६	१९०८	३२४	१८८	१७६

प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय

वर्ष	सोवियट संघ	अमेरिका	ब्रिटेन	फ्रांस
१९१३	१००	१००	१००	१००
१९४०	४४४	११९	१३७	१०६
१९५६	१३२२	१८७	१६७	१६५

औद्योगिक उत्पादनकी दौड़में अमेरिकाको पछाड़नेके लिए रूसको अभी कितना आगे जाना है, यह इस तालिकासे जाना जा सकता है—

१९५६ में सोवियट संघमें अमेरिकासे कितना प्रतिशत उत्पादन होता था

	कुल उत्पादनका प्रतिशत	प्रति व्यक्ति उत्पादनका प्रतिशत	कुल उत्पादन रूस	कुल उत्पादन अमेरिका
ढलुआ लोहा	५२	४३		
इस्पात	४७	३९	४ करोड़ ८७ लाख टन	१० करोड़ ४५ लाख टन
कोयला	७७	६४		
तेल	२४	२०		
बिजली	२६	२२		
सीमेण्ट	४६	३९		
लकड़ी	१०५	८८		
चीरी लकड़ी	८२	६९		
सूती वस्त्र	४५	३८		

१९५६ में जन्म-मृत्यु और जनसंख्या-वृद्धिकी गति

प्रति १००० जनसंख्या पीछे

	जन्म	मृत्यु	वृद्धि
रूस	२५	७·५	१७·५
अमेरिका	२४·९	९·४	१५·५
हालैण्ड	२१·२	७·८	१३·४
स्पेन	२०·७	९·९	१०·८
जापान	१८·४	८·०	१०·४
पुर्तगाल	२२·३	१२·०	१०·३
फ्रांस	१८·३	१२·४	५·९
पश्चिमी जर्मनी	१६·३	११·०	५·३
ब्रिटेन	१६·१	११·७	४·४

रूसमें औसत उम्र

	मर्दोंकी	स्त्रियोंकी	कुल जनसंख्याकी
१८९६-९७	३१	३३	३२
१९२६-२७	४२	४७	४४
१९५५-५६	६३	६९	६७

१९५६ में विवाह और तलाक (प्रति १,००० जनसंख्या पीछे)

	विवाह	तलाक
सोवियट संघ	११·८	०·७
ब्रिटेन	८·१	०·६
पश्चिमी जर्मनी	८·९	०·९
अमेरिका	९·४	२·४

डाक्टरोंकी संख्या (प्रति १०००० जनसंख्या पीछे)

रूस	१६·९
पश्चिमी जर्मनी	१३·५
अमेरिका	१२·७
इटली	१२·३
जापान	१०·१
फ्रांस	९·०
ब्रिटेन	८·८

१९५६ में अधिक बच्चोंवाली माताओंमें मासिक भत्ता पानेवाली

४ बच्चोंवाली	१५ लाख ८६ हजार
५ बच्चोंवाली	८ लाख ४५ हजार
६ बच्चोंवाली	४ लाख ६८ हजार
७ या अधिक बच्चोंवाली	४ लाख १३ हजार

१० बच्चोंकी परवरिश करनेवाली माताओंको वीर माताओंकी उपाधियाँ और प्रशंसनीय मातृत्वके तमगे (आर्डर) १९१०-५६

'वीर माताएं' (१० बच्चोंवाली)			२१ हजार
'प्रशंसनीय मातृत्व सम्मान'			
९ बच्चोंवाली	प्रथम	श्रेणी	५४ हजार
८ ,,	द्वितीय	,,	१४३ हजार
७ ,,	तृतीय	,,	३३९ हजार
'मातृत्व तमगें'			
६ ,,	प्रथम	,,	६७६ हजार
५ ,,	द्वितीय	,,	१२५९ हजार

१९५६ में बौद्धिक पेशोंके अनुसार सुशिक्षित श्रमिकोंका विभाजन

कारखानों-निर्माण कार्यों, सरकारी खेतों, सामुदायिक खेतों ट्रैक्टर स्टेशनों, दफ्तरों-संस्थाओंके मैनेजर	२२ लाख ४० हजार
मुख्य और सीनियर इंजीनियर, वास्तुशास्त्री, शिल्पज्ञ, सुपरिंटेंडेंट, फोरमैन, डिजाइनर, टाइमकीपर और स्टेशनमास्टर	२५ लाख ७० हजार
कृषि विशेषज्ञ	३ लाख ७६ हजार
प्रोफेसर और रिसर्च करनेवाले	२ लाख ३१ हजार
अध्यापक, स्कूल डाइरेक्टर आदि	२० लाख ८० हजार
संस्कृति और कला (क्लब, लाइब्रेरी, संपादक)	५ लाख ७२ हजार
डाक्टर	३ लाख २९ हजार
डेन्टिस्ट, मिडवाइफ, नर्स, कम्पाउण्डर	१० लाख ४७ हजार
नियोजन, अर्थव्यवस्था और आंकिक	२१ लाख ६१ हजार
वकील	६७ हजार
उच्च शिक्षा पाठशालाओंके छात्र	११ लाख ७८ हजार
अन्य	२६ लाख ९ हजार
कुल	१ करोड़ ५४ लाख ६० हजार

१९५६ में श्रमिकोंमें स्त्रियोंका अनुपात (प्रतिशत)

कारखाने	४५
निर्माण	३१
कृषि	२४
वहनवाहन-यातायात	३३
व्यापार-वाणिज्य	६५
स्वास्थ्य	८५
शिक्षा	६७
आर्थिक संस्थान	५०
कुल	४५

पोस्ट ग्रेजुएट (१९५६)

पोस्ट ग्रेजुएट	२१,५००
प्रतिवर्ष उत्तीर्ण	८४५३

थियेटर (१९५७)

आपेरा और बैले	३२
ड्रामा, कामेडी और संगीत कामेडी	३७६
बालक और किशोरोंके	१०४
कुल	५१२
दर्शक	७ करोड़ ६० लाख

(थियेटरोंमें ४० भाषाओंमें कार्यक्रम होते हैं ।)

सिनेमा (१९५६)

	देहातमें	कुल
स्थिर	२३५००	३५५००
घुमौवा	२५९००	२७४००
दर्शक	२ अरब ८२ करोड़ ४० लाख	

अन्य

लाउडस्पीकर	२,२१,९१०००
रेडियो	७३,८००००
टेलिविजन सेट	१३,२४,६००
क्लब (जनता गृह)	१,२७,०००
म्यूजियम	८४९
दर्शक	३,३०,००,०००
लाइब्रेरी	३,९४०००
लाइब्रेरियोंमें किताबें	१,४८,९०,००,००० (प्रति १०० व्यक्ति ७३४ पुस्तकें)
पुस्तकें छपीं (कुल नाम)	६००००
,, कुल प्रतियां	१,१०,७०,००,०००
पत्रिकाएं (कुल)	२५०१
,, वार्षिक ग्राहक संख्या	४२ करोड़
समाचारपत्र कुल	७५३७
,, दैनिक ग्राहक संख्या	५ करोड़ ४० लाख

१२४ विभिन्न भाषाओंमें पुस्तकें छापी गयीं जिनमें सबसे अधिक रूसी भाषामें ४३७३० छपीं ।

———:०:———

भविष्यकी झलक

नयी सप्तवर्षीय योजना

इस समय रूसी नेताओंको बस एक इसी बातकी चिन्ता लगी है कि आर्थिक दौड़में रूस अमेरिकाको किस तरह शीघ्रातिशीघ्र पछाड़ डाले और दुनियाके सामने यह साबित करे कि सोवियट अर्थव्यवस्था पूंजीवादी अर्थव्यवस्थासे अधिक फलप्रद होती है। रूसी नेताओं-की योजना है कि दो सप्तवर्षीय आयोजनोंमें, अगले १५ वर्षोंमें, वे औद्योगिक उत्पादनमें अमेरिकाको पछाड़ देंगे। १९२८में दुनियाभरके औद्योगिक उत्पादनका तेरहवाँ हिस्सा रूसमें होता था, पर अब पाँचवाँ हिस्सा हो रहा है; इतनी प्रगति रूसने कर ली है। रूसमें एक राजनीतिक पार्टीका एकतन्त्र होनेके कारण वहाँ लम्बी-लम्बी पंचवर्षीय योजनाएं बनाना और उन्हें देशका कानून मानकर हर हालतमें और हर बाधा दूरकर क्रियान्वित करना इतनी जल्दी सम्भव हुआ है। स्टालिन-युगमें तो पंचवर्षीय योजनाओंको कानून मान-कर पूरा करना सभी सरकारी अफसरोंका प्रथम कर्तव्य माना जाता था। इसमें जो चूकता था या ढिलाई दिखाता था, उसे कड़ी सजा दी जाती थी, पर स्टालिन-युगकी समाप्तिके बाद अब ख्रुश्चेव-युगमें पंचवर्षीय योजनाएँ कुछ लचीली बनायी जा रही हैं ताकि योजनाके कार्यान्वयनके होते हुए यदि उसमें कोई त्रुटि मालूम पड़े या कोई संशोधन अपेक्षित हो तो बीचमें ही उसे ठीक किया जा सके। रूसकी छठीं पंचवर्षीय योजना सन् १९५६ से १९६० तकके लिए थी, पर १९५६ के शुरूमें ही यह मालूम हुआ कि बहुतसी व्यावहारिक कठिना-इयोंके कारण उसे अपनी निश्चित अवधिमें पूरा करना सम्भव नहीं है, इसलिए उस योजनामें संशोधन किया गया। नयी संशोधित योजना ५६।५७।५८ इन तीन वर्षोंके लिए ही बनायी गयी तथा यह निश्चय हुआ कि अगली योजना सन् १९५९ से १९६५ तकके लिए सात सालकी बनायी जाय। इस निश्चयके अनुसार नयी सप्तवर्षीय योजना बन गयी है और सोवियट संघकी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समितिने यह तय किया है कि पार्टीकी असाधारण २१वीं कांग्रेस २७ जनवरी १९५९ को बुलायी जाय और इसमें सन् ५९।६५के लिए सोवियट संघके राष्ट्रीय अर्थतन्त्रके विकासके लिए निर्धारित आँकड़े स्वीकार कराये जायें। २१वीं कांग्रेसको असाधारण या विशेष इसलिए कहा गया है कि नियमतः पार्टीकी २१वीं कांग्रेसका अधिवेशन २०वीं कांग्रेसके होनेके चार साल बाद होना चाहिये। २०वीं कांग्रेस सन् १९५६ के शुरूमें बुलायी गयी थी और अब २१वीं कांग्रेस चार सालके बजाय ३ सालके बाद ही बुलायी जा रही है। नयी सप्तवर्षीय योजना शीघ्र ही अखबारोंमें प्रकाशित की जायगी और उसपर रूसभरके

कारखानोंके काम करनेवाले श्रमिक, वैज्ञानिक, लेखक, सामुदायिक कृषक, कलाकार तथा आम लोग अपनी-अपनी सभाओंमें बहस करेंगे। यह सम्भव नहीं होगा कि २ महीनेके अन्दर ही योजनाका प्रकाशन, उसपर देशभरमें विचार और इस विचारके फलस्वरूप आये स्वीकार करने लायक संशोधन नयी योजनामें सम्मिलित कर लिये जायें। कांग्रेसके अधिवेशनमें भी प्रतिनिधि इसपर विरोधी बहस कर इसमें दूरगामी संशोधन करानेका प्रयत्न नहीं कर सकते। रूसी आम जनताको नेताओं द्वारा तैयार की गयी योजनाओंपर बहस करनेकी पूरी स्वतन्त्रता रहती है, पर आम जनता उसके विरोधमें कुछ नहीं कह सकती। यह काम भी होता है, पर वह पार्टीके अन्दर ही और सरकारी अधिकारियोंके आपसी विचार-विमर्शसे ही हो सकता है।

रूसी आर्थिक योजनाएँ अब लचीली होने लगी हैं, इसके और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। कारखानोंके और निर्माणकार्योंके व्यवस्थापनके संघटनमें अभी हालमें परिवर्तन किया गया है। सामुदायिक खेतोंपर मशीन और ट्रैक्टर स्टेशनोंके अधिकारियों और व्यवस्थापकोंमें इतनी अधिक नौकरशाही प्रवृत्ति आ गयी थी कि उसका असर कृषि-उत्पादनपर पड़ने लगा था और किसानकी अपनी पहल और स्वेच्छा का उत्साह नष्ट होता जाता था। रूसी नेताओंने मशीन और ट्रैक्टर स्टेशनोंका वर्चस्व घटा दिया और किसानोंको और अधिक स्वतन्त्रता दी। हालमें ट्रेड यूनियनोंके अधिकारोंमें वृद्धि की गयी तथा ऐसे ही बहुतसे नये सुधार किये गये जो व्यवहारमें और अनुभवसे अत्यावश्यक मालूम पड़ते थे। पुराने युगमें सरकारी निश्चय पत्थरकी लकीर रहते थे, पर अब वह स्थिति नहीं है।

रूस बहुत तेजीसे औद्योगिक उत्पादनमें अमेरिकासे आगे बढ़ जाना चाहता है। वह न केवल मात्रामें अमेरिकासे अधिक उत्पादन ही चाहता है पर प्रति व्यक्ति भी वह अमेरिकासे अधिक उत्पादन चाहता है क्योंकि उसकी जनसंख्या अमेरिकाकी जनसंख्या से वैसे ही ३ करोड़ अधिक है। कृषि उत्पादन अमेरिकासे अधिक बढ़ाना एक लक्ष्य तो है ही।

कच्चे लोहेका उत्पादन ५० लाख टन बढ़ानेके लिए इसी वर्षके अन्ततक ७ नये ब्लास्ट फर्नेस तैयार हो जानेवाले हैं। नयी सप्तवर्षीय योजनामें सम्भवतः रासायनिक उद्योगोंको सर्वप्राथमिकता दी जानेवाली है ताकि कृत्रिम धागे, वस्त्र और प्लास्टिकका उत्पादन इतना अधिक हो जाय कि सभी जनताको जीवनोपयोगी आवश्यकता पूरी करने के लिए इसके बढ़े उत्पादनसे बहुतसी सहूलियतें हों।

नयी योजनामें बहुतसा जोर पूर्वी साइबेरियापर दिया जायगा। यह इलाका अभी आबाद नहीं है, पर इसमें अपार खनिज और प्राकृतिक वैभव भरा है। उसका पूरा उपयोग करनेकी वृहत् योजना नये सप्तवर्षीय आयोजनमें है। इस इलाकेका वैभव

बढ़ाना पड़ोसी बलशाली चीनकी दृष्टिसे भी आवश्यक है। नयी योजनामें तेल और गैस जैसे सस्ते ईंधनोंका उत्पादन बहुत तेजीसे बढ़ाया जानेवाला है ताकि इनसे विपुल परिमाणमें बिजली बनायी जा सके।

विदेशी व्यापार बढ़ा

अपनी ही आवश्यकताकी पूर्तिकी कोशिशमें रहनेके कारण रूस पहले विदेशोंसे व्यापार बढ़ानेकी कोई चिन्ता नहीं करता था, पर ज्यों-ज्यों इसका सम्बन्ध बाहरके देशोंसे बढ़ने लगा, नये-नये कम्युनिस्ट देश द्वितीय महायुद्धके बाद बने और अमेरिकासे होड़ लेना जरूरी मालूम पड़ने लगा त्यों-त्यों अब रूस अपना विदेशी व्यापार भी बढ़ाता जा रहा है। १९५७ में रूसका विदेशोंसे २२ अरब ३० करोड़ रूबलका विदेशी व्यापार हुआ। १९५६ में यह मात्रा १५ प्रतिशत बढ़ी। पूर्वी जर्मनी, चीन और चेकोस्लोवाकियासे रूसका सबसे अधिक व्यापार विनिमय हुआ। समाजवादी देशोंसे पूरे व्यापारका केवल इन्हीं ३ देशोंके साथ ६० प्रतिशत व्यापार हुआ। गैरकम्युनिस्ट देशोंके साथ सन् १९५७ में रूसका व्यापार ८ अरब ८० करोड़ रूबलका हुआ। १९५६ से यह २४ प्रतिशत अधिक था। यूरोपमें सबसे अधिक व्यापार फिनलैण्ड, ब्रिटेन, फ्रांस और पश्चिमी जर्मनीके साथ हुआ जो गैरकम्युनिस्ट देशोंके साथ व्यापारका ४० प्रतिशत था। भारत, मिस्र, इन्डोनेशिया, अफगानिस्तान आदि देशोंके साथ तो व्यापारवृद्धि और तेजीसे हुई। १९५० में भारतके साथ रूसका जितना व्यापार होता था उससे १९५७ में १८ गुना हुआ। रूस अन्न, कोयला और तेल पदार्थ भारी मात्रामें बाहर भेजता है। वह अब मोटरोंका भी निर्यात करने लगा है। १९५७ में ४२ देशोंमें रूसकी २ लाख मोटरें चल रही थीं।

सन् १९५७ में दुनियाके निर्यात व्यापारमें रूसका अलमुनियममें (कनाडाके बाद) दूसरा नम्बर, जस्ता और टिनमें चौथा, लकड़ीमें (कनाडा और स्वीडनके बाद) तीसरा, फ्लैक्स धागे और वस्त्रमें दूसरा और अन्नमें तीसरा नम्बर था।

रूसी नेताओंका कहना है कि रूसी औद्योगिक मजदूरोंके श्रमकी उत्पादन क्षमता १९१३ में जितनी थी उससे १९५७ में साढ़े नौ गुना हो गयी है। इस अवधिमें अमेरिकी क्षमता २·३. गुना, ब्रिटेनमें १·४ और फ्रांसमें २ गुना बढ़ी है। रूसमें अब ब्रिटेन, फ्रांस और पश्चिमी जर्मनीसे अधिक उत्पादन होने लगा है तथा अमेरिका और रूसके उत्पादनोंमें जो अन्तर था वह बहुत तेजीसे कम होता जा रहा है। १९५३ और १९५७ के बीच इस्पातका उत्पादन रूसमें जहां ३२६०००० टन बढ़ा है वहां अमेरिकाका उत्पादन केवल ३ लाख टन प्रतिवर्ष बढ़ा है। तेल उत्पादनकी वार्षिक वृद्धिमें दोनों देशोंके आंकड़े इसी प्रकार एक करोड़ १४ लाख और ८८ लाख टन हैं। ऊनी कपड़ा रूसमें १ करोड़

८४ लाख मीटर जहां बढ़ा है वहां अमेरिकी उत्पादन १ करोड़ ८ लाख मीटर प्रतिवर्ष घट गया। रूसमें गेहूंका उत्पादन अमेरिकासे दूना, शुगर बीटका तिगुना और ऊनका ढाई गुना है। राष्ट्रीय आयमें १९१३ से १९५७ तक रूसमें जहां बीस गुना वृद्धि हुई है, वहां अमेरीकामें यह वृद्धि ३·२ गुना हुई है। प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय, इसी अवधिमें रूसमें जहां १४ गुना बढ़ी है, वहां अमेरिकामें २.८ गुना और ब्रिटेनमें १·७ गुना बढ़ी है।

सबसे अधिक और बिजलीघरोंपर

भारी उद्योगोंको बढ़ानेके लिए रूसको देशभरमें हजारों बिजलीघर बनाने पड़े हैं। इस समय रूस भरमें ६८०० सौ पनबिजलीघर हैं। इनमेंसे मझोले और बड़े १०९ हैं। ५६-५७ इन दो वर्षोंमें ४० लाख किलोवेट बिजली देनेवाले बड़े नये पनबिजलीघर बने जिसमें एक जनवरी १९५८ को पनबिजली घरोंकी कुल क्षमता ९८ लाख किलोवेट पैदा हो गयी। पूर्वी साइबेरियाको धनधान्यपूर्ण बनानेके लिए इरकुटस्कमें अंगारा नदीपर आठ टर्बाइनवाला नया जल विद्युत घर इसी बीस सितम्बरसे पूरी शक्तिसे काम करने लगा है। इसकी क्षमता ६ लाख ६० हजार किलोवेट है। पनबिजली घरोंके साथ-साथ रूसमें भापसे बिजली बनानेके कारखाने और भी अधिक तेजीसे बनानेकी योजना है। ५९-६५ की सप्तवर्षीय योजनामें कुल कार्यशक्ति उत्पादनका ८० प्रतिशत भापवाले बिजली घरोंसे होगा। यूरलमें ट्रोइटस्काया बिजली घर १० लाख किलोवेटकी क्षमताका होगा। १० लाखसे १५ लाख किलोवेटतककी क्षमतावाला पनबिजलीघर बनानेमें भापबिजली घर बनानेसे २ या ३ साल अधिक समय लगता है और २ से २॥ अरब रूबलतक प्रति बिजलीघर अधिक खर्च लगता है। पन बिजलीघरोंमें चालू खर्चा अवश्य कम लगता है और बिजली भी सस्ती पड़ती है, पर उसका फायदा चारसे लेकर, २० बरस बादसे मिलना शुरू होता है। रूसको इस समय अमेरिकासे आगे बढ़नेकी अधिक जल्दी है। इधर रूसमें तैल और प्राकृतिक गैसके और भण्डार मिले हैं जिसका नतीजा यह होगा कि १९५५ में तैल और गैस मिलाकर पूरी इंजन शक्तिका जहां २३·४ प्रतिशत था वहां १५ सालमें ५८ प्रतिशत हो जायगा। मध्य रूस, वोल्गा क्षेत्र, यूरल और रूसके कुछ दक्षिणी प्रदेशोंमें १००० किलोमीटरकी दूरीसे भी यदि गैस ले जानी पड़े तो पहले से वह सस्ती पड़ेगी। पूर्वी साइबेरियामें तो जमीनके ऊपर ही कोयले और लिगनाइटकी खानें मिली हैं जिससे वहां कोयला तेलसे सस्ता और भापके बिजलीघरोंकी बिजली पनबिजलीघरोंकी बिजली जितनी सस्ती पड़ेगी।

आजसे ३८ साल पहले रूसने निश्चय किया कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्थाका मूलाधार विद्युत् शक्ति बनाना होगा। १९२० से १९२७ तक ८ वर्षोंमें वोल्गा, पुरा और सुला इन तीन नदियोंपर तीन नये बिजलीघर बनाये गये। १९२८ से ३२ तक पहली पंचवर्षीय

योजनाके कार्यमें नीपर नदीपर यूरोपका सबसे बड़ा लेनिन जल-विद्युत् गृह बनाया गया। अगली पंचवर्षीय योजनाओंमें तो बहुतसे बिजलीघर बनाये गये और २२० किलोवोल्टके तारोंके जालसे सब आपसमें एक दूसरेसे मिलाये गये। १९३५ तक विद्युत् उत्पादनमें रूसका दुनिया भरमें तीसरा नम्बर हो गया। द्वितीय महायुद्धके बाद युद्धकालमें क्षति-ग्रस्त हुए बिजलीघर फिरसे ठीक किये गये तथा यूरल प्रदेशमें कई नये पनबिजलीघर बनाये गये। पांचवीं पंचवर्षीय योजनाके कालमें (१९५१-१९५५) नये नये पनबिजलीघर बनानेका काम और भी तेज किया गया। कुबीशेव और स्तालिनग्राद बिजलीघरोंके लिए १ लाख किलोवैटकी शक्तिवाले टरबाइन और सवा लाख किलोवैटके जनरेटर बनाये गये हैं। दिन-रात अविराम कंक्रीट डालनेवाले विशाल यंत्र बनाये गये। कुबीशेव बिजलीघर बनानेमें किसी-किसी दिन २४ घण्टेमें २९ हजार घन मीटर कंकरीट डाला गया, जब कि अमेरिकाके ग्रांड कौली बांधमें २४ घण्टेमें १५ हजार ७ सौ घन मीटर ही कंकरीट डाला जाता रहा है। १९५१-५५ में ७८ अरब किलोवैट घंटा अधिक बिजली बनने लगी। १९५० से १९५५ तक पनबिजलीघरोंसे बननेवाली बिजली १२ अरब ७० करोड़से बढ़कर २३ अरब २० करोड़ किलोवैट घंटा हो गयी जिससे २ करोड़ टन कोयलेकी बचत हुई। १९५७ में दुनियाका सबसे बड़ा कुबीशेव पनबिजलीघर पूरी ताकतसे चलने लगा और इस वर्ष उससे भी बड़ा स्तालिनग्राद, पनबिजलीघर चलने लगा है। साइबेरियामें रूस भरकी ६० प्रतिशत जलशक्ति संचित है। वहां येनीसेय नदीपर ४० लाख किलोवैटका क्रास्नोयार्स्क बिजलीघर बन रहा है। इससे बड़ा दुनियामें कोई बिजलीघर नहीं होगा। १९६० तक पनबिजलीघरोंकी कुल शक्ति ५९ अरब किलोवैट घंटा हो जायगी। ४ सौ, ५ सौ और ८ सौ किलोवोल्ट बिजली प्रवाहन करनेवाले तारोंके जालसे ये सब बिजलीघर एक दूसरेसे मिलाये जानेवाले हैं। पिछले ४० वर्षोंमें रूसमें विद्युत् उत्पादन सौ गुना बढ़कर पिछले सालतक २०९ अरब किलोवैट घंटा हो गया जिसमें ३९ अरब ३० करोड़ किलोवैट घण्टा बिजली पनबिजली घरोंसे मिलती थी। लेनिनका नारा था कि राजनीतिमें सोवियत पावर और देश भरमें देशव्यापी बिजलीकी पावरसे ही कम्युनिज्मकी परिपूर्णता होगी।

सूर्य शक्ति और परमाणु शक्तिके बिजलीघर

कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस, जलप्रवाह आदि बिजली उत्पन्न करनेके साधनोंके अतिरिक्त रूसमें सूर्य शक्ति और परमाणु शक्तिसे बिजली बनानेके कारखाने भी खड़े किये जा रहे हैं। इनका उद्देश्य बिजली प्राप्त करना उतना नहीं है जितना यंत्र शिल्प विज्ञानमें अमेरिकासे आगे बढ़ना है। अरारात घाटीमें सूर्य साल भरमें २६ सौ घंटा चमकता है। वहां ५ हजार किलोवैटका एक सूर्य विद्युत् गृह खड़ा करनेकी योजना पूरी बन चुकी है।

दुनियाका सबसे बड़ा १ लाख किलोवैटका परमाणु विद्युत गृह रूसमें कहीं बनाया गया है। निश्चय ही यह बिजली बहुत महंगी पड़ेगी, पर इसका उद्देश्य बिजली बनाना उतना नहीं है जितना उससे उत्पन्न पारमाणविक धातु प्लूटोनियम प्राप्त करना है।

शिक्षा क्षेत्रमें परिवर्तन

कम्युनिस्ट समाजके निर्माणका मूल लक्ष्य सामने रखनेके बाद उसकी प्राप्तिके लिए व्यवहार क्षेत्रमें जो भी सामाजिक परिवर्तन करना आवश्यक होता है, उसे रूस सरकार तुरत करती है। फर्क इतना ही रहता है कि रूसमें हुए परिवर्तनोंका बाहरी दुनियामें अधिक डंका नहीं पीटा जाता।

शिक्षाका ही क्षेत्र लीजिये। इधर रूसी नेताओंने यह महसूस किया कि रूसमें तेजीसे बढ़ते हुए कारखानोंमें काम करनेके लिए मजदूरोंकी कमी पड़ने लगी है। शहरों की जनता श्रमिकके कामको कुछ अप्रतिष्ठाजनक समझने लगी है और माध्यमिक शिक्षाके बाद युनिवर्सिटियोंमें तथा टेकनिकल कालेजोंमें अपने बच्चोंकी येनकेन प्रकारेण भरती करनेके लिए सिफारिश, दबाव, घूस आदि भ्रष्टाचारी मार्गका अवलम्बन करने लगी है जिसका नतीजा यह हुआ है कि उच्च शिक्षा संस्थाओंमें श्रमिकों और किसानोंके लड़के केवल ३०।४० प्रतिशत होते हैं और बाकी ६०।७० प्रतिशत नौकरी पेशेवाले और बुद्धि जीवियोंके लड़के होते हैं। रूसी नेताओंने शिक्षाकी एक नयी योजना बनायी है जिसमें बच्चोंको पहले दर्जेसे ही उत्पादक कामके लिए तैयार करनेको शारीरिक श्रमका आदर करनेकी शिक्षा दी जायगी। अभीतक शहरी लड़कोंको दस साल और ग्रामीण लड़कोंको सात साल अनिवार्य रूपसे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओंमें पढ़ना पड़ता था, शहरी लड़के १७ वर्षकी उम्रमें, हाईस्कूलमें ग्रेजुएट होकर (अन्तिम परीक्षा पासकर) श्रमिकोंकी लम्बी सेनामें भरती होनेको तैयार हो जाते थे। अब हाईस्कूलकी शिक्षाकी अवधि दो वर्ष घटाकर १५ वर्षकी उम्रमें ही सोवियट युवक कारखानोंमें काम करनेके लिए तैयार हो जायगा। अभीतक जितने भाग्यशाली लड़कोंको उच्च शिक्षा संस्थाओंमें भरती होनेका अवसर मिलता था, अब उसमें एक तिहाई लड़कोंको ही आगे पढ़नेका अवसर मिलेगा। शिक्षाकी यह नयी योजना कम्युनिस्ट पार्टीके प्रेसिडियमने स्वीकार कर ली है और शीघ्र ही सुप्रीम सोवियटमें स्वीकार कराकर यह अमलमें लायी जायगी। कारखानोंमें काम करना शुरू करनेके बाद भी जो छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करना चाहेंगे उन्हें रात्रि कक्षाओंमें या डाकके माध्यमसे आगे पढ़नेको प्रोत्साहित किया जायगा। जो भाग्यवान् उच्च शिक्षा संस्थाओंमें भरती होंगे उन्हें भी पांच वर्षकी उच्च शिक्षामें पहले २ वर्ष कारखानोंमें काम करनेकी कुछ न कुछ ट्रेनिंग लेनी ही पड़ेगी। उच्च शिक्षा-संस्थाओंमें भी केवल सरकारी ट्रेड यूनियनों और यंग कम्युनिस्ट लीगोंकी सिफारिशपर ही भरती होगी। प्रारंभिक शिक्षामें भी दो खण्ड रहेंगे जिसमें प्रथम खण्ड

में सात या आठ साल विज्ञान, प्राविधिक शिल्प ज्ञान, वस्तुनिष्ठ नैतिकता शारीरिक व्यायाम और कलाप्रवृत्तिको उत्तेजन ये विषय अनिवार्य रूपसे रहेंगे। नैमिक शिक्षाके दूसरे खण्डमें सारी पढ़ाई कारखानोंमें और खेतोंपर मिलकर व्यावहारिक रूपमें होगी। रूसमें शिक्षाका वार्षिक सत्र १ सितम्बरसे शुरू होता है। देशभरमें मिलाकर कोई ५ करोड़ छात्र प्रारम्भिक या माध्यमिक शिक्षा-संस्थाओं या उच्च शिक्षा-संस्थाओंमें शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं। कोई चार-पाँच लाख छात्र प्रति वर्ष उच्च शिक्षा-संस्थाओंमें भरती होते हैं और कोई तीन लाख युवक प्रति वर्ष उच्च शिक्षा समाप्त कर अपने-अपने कामपर लग जाते हैं। इस प्रकार कोई २०-२२ लाख छात्र उच्च शिक्षा-संस्थाओंके सभी दर्जोंमें मिलाकर पढ़ते रहते हैं। ब्रिटेन, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी और इटलीमें, जिनकी मिलाकर जनसंख्या अकेले रूसकी जनसंख्या के बराबर है, कोई ५-६ लाख छात्र उच्च शिक्षा-संस्थाओंमें पढ़ते हैं। इसीलिए रूसने भी अब इन छात्रोंकी संख्या कम करनेकी योजना बनायी है। रूसी स्कूलोंमें सभी विषय अनिवार्य रूपसे पढ़ने पड़ते हैं, कोई विषय वैकल्पिक नहीं रहता। यदि छात्रको गणित अच्छा नहीं लगता तो वह उसे छोड़ नहीं सकता। अतिरिक्त क्लासोंमें अध्ययन कर उसे विषयका निश्चित कोर्स पूरा करना ही पड़ता है, नहीं तो वह उस साल फेल कर दिया जाता है। सोवियट संघभरमें फिजिक्स, बॉयलाजी, गणित आदि विषय समान रूपमें सिखाये जाते हैं, भेद केवल माध्यमकी भाषाका रहता है। हर एक राज्यके स्कूलोंमें उस राज्यकी राष्ट्रभाषाके माध्यमसे पढ़ाई होती है और उस राज्यकी भाषा, उसका साहित्य और उसका इतिहास, विशेष रूपसे पढ़ाया जाता है। आवश्यक विषयोंकी पढ़ाईका स्टैण्डर्ड संघ भरमें एक होनेके कारण देशभरमें मास्को, लेनिनग्राड या अन्य बड़ी यूनिवर्सिटियोंमें पढ़नेके लिए आनेपर छात्रको कोई दिक्कत नहीं पड़ती। देहातोंमें भी छात्र, एक ही तरहकी साफ और आकर्षक युनिफार्म पोशाक पहनकर स्कूल जाते हैं।

ज्ञानकोशका नया खण्ड

स्टालिन-युगतक रूसी नेता इस बातकी बड़ी सावधानता रखते थे कि देशके अपने और बाहरके विरोधियोंकी बातें रूसी जनतातक न पहुँच सकें। पर अब क्रुश्चेव-युगमें विरोधियोंका उतना डर रूसी नेताओंको नहीं रहा। अब यदा-कदा अमेरिकन लेखकोंके भी लेख 'प्रावदा'में छपने लगे हैं।

रूसी सरकारी ज्ञानकोशके 'कौन क्या है' सूचीमेंसे पहले विरोधी लोगोंके नाम निकाल डाले गये थे और इतिहासको भी दबानेकी कोशिश की गयी थी, पर पिछले महीनेमें ज्ञानकोशके ग्राहकोंको ५१ वाँ पूरक खण्ड ४५८ पृष्ठका अप्रत्याशित मिला। इसमें उन पुराने विरोधी रूसी राजनीतिज्ञों, सेनापतियों और यहूदी लेखकोंके नाम

और संक्षिप्त जीवन चरित्र छापे गये हैं जिनके नाम पहले निकाल डाले गये थे। नये खण्डमें पश्चिमी जर्मनीके चान्सलर कोनराड अडानावरका भी नाम है।

नये खण्डमें ऐसे बहुतसे मृत नेताओंकी भी सूचियां हैं जिनकी मृत्युके बारेमें निश्चित मन् आदिकी जानकारी आजतक किसीको नहीं थी। स्टालिन-युगमें घोषणा हुई थी कि विरोधी कम्युनिस्ट नेताओंके 'सफाये'के काम १९३८ में समाप्त कर दिया गया, पर ज्ञानकोशके नये खण्डसे मालूम होता है कि वह १९४१ तक गुप्त रूपसे चलता रहा।

कम्युनिस्ट पार्टी और सरकारमें स्पर्द्धा

रूसमें एक ही राजनीतिक पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी है और यह मुल्की, न्याय-विभागीय, पुलिस और सेनाके सर्वोच्च अधिकारी पदोंपर पार्टीके आदमी नियुक्त करती है। पर जो सर्वोच्च नेता रहते हैं, वे पार्टी और सरकारी मशीन दोनोंपर नियन्त्रण रखते हैं, जिसके कारण पार्टीको सरकारी यन्त्रके सामने दबना पड़ता है। यद्यपि सिद्धांततः यही माना जाता है कि सोवियट कम्युनिस्ट पार्टी सारे सोवियट यन्त्रका नियन्त्रण करनेका केन्द्र होती है। १९२५ में पार्टीकी चौदहवीं कांग्रेस हुई थी। अक्तूबर १९३२ में १८ वीं कांग्रेसके होनेके साढ़े तेरह साल बाद १९ वीं कांग्रेस हुई। यद्यपि पार्टीके विधानके अनुसार प्रति तीन वर्षपर एक बार कांग्रेसको अवश्य मिलना चाहिये था। १९ वीं कांग्रेसमें यह नियम पास हुआ कि कांग्रेसका अधिवेशन अब प्रति ४ वर्षपर हो। इसके अनुसार २० वीं कांग्रेस १९५६ में हुई; जिसमें क्रुश्चेवने स्वर्गीय स्टालिनके अधिनायक तन्त्रकी खूब छीछालेदर की थी। उसी नियमके अनुसार अब कांग्रेसका २१ वां अधिवेशन १९६० में होना चाहिये, पर वह अगले वर्ष १९५९ में ही बुलाया गया है। इससे लगता है कि क्रुश्चेव कम्युनिस्ट पार्टीका घटा हुआ महत्त्व फिर बढ़ाना चाहते हैं। १९ वीं कांग्रेसमें पोलिटब्यूरो भंग कर २५ पूर्ण सदस्य और ११ उम्मीदवार सदस्योंका एक नया प्रेसिडियम बनाया गया। नयी सेण्ट्रल कमेटीमें १२५ पूर्ण सदस्य और १११ उम्मीदवार सदस्य रखे गये। मार्च १९५३ में स्टालिनकी मृत्युके बाद इसमें कुछ और परिवर्तन हुए। प्रेसिडियमकी सदस्य संख्या घटाकर १० पूर्ण सदस्य और ४ उम्मीदवार सदस्य कर दी गयी। इससे सत्ता बटानेवालोंकी संख्या ३६ से घटकर १४ हो गयी। मास्कोमें भी हमने देखा कि सरकारी तन्त्रका जितना महत्त्व जनता मानती है उतना पार्टीका नहीं, पर अन्दर-अन्दर निश्चय ही पार्टीका प्रभाव सरकारपर अवश्य पड़ता होगा। पार्टीके पत्र 'प्रावदा' और सरकारी पत्र 'इजवेस्तिया'में जो होड़ चलती है, उसका कारण भी पार्टी और सरकारकी एक दूसरेपर हावी होनेकी स्पर्धा ही है। जहांतक 'प्रावदा' और 'इजवेस्तिया'का सम्बन्ध है, देशपर 'प्रावदा'का प्रभाव, 'इजवेस्तिया'से अधिक है। सोवियट यूनियनमें इस समय सर्वोच्च सत्ता प्रीमियर और चार छः डिप्टी-प्रीमियरोंकी सर्वोच्च अन्तरंग परिषदके हाथमें ही है, पार्टीके किसी संघटनके

हाथमें नहीं है। रेडियो, लेखकों और कलाकारोंपर पार्टीका ही नियन्त्रण अधिक रहता है। पार्टीके और सरकारके सर्वोच्च नेता वे ही एक ही व्यक्ति रहनेके कारण दोनोंमें खुला झगड़ा नहीं मालूम होता, पर यदि भविष्यमें दोनोंके सर्वोच्च नेता अलग-अलग होंगे और बाहरी खतरा कम हो जायगा तो झगड़ा अवश्य प्रकट रूप धारण करेगा।

सोवियट संघमें सामाजिक वर्ग

यद्यपि कम्युनिज्मकी स्थापनाका उद्देश्य वर्ग युद्धके साधनसे वर्ग भेद मिटाना है, फिर भी सोवियट रूसमें बदलती हुई परिस्थितिके अनुसार नये-नये सामाजिक वर्ग प्रकट होते जाते हैं। रूसकी लेनिन-स्टालिनकी क्रांति, औद्योगिक सर्वहारा मजदूर वर्गके नामपर हुई, पर १९३० के बादसे मजदूरोंकी संख्या इतनी तेजीसे बढ़ रही है और उनमें यन्त्र शिल्पज्ञानकी दक्षताकी प्रतियोगिताएं इतनी अधिक होती हैं कि श्रमिकोंके पारिश्रमिक बहुत बढ़ गये हैं। उत्पादनमें होड़की इतना अधिक प्रोत्साहन दिया जाता है कि अधिक दक्ष और मेहनती श्रमिकोंका एक नया छोटा-सा सामाजिक वर्ग ही तैयार होता जा रहा है, जिसे सारे श्रमिक वर्गके नामपर बनाये गये काला सागर तटवर्ती स्वास्थ्य-गृहों तथा पर्वतीय क्रीड़ा संस्थाओं आदिका लाभ अधिक मिलता है।

दक्ष श्रमिकोंके सामाजिक वर्गके बाद दूसरा महत्त्वका सामाजिक वर्ग सामुदायिक कृषिके कृषकोंका हो गया है।

तीसरा सामाजिक वर्ग मेहनतकश बुद्धिजीवियोंका है। कारखानोंके मैनेजर, सरकारी नौकर, इञ्जीनियर, क्लर्क और अन्य पेशेवाले इस वर्गमें आते हैं। इनमें लेखक, कलाकार भी आते हैं। यद्यपि वैज्ञानिकों, लेखकों, कलाकारोंको सरकारी शासक नौकरोंसे अधिक भौतिक सुविधाएँ मिलती हैं, पर उनके हाथमें सत्ता बिलकुल नहीं रहती। स्पुटनिक युग शुरू होनेके कुछ पहलेसे वैज्ञानिकोंकी स्थिति वेतनकी दृष्टिसे बहुत ही अधिक सुधर गयी है और उनका भी एक नया सामाजिक वर्ग बनता जा रहा है। इनके बच्चोंको भी शिक्षा संस्थाओंमें प्राथमिकता दी जाती है। फैक्टरी और सामुदायिक खेतोंके मैनेजर भी इसी वर्गमें आते हैं। जिम्मेदारी अधिक होनेके कारण तथा सत्ता, सुरक्षा और स्वतन्त्रताके अभावमें यह वर्ग मानसिक दृष्टिसे असंतुष्ट रहता है। अदक्ष मजदूरों और किसानोंका वर्ग तथा मानसिक दृष्टिसे अशान्त बुद्धिजीवियोंका यह वर्ग आगे चलकर सोवियट सामाजिक संघटनपर गहरा असर डालेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

यद्यपि सोवियट संघ राष्ट्रीय भावनाके खिलाफ है और अन्तरराष्ट्रीय भावनाका अपने को समर्थक कहता है फिर भी मध्यएशियाके मुसलमान अरब राष्ट्रोंको यदि अपने अधिक निकटका मानने लगे तो सोवियटके कानूनके अनुसार यह अपराध माना जाता है।

भविष्य-दर्शन

ऊपर जो विविध कठिनाइयाँ समाजवादी राज्यकी सम्पूर्ण रूपसे स्थापनाके मार्गमें बाधक बतायी गयी हैं उनसे रूसी नेता अपरिचित नहीं हैं। स्टालिनने अपने तानाशाही ढंगसे इनका शमन-दमन करनेका प्रयत्न किया, पर क्रुश्चेव-युगमें जो उदार सामाजिक नीतिकी धारा बह चली है उसे फिर वापस मोड़कर स्टालिन-युगमें ले जाना असम्भव मालूम होता है। मैंने इसी पुस्तकमें कहीं लेनिन-स्टालिनको पेशेवर क्रान्तिकारी कहा है। पर वस्तुतः वे पेशेवर कम्युनिस्ट थे। क्योंकि क्रान्तिकारी होते तो वे क्रान्तिका अपना कार्य आगे भी जारी रखते। वे पेशेवर कम्युनिस्ट थे और कम्युनिज्म और मार्क्सवादको वेद मानकर उसकी विश्वभरमें स्थापनाका प्रयास करते रहे। सोवियट रूसकी क्रान्तिमें मार्क्स-वाद पूर्ण रूपसे नहीं, पर आंशिक रूपसे सटीक निकला। मार्क्सवादमें श्रमिकोंके नामपर क्रान्तिकी बात कही गयी है। पर वस्तुतः सोवियट क्रान्ति मजदूरों, कृषकों और सैनिकोंके सम्मिलित असन्तोषके कारण ही सम्भव हुई थी। बादमें भारी उद्योगोंकी तेजीसे वृद्धि कर श्रमिकोंकी संख्या तेजीसे बढ़ायी गयी, जिससे यह दिखाया जा सका कि रूसी क्रान्तिका मूलाधार श्रमिक वर्ग ही था।

चीनकी क्रान्ति तो श्रमिकोंके कारण हुई ही नहीं। वह तो कृषकोंकी सहायतासे हुई। और मार्क्सका वेद वहाँकी क्रान्तिके लिए गलत सिद्ध हुआ। फिर भी चूंकि लेनिन और स्टालिन पेशेवर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट थे, इसलिए जबतक स्टालिन जीवित थे, और प्रतिवर्ष क्रेमलिनके बाहर लेनिनकी मजारपर जीवित खड़े होकर, प्रचण्ड लालसेनाकी सलामी लेते रहे तबतक रूसमें तेजीसे परिवर्तन सम्भव नहीं था, यद्यपि धीरे-धीरे परिवर्तन बराबर होता रहा है। जिस दिन १९५३ में स्टालिनका शरीर प्राणहीन हुआ और क्रेमलिनकी मजारके ऊपर खड़े होनेके बजाय उनका मृत देह लेनिनकी मजारके अन्दर लेनिनके मृत देहके पास ही मसाला भरकर दर्शनके लिए रखा गया, उस दिनसे रूस तेजीसे बदलने लगा। श्री क्रुश्चेवने एक बार किसीसे कहा था कि स्टालिनके कालके अन्तिम-अन्तिम दिनोंमें रूसके शासन-यन्त्र और शासन-तन्त्रको लकवा मार गया था। यह स्थिति यदि कुछ दिन और जारी रहती तो रूसका सारा तानाशाही ढाँचा लड़खड़ाकर ताशके महलकी तरह गिरकर ढह जाता। पर स्टालिनका लेनिनके मजारके ऊपरसे उतर कर मजारके अन्दर जाना, इस सर्वाधिक उपयुक्त अवसरपर हुआ कि न केवल रूस का अस्तित्व ही नहीं बना रहा, पर वहांके वैज्ञानिक और यन्त्र शिल्पज्ञोंको पहलेसे अधिक स्वतन्त्रता और आत्मसम्मान मिलनेके कारण उन्होंने परमाणु बम बनाये, हाइड्रोजन बम बनाये और प्रगतिकी दौड़में अमेरिकासे आगे निकलकर उससे अच्छे रॉकेट और बालचन्द्र बनाकर ब्रह्माण्डमें भेजे। श्री क्रुश्चेव भी कट्टर कम्युनिस्ट हैं, यद्यपि वे स्टालिन की दोहाई नहीं देते, पर मार्क्स और लेनिनकी दोहाई वे अवश्य देते है। फिर भी वे न तो पेशेवर क्रान्तिकारी हैं और न पेशेवर कम्युनिस्ट ही हैं।

अगले कुछ वर्षोंमें तो रूसमें ऐसी पीढ़ी शासन-भार ग्रहण करेगी, जिसने कभी क्रान्तिको कभी देखा भी नहीं था और जो बाहरी दुनियाको अधिकाधिक देखेगी। चीन में क्रान्तिके कारण तथा एशिया, अफ्रिकाके अन्य गरीब देशोंके अधिकाधिक समाजवादी-करणसे रूसका कम्युनिस्ट जगतके नेतृत्वका महत्व धीरे-धीरे घटता जायगा।

चीनमें इस समय भी देशभक्त पूंजीवालोंका अस्तित्व वहांकी कम्युनिस्ट सरकार बनाये हुए है। जो पूंजीवाले स्वयं कारखानोंमें व्यवस्थापकका काम करते हैं, उन्हें मैनेजर की निश्चित तनख्वाह मिलती ही है, ऊपरसे उनकी लगी पूंजीपर ५ प्रतिशत मुनाफा भी सरकार उन्हें देती है। कोओपरेटिव संस्थाओंमें शामिल होनेके बाद उससे अलग होनेका वहां न केवल अधिकार ही है, पर वास्तविक रूपसे भी वहां संस्थाएं अलग होती हैं। चीनमें आगे भी यह जारी रहेगा या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता, पर रूसमें लिबरलिज्म यानी उदारीकरणका जो सिलसिला शुरू हुआ है वह बढ़ता ही जायगा, इसमें सन्देह नहीं। अमेरिका और ब्रिटेन तथा पश्चिमी यूरोपके अन्य देशोंमें समाजवादकी भावना अधिकाधिक घुसनेके कारण और वहांके लोकतन्त्रीय शासकों द्वारा उसे स्वीकार किये जाने के कारण उन देशोंमें कम्युनिस्ट क्रान्तिकी सम्भावना बिलकुल घट गयी है और मार्क्स-वादका यह वेदवाक्य कि दुनियामें कम्युनिज्मकी स्थापना होना अवश्यंभावी है, अवैदिक ही साबित हो रहा है। हाइड्रोजन बम फेंक सकनेवाले दूरगामी नियंत्रित रॉकेट क्षेप्यास्त्रोंके डरसे यदि प्रलयकारी तीसरा महायुद्ध न छिड़ा तो दुनिया धीरे-धीरे अमेरिकाके पूंजीमार्ग और रूसके कम्युनिज्म मार्गोंसे कोई मध्यमार्ग निकालकर उसीपर चल सकती है। पर निकट भविष्यमें यदि रूस या चीनके किसी महत्वाकांक्षी और अति उत्साही पेशेवर क्रान्तिकारी या पेशेवर कम्युनिस्टने तृतीय महायुद्धकी बारूदमें पलीता लगा दिया तो अमेरिकाने अपनी सर्वाधिक सम्पन्नता और छिपी ताकतका उपयोग कर दुनियासे कम्युनिज्मको समूल उखाड़ फेंकनेका वांछित अवसर मिल जायगा। यदि ऐसा हुआ तो वह विश्वमानवके लिए सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण क्षण होगा। क्योंकि इस समय अमेरिकाको साम्राज्यवादी, फासिस्ट होनेसे रोकनेका सबसे प्रबल साधन कम्युनिस्ट बड़े राष्ट्रोंका भीतिजनक अस्तित्व ही है।

एक और संभावित संकटसे भी दुनियाको बचना होगा। कहीं शांतिपूर्ण सह अस्तित्वके नामपर अमेरिका और रूसके शासक आपसमें समझौता कर दुनियाको अपने-अपने प्रभावक्षेत्रोंके दो भागोंमें बांट लेंगे और एक दूसरेके अत्याचारोंमें दखल न देनेका समझौता कर लेंगे तो फिर बाकी दुनियाके लिए वह नया 'काला युग' ही साबित होगा। सबसे श्रेयस्कर मध्यमार्ग ही है और इसकी स्थापनामें जापान, हिंदेशिया, भारत, जर्मनी, ब्रिटेन और कनाडा बहुत सहायक हो सकते हैं।

---:o:---